www.terapanthinfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 14 ■ 16-31 मई, 2011

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❐ सदस्यता शुल्क :

- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❐ विज्ञापन सहयोग :

- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 20,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 5,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 3,000 रु.

❐ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली–110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

- शुभाशंसा — *आचार्य महाश्रमण* — 3
- मंगलभावना — *साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा* — 4
- अन्तर्यात्रा मोहन से महाश्रमण की — *डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'* — 5
- सहजता की प्रतिमूर्ति — *डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी* — 7
- अध्यात्म योगी — *मुनि राकेशकुमार* — 9
- भारतीय गर्व और गौरव के प्रतीक — *सुषमा जैन* — 10
- अर्द्धशतक अक्षर प्रणाम — *मुनि मोहजीतकुमार* — 11
- अपेक्षा है एक अभिनव-मोड़ की — *प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार* — 12
- वंदन है अभिवंदन है..... — *पुष्पा सिंघी* — 13
- जागरूकता की मूर्त प्रेरणा — *जगदीश चंद्र शर्मा* — 14
- एक विरल सत्यान्वेषक — *प्रो. बच्छराज दूगड़* — 16
- नमन वंदन — *इकराम राजस्थानी* — 19
- अहिंसा है जीवन का आधार — *आचार्य महाश्रमण* — 20
- अमृत महोत्सव गीत — *साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा* — 23
- उच्चता के सोपान — *विजयराज सुराणा* — 24
- अकथ की कहानी आचार्य महाश्रमण — *मुनि विनयकुमार 'आलोक'* — 25
- सही मंजिल की ओर उठा एक कदम — *मुनि सुखलाल* — 27
- महाश्रमण का 'द्युति' व 'मुक्ति'-दर्शन — *सन्तोष बैद* — 28
- श्रमण मुदित से आचार्य महाश्रमण — *डॉ. हीरालाल छाजेड़* — 31

■ स्तंभ

- संपादकीय — 2
- कविता — 25
- अणुव्रत आंदोलन — 33-40

www.terapanthinfo.com

संपादकीय

विनम्रता की प्रतिमूर्ति

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण से पहला परिचय मुनि मुदित के रूप में इतिहास के अलभ्य अवसर ''आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव'' के द्वितीय चरण पर समायोजित जनाभिनंदन समारोह में 23 सितंबर 1985 को आमेट (राजसमंद) में हुआ। समारोह संयोजक के रूप में मैंने मुनि उदित एवं मुनि मुदित को आमंत्रित किया और युवा मुनियों ने आचार्य तुलसी के जीवन की प्रमुख घटनाओं को एक-एक कर परिसंवाद के रूप में अपने ओजस्वी स्वरों में प्रस्तुत किया। 23 वर्षीय मुनि मुदित ने पूरे आत्मविश्वास के साथ शुद्ध उच्चारण सहित आचार्य तुलसी की जीवन गाथा को प्रस्तुत करते हुए एक परिपक्व एवं ओजस्वी वक्ता का परिचय दिया। मुनि मुदित की इसी ऋजुता, विनम्रता, अध्ययनशीलता, कर्त्तव्य-परायणता, समर्पण और वक्तव्य शैली ने आचार्य तुलसी के मन को अन्तस् तक प्रभावित किया और गुरुदेव तुलसी ने संघ की भावी व्यवस्था को आकार देते हुए 23 वर्ष की छोटी वय में मुनि मुदित को युवाचार्य महाप्रज्ञ के अंतरंग सहयोगी के रूप में मनोनीत कर युवा कंधों एवं संघ के भविष्य को सुनिश्चितता प्रदान की।

मुनि मुदित प्रारंभ से ही अत्यंत विनम्र, सहज, सरल एवं मितभाषी स्वभावी रहे हैं। बड़ों के प्रति विनम्रता एवं आदर भाव आपकी जीवन शैली का अंग है। मैं भूले भी नहीं भूलता 14 सितंबर 1997 का वह दिन जब अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ ने महाश्रमण मुदित को युवाचार्य पद से संबोधित करते हुए युवाचार्य महाश्रण के रूप में प्रतिष्ठापित किया तो गंगाशहर में उस ऐतिहासिक क्षण की साक्षी रही हजारों-हजार आंखें खुशियों से नाच उठी। समारोह सम्पन्नता के उपरांत मैं अपने पिताश्री अणुव्रत महारथी काका देवेन्द्र कुमार कर्णावट के साथ युवाचार्य महाश्रमण की अभिवंदना करने तेरापंथ भवन गंगाशहर की पहली मंजिल पर पहुंचा तो देखा युवाचार्य महाश्रमण कमरे के बाहर बरामदे में नीचे ही अपने आसन पर शांत मुद्रा में बैठ चिरपरिचित मुस्कान के साथ जनता की अभिवंदना को स्वीकार कर रहे हैं। काका देवेन्द्र ने युवाचार्यश्री की अभिवंदना के लिए अपने हाथों को उनके चरणों की तरफ बढ़ाया तो युवाचार्यश्री ने काका के दोनों हाथों को अपने हाथों में थामते हुए अत्यंत विनम्रता के साथ कहा काका! आपसे बहुत पाया-सीखा है।

आचार्य महाश्रमण की इसी सरलता और आत्मीय-भाव को मैं विगत 19 मार्च 2011 से मेवाड़ अंचल में देख रहा हूं। अहिंसा यात्रा के मेवाड़व्यापी परिभ्रमण के दौरान यात्रा-पथ में आ रहे हर गांव-ढाणी को अपने पाँवों से नापना आचार्यवर का क्रम बन गया है। मार्ग में बच्चों-बुजुर्गों, महिलाओं-पुरुषों एवं साधुओं का आग्रह देख महाश्रमणजी के पाँव उन्हीं की ओर उठ जाते हैं। बनेड़िया के समीप कारोलिया के हनुमान मंदिर के साधुओं ने हरिओम-हरिओम कहकर पुकारा तो आचार्य महाश्रमण सहज रूप में उनके पास गये। डगवाड़ा में ग्रामवासियों ने आग्रह किया तो वहां रुक गये। रेलमगरा में तीन वर्षीय नन्हे बालक ने आकर कहा पापा गुटका खाते हैं तो महाश्रमणजी ने तुरंत उसके पापा को याद किया और पूछा बेटा सही कह रहा है? हां कहने पर उन्हें गुटका सेवन नहीं करने का संकल्प कराया। बावलास की धर्मसभा में आचार्यश्री के प्रवचन उपरांत एक नन्हा बालक मंच पर आकर खड़ा हो गया। महाश्रमणजी ने कहा क्या बोलोगे? नन्हे बालक ने बाल स्वर में कविता पढ़ दी। कुम्भलगढ़ दुर्ग अवलोकन के समय मैंने उनके पर्यटक रूप को देखा। महाश्रमणजी की सहजता, सरलता और चलते रहने का स्वभाव उनकी नेतृत्व क्षमता का उजला पक्ष है जो जन-जन को आकर्षित करता है। आचार्यश्री की इस सरलता, विनम्रता एवं आत्मीयता को देख मुझे याद आते हैं साहित्य मनीषी हरिभाऊ उपाध्याय के ये शब्द ''व्यक्ति विनम्रता, सच्चाई, ईमानदारी तथा लोक हितकारिता के राजपथ पर दृढ़तापूर्वक रहे तो उसे कोई भी बुराई क्षति नहीं पहुंचा सकती।''

सभी के प्रति आत्मीय दृष्टिकोण आध्यात्मिक जागृति के द्वारा ही संभव है। आचार्य महाश्रमण ने ध्यान-साधना से अध्यात्म के सार तत्त्व को पाया है जो प्रेम और शांति से युक्त है। आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के अलभ्य अवसर पर यही मंगल कामना है कि साधना में रत रहते हुए विनम्रता की प्रतिमूर्ति आचार्य महाश्रमण आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार कर, अध्यात्म की गंगोत्री को जन-जन में प्रवाहित करें और नए समाज की संरचना का दिवा-स्वप्न धरती पर उकेरने में समर्थ बनें।

● **डॉ. महेन्द्र कर्णावट**

www.terapanthinfo.com

जन्म लेना सृष्टि की सामान्य घटना है। इसमें कोई विशेषता वाली बात नहीं लगती। हर प्राणी जन्म लेता है।

करीब ४९ वर्ष पूर्व मैं जन्मा। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी और परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ का गरिमामय साया मुझे प्राप्त हुआ। अब मैं ५०वें वर्ष में प्रवेश करने जा रहा हूं। इस प्रसंग को लेकर अमृत महोत्सव वर्ष मनाया जा रहा है। इसमें मुख्य कार्यक्रम 'ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य' इस पंचाचार के विकास का है।

साधना में मेरी रुचि है। मैं चाहता हूं 'मेरे पूरे धर्मसंघ में साधना का विकास हो।'

साधना के दो आयाम हैं

१. कषाय (क्रोध, मान, माया और लोभ) का मंदीकरण

२. निर्धारित आचार के प्रति जागरूकता।

मैं चाहता हूं मेरा धर्मसंघ अध्यात्म के विकास की दिशा में आगे बढ़े।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा, श्रद्धेय मंत्री मुनि सुमेरमल स्वामी, मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा आदि सभी साधु-साध्वियों का पराक्रम सुफल बने और धर्मसंघ द्वारा आयोजित अमृत महोत्सव वर्ष निष्पत्तिमूलक बने, शुभाशंसा।

आचार्य महाश्रमण

www.terapanthinfo.com

भारतीय संस्कृति उत्सव-प्रधान संस्कृति है। उत्सव जीवन में नया रंग घोलते हैं, वातावरण को खुशहाल बनाते हैं, सांस्कृतिक मूल्यों की थाती को समृद्ध बनाते हैं और अनेक पीढ़ियों के सदस्यों को एकात्मकता के साथ जीवन को रसमय बनाने का अवसर प्रदान करते हैं।

पचीस वर्ष पहले तेरापंथ धर्मसंघ में एक ऐतिहासिक मौका उपस्थित हुआ था। धर्मसंघ ने उसको अमृत महोत्सव के रूप में आयोजित किया। उस आयोजन से संघीय एवं सामाजिक दोनों क्षितिजों पर नई स्फुरणा परिलक्षित हुई, जिसकी स्मृति आज भी रोमांचित कर देती है।

ठीक पचीस वर्ष के बाद संघ की दहलीज पर अमृत महोत्सव की आहट सुनाई दे रही है। एक ही मंच और एक ही उत्सव। पर नायक भिन्न-भिन्न है। पहले जो महोत्सव आयोजित हुआ था, उसके नायक थे आचार्य तुलसी। उनकी धर्मशासना की अर्धसदी की सम्पन्नता का पुण्य प्रसंग था। जनता को उनके बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से परिचित होने का अवसर मिला। यह तेरापंथ के इतिहास का एक गौरवमय पृष्ठ है।

इतिहास स्वयं को दोहराता है, पर उसका चेहरा रूपान्तरित हो जाता है। वर्तमान अमृत महोत्सव आचार्यश्री महाश्रमण के जीवन की अर्धशताब्दी के परिप्रेक्ष्य में समायोजित किया जा रहा है। आचार्य तुलसी और आचार्यश्री महप्रज्ञ की कसौटियों पर निखरे आचार्यश्री महाश्रमण की आस्था का मुख्य केन्द्र अध्यात्म है। वे अपने धर्मसंघ को अध्यात्म की ऊंचाइयों तक पहुंचाना चाहते हैं। इसी लक्ष्य को सामने रखकर अमृत महोत्सव वर्ष का प्रमुख कार्यक्रम पंचाचार (ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य) की आराधना निर्धारित किया गया है। इस आराधना के द्वारा हम संघ की नींव को गहराई देने तथा आचार्यश्री के व्यक्तित्व और कर्तृत्व दोनों को ऊंचाई देने का विनम्र प्रयास करें। चतुर्विध धर्मसंघ के लिए यह अपूर्व अवसर है। क्योंकि तेरापंथ के ढाई सौ वर्षों के इतिहास में किसी भी आचार्य के जन्म की आधी शताब्दी के उपलक्ष्य में अब तक कोई आयोजन नहीं हुआ। यह अपूर्व प्रसंग अभूतपूर्व रूप में आयोजित हो। इसकी गूंज पूरे वर्ष तक प्रतिध्वनित होती रहे और इस उपलक्ष्य में समायोजित रचनात्मक उपक्रमों का लाभ वर्तमान तथा भावी पीढ़ियों को भी मिलता रहे। इस दृष्टि से चिन्तन, निर्णय एवं क्रियान्विति में समग्र पुरुषार्थ की अपेक्षा है।

जिस संस्था और व्यक्तियों को यह दायित्व प्राप्त हुआ है, वे अपने कर्तृत्व का परिचय दें तथा सभी केन्द्रीय संस्थाओं की सहभागिता से पूरे समाज में जागरण की नई लहर पैदा करें। अमृत महोत्सव वर्ष की प्रभावी प्रस्तुति और कार्यकारी निष्पत्ति के लिए मंगलभावना।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

www.terapanthinfo.com

अन्तर्यात्रा मोहन से महाश्रमण की

डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम'

तेरापंथ के 11वें आचार्य, वरेण्य मुनि महाश्रमण के बारे में मैं जब भी सोचता हूं या कुछ लिखने बैठता हूं तो मुझे अनायास राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की कृति 'पंचवटी' की ये पंक्तियां स्मरण हो आती हैं

एक अपूर्व चरित्र लेकर जो उसको पूर्ण बनाते हैं,
ऐसे ही वे आत्मनिष्ठ जन परम प्रतिष्ठा पाते हैं।

वस्तुतः **आचार्य महाश्रमण जन्मना एक अपूर्व चरित्र लेकर इस धरा पर अवतीर्ण हुए और कालान्तर में उन्होंने उस विलक्षण चरित्र को मनसा-वाचा-कर्मणा जीते हुए जो पूर्णत्व प्राप्त किया है वह हमारे समक्ष है। उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व में जो भास्वरता है वह प्रायः विरल ही होती है। अपनी अल्पवय में मुनित्व की दीक्षा प्राप्त करने वाले आचार्य महाश्रमण की मोहन, मुनि मुदित, युवाचार्य के सोपानों की अन्तर्यात्रा एक ऐसा अद्भुत प्रसंग है जिसकी मिसाल अध्यात्म के क्षेत्र में बहुत कम मिलती है।** कहना न होगा कि महानता के बीज पूर्वजन्म के संस्कारों का परिणाम तो होते ही हैं, वर्तमान जीवन में स्वयं के पुरुषार्थ, साधना, तपस्या के मंगलमय जल से अभिसिंचित होकर, गुरु के आशीर्वाद की प्राणवायु पाकर वे बीज प्रस्फुटित, पुष्पित एवं पल्लवित होते हैं। आध्यात्मिक संभावनाओं को अपने में समाये ऐसे प्रतिभा-पोषित जन ही गुरुओं की दृष्टि में स्वतः ही आ जाते हैं। कालिदास कहते हैं 'न रत्न मन्विष्यति मृग्यते हि तत्' रत्न स्वयं खोजने नहीं जाता, उसे तो दूसरे लोग खोजते हैं। ऐसे रत्न वय का हिसाब नहीं लगाते। छोटी वय में ही उनको गुरु पहचान लेते हैं। कालिदास फिर याद आ जाते हैं। 'तेजसाम् हि न वयः समीक्ष्यते' तथा 'न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते'। तेजस्वी एवं धर्म प्रवीण व्यक्तियों की आयु नहीं देखी जाती। बहरहाल।

आचार्य महाश्रमण का संपूर्ण जीवन-वृत्त इन सब बातों का पुष्कल प्रमाण है। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ की यह अद्भुत 'खोज' न केवल तेरापंथ के लिए एक वरदान है अपितु संपूर्ण मानव जाति के लिए यह एक बहुत बड़ी देन है। मेरा सौभाग्य रहा कि मुझे आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शनों का लाभ एवं उनके प्रवचनों को सुनने का अवसर समय-समय पर मिलता रहा। इससे मैं बहुत समृद्ध हुआ, ऐसा मैं अनुभव करता हूं। आचार्य महाश्रमण के दर्शन करने एवं उनके विलक्षण चारित्रिक गुणों की आभा से प्रभावित होने को मैं अपने जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि मानता हूं। यहां मैं उन तीन संकल्पों का संदर्भ देना चाहूंगा जो आचार्य महाश्रमण ने धर्मसंघ की ओर से किये गये पदाभिषेक के समय ग्रहण किये थे। उन्होंने कहा "मैं कल्पना करता हूं कि इन संकल्पों को आचार्य महाप्रज्ञ करवा रहे हैं।"

संकल्प ये थे

- मैं तेरापंथ की परम्परा, मर्यादा, आचार-विचार और समाचारी की एकता को अक्षुण्ण रखूंगा।
- मैं अपने दायित्व का पूर्ण निष्ठा के साथ निर्वाह करूंगा।
- मैं तेरापंथ के व्यापक दृष्टिकोण एवं कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करूंगा।"

जब मैं आचार्य महाश्रमण के चिंतन, मनन तथा विभिन्न लोकमंगलोन्मुखी कार्यकलापों के बारे में सोचता हूं, तो देखता हूं कि वे इन संकल्पों को पूर्ण निष्ठा से जी रहे हैं। न केवल वे तेरापंथ के आचार्य के रूप में इन संकल्पों का पालन कर रहे हैं अपितु उनके सोच और व्यवहार के क्षितिज पर्याप्त विस्तृत हैं। उनके हृदय में समस्त मानवता के कल्याण की बात निरन्तर बसी रहती है। वे सभी प्रकार की संकीर्णताओं से मुक्त हैं। अणुव्रत अनुशास्ता के रूप में सर्वधर्म समवाय की भावना को वे पुष्ट तो कर ही रहे हैं मनुष्य को सकारात्मक बदलाव की ओर भी प्रेरित कर रहे हैं।

जब मैं आचार्य महाश्रमण की अन्तर्यात्रा की बात कर रहा हूं तो मुझे ऐसा लगता है कि उनकी आध्यात्मिक प्रभविष्णुता उनके पूर्वकृत सुकर्मों के साथ उनके द्वारा की गयी गहन तपस्या एवं साधना का प्रतिफलन है। अपनी इन पंक्तियों को दोहराना चाहूंगा

मोहन से बन तुम महाश्रमण,
कर लिया वरण तापस जीवन
तुमने थामा अणुव्रत-केतन
दोहराया 'संयम ही जीवन',
तुमने साधा अपना तन-मन
सब कुछ अपना कर दिया हवन
तुमने जगती के क्षेम हेतु
वसुधा की ओढ़ी सभी तपन,
तुमने अणुव्रत को जिया
स्वयं निःशेष किया
निज को क्षण-क्षण।
शत बार तुम्हारा अभिनंदन
स्वीकार करो हे, महाश्रमण!

दरअसल, मोहन से महाश्रमण की अन्तर्यात्रा हर एक के बूते की बात नहीं होती। जब तक व्यक्ति अपने को तप्त-स्वर्ण नहीं बना लेता, जब तक अपने को निःशेष नहीं कर देता, जब तक उसमें समष्टि के प्रति व्यष्टि के विसर्जन का भाव नहीं जगता तब तक कोई भी ऐसी अन्तर्यात्रा नहीं कर सकता। आचार्य महाश्रमण की यह अन्तर्यात्रा एक दिन का परिणाम नहीं है। अपने बाल-जीवन

www.terapanthinfo.com

से शुरू की गयी यह यात्रा तपस्या के दुर्गम मार्गों से होती हुई यहां तक उन्हें लेकर आई है। अथक ज्ञान-साधना, निष्कंप धर्मनिष्ठा, अकुंठ गुरु सेवा की पवित्र अग्नि में तपकर वे खरे कुंदन बने हैं। उनके वचन और कर्म में लेशमात्र भी पार्थक्य नहीं है। यही कारण है कि हर व्यक्ति उनके समक्ष नत शीश होकर उनके पावन मंगलाशीष की कामना करता है।

आचार्य महाश्रमण में ऐसा क्या है जो सबको भा जाता है। मैं सोचता हूं कि यह इसलिए है कि उन्होंने अपने भौतिक शरीर, जिसमें मन भी शामिल है, को एक ऐसी उदात्त दिशा में मोड़ा है जिसकी हमें स्वयं तलाश है। पर क्योंकि हम में न तो उनके जैसी विलक्षणता है और न उन जैसी असाधारण तपश्चर्या, इसलिए हम उस दिशा की ओर नहीं बढ़ पा रहे हैं। **आचार्यश्री के निर्माण में उनके गुरुओं की जो कृपा उन पर रही, वैसी कृपा हमें कहां मिलती है। हम भौतिकता के पाश में बंधे छटपटा रहे हैं किन्तु हमें मुक्ति कहाँ? विरोधाभासों के कुहासे में हम जीने को विवश हैं। वचन और कर्म का पार्थक्य हमारा स्वभाव है। फिर कैसे हो आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ और आचार्य महाश्रमण जैसे सिद्ध पुरुषों के जैसी अन्तर्यात्रा?**

मैं शायद अत्युक्ति नहीं कर रहा हूं जब मैं कहूं कि आचार्य महाश्रमण में गीता में वर्णित 'स्थिरधी' या 'स्थित प्रज्ञ' के प्रायः सभी लक्षण विद्यमान हैं। या गोस्वामी तुलसीदास के रामचरित्मानस में प्रस्तुत 'संत' की सभी बातें उनके वचन और कर्म में पूर्णतया दृष्टव्य हैं। मैं समझता हूं कि विषयान्तर नहीं होगा कि मैं अपनी बात को पुष्ट करने के निमित्त कतिपय उद्धरण यहाँ दूँ

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते।।
(गीता 2/56)

दुखों की प्राप्ति पर जिसके मन में उद्वेग नहीं होता, सुखों की प्राप्ति में जो सदा निःस्पृह है तथा जिसके राग, भय, क्रोध नष्ट हो गये हैं (ऐसा) मुनि स्थिरबुद्धि कहा जाता है।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गनीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।। (गीता 2/58)

जैसे कछुआ सब ओर से अपने अंगों को समेट लेता है, उसी प्रकार जो व्यक्ति अपने को इन्द्रियों के विषयों से हटा लेता है उसकी बुद्धि स्थिर समझनी चाहिए। **जब हम आचार्य महाश्रमण के दैनन्दिन जीवन को देखते हैं तो लगता है कि 'स्थिरधी' उनका स्वभाव बन चुका है। गीता में वर्णित स्थितप्रज्ञ के लक्षण ही 'मुनित्व' को पूर्णता प्रदान करते हैं। यह मुनित्व की पूर्णता निस्संदेह उनके पूर्ववर्ती आचार्यों के स्वयं के पूर्ण मुनित्व का ही प्रतिबिम्ब है। इसी प्रकार आचार्य महाश्रमण का 'संत' स्वभाव तुलसी के 'मानस' में उल्लिखित संतों के लक्षणों की ही प्रतिच्छाया है।** तुलसी कहते हैं

साधु चरित सुभ चरित कपासू।
निरस बिसद गुनमय फल जासू।।
जो सहि दुख परछिद्र दुरावा।
बंदनीय जेहिं जग जस पावा।।
(मानस, बालकाण्ड-3)

संतों का चरित्र कपास के चरित्र (जीवन) के समान शुभ है, जिसका फल, नीरस, विशद और गुणमय होता है। कपास की डोंडी नीरस होती है, संत-चरित्र में भी विषयासक्ति नहीं है, इससे वह भी नीरस है, कपास उज्जवल होता है, संत का हृदय भी अज्ञान रूपी अंधकार से रहित होता है, इसलिए वह विशद है और कपास में गुण (तन्तु) होते हैं, इसी प्रकार संत का चरित्र भी सद्गुणों का भण्डार होता है, इसलिए वह गुणमय है। (जैसे कपास का धागा सुई के किये हुए छेद को अपना तन देकर ढक देता है, अथवा कपास जैसे लोढ़े जाने, काते जाने और बुने जाने का कष्ट सहकर भी वस्त्र के रूप में परिणत होकर दूसरों के दोषों को ढकता है उसी प्रकार संत स्वयं दुःख सहकर दूसरों के छिद्रों (दोषों) को ढकता है, जिसके कारण वह संत, जगत में वन्दनीय होता है।

आचार्य महाश्रमण की इस अन्तर्यात्रा में उनके बहुआयामी व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं के दर्शन होते हैं। वे न केवल जैनागमों के अध्येता एवं व्याख्याकार ही हैं, वे न केवल एक प्रवीण भाषाविद् हैं, वे न केवल एक सरस एवं संवेदनशील सृजनशील रचनाकार ही हैं, वे न केवल प्रबंध-पटु हैं बल्कि उनमें नेतृत्व की असीम क्षमता है। उनकी वाणी में ओजस्विता, उनके व्यवहार में तेजस्विता, उनके स्वभाव में कुसुमों जैसी मृदुता और वज्र जैसी कठोरता भी है। वे एक सत्यनिष्ठ आचार्य हैं जो सत्यान्वेषण में अप्रतिहत लगे हुए हैं। पर इन सबसे पहले वे एक आदर्श 'मनुष्य' हैं। मानवता उनका धर्म है, इन्सानियत उनका स्वभाव है। उनकी यह अन्तर्यात्रा हमें स्वयं ऐसी ही अन्तर्यात्रा करने के लिए प्रेरित करे यह हमारी सबकी उत्कट कामना है। आचार्यश्री जैसे उदात्तमना व्यक्ति ही मानवता के सिरमौर होते हैं। मानवीय मूल्य इनके आशीष तले फलते-फूलते हैं। आज के भौतिक संकुल, उपभोक्तावादी समाज के वर्तमान अंधकार में ऐसे श्रेष्ठजन ही हमारे हेतु दीप्तिस्तंभ होते हैं। हमें इनका अनुसरण करते हुए लोकमंगल, चरित्र निर्माण, संयम के गंतव्य की ओर बढ़ना चाहिए। गीता भी यही कहती है

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।
(गीता 3/21)

श्रेष्ठ पुरुष जो जो आचरण करता है, अन्य पुरुष (भी) वैसा ही आचरण करते हैं। वह जो कुछ प्रमाण कर देता है, समस्त मनुष्य समुदाय, उसी के अनुसार बरतने लग जाता है।

अंत में, हम आचार्यश्री के दीर्घायुष्य, पूर्ण स्वास्थ्य, सार्थक जीवन की कामना करते हुए उनके मंगलाशीष के सतत अभिलाषी हैं।

7-च-2, जवाहरनगर
जयपुर - 302001 (राजस्थान)

www.terapanthinfo.com

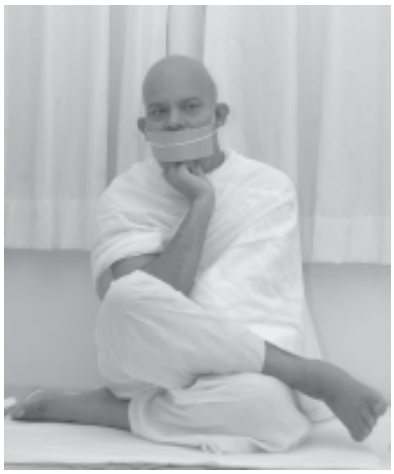

सहजता की प्रतिमूर्ति

डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

आज का व्यक्ति जैसा है उससे कहीं ज्यादा अपने-आपको प्रदर्शित करता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी सीमा का अतिक्रमण करना चाहता है। वह अपने आपको अपनी योग्यता से अधिक अभिव्यक्त करने का प्रयास करता है। व्यक्ति का यह प्रदर्शन कभी-कभी उसके लिए घातक हो जाता है। एक घटना याद आ रही है। एक स्कूल के प्रधानाध्यापक ने अपने गांव में अपने आपको तहसीलदार बता रखा था। एक दिन उनके गांव का एक व्यक्ति उनसे मिलने आया तो वह उन्हें तहसीलदार के पद से ढूंढ रहा था। लाडनूं जैसे कस्बे में एक ही तहसीलदार अतः उनके पास पहुंचने में उसे कोई विलम्ब नहीं हुआ। दोनों एक-दूसरे से अपरिचित थे अतः गांव का वह व्यक्ति बहुत शर्मिन्दा हुआ किन्तु नाम से ढूंढने पर अन्ततः वह उस स्कूल में पहुंच ही गया जहां उनके मित्र एक डंडा लिए बच्चों को बालसभा के लिए इकट्ठा कर रहे थे। अचानक गांव के अपने मित्र को देखकर प्रधानाध्यापक पानी-पानी हो गये। व्यक्ति का प्रदर्शन, उसकी कृत्रिमता कभी-कभी उसे ऐसे खतरनाक मोड़ पर पहुंचा देती है जहां से बचकर निकलना उसके लिए संभव नहीं हो पाता।

आचार्य महाश्रमण को तेरापंथ के मुनि मुदित से लेकर ग्यारहवें अधिशास्ता बनने तक की सहजता का मैं साक्षी रहा हूं। 1989 के आसपास की घटना है। मैं मुनि मुदितकुमार के दर्शन भिक्षु विहार में करने के लिए प्रस्तुत हुआ। वे सिर नीचे किए हुए आत्मचिंतन में लीन बैठे थे। मैं मत्थे नमन्दामि कहकर पास में बैठ गया। चरण-स्पर्श भी किया किन्तु 15 मिनट तक कोई उत्तर नहीं मिला। इस दौरान आत्मलीन मुनिश्री के दर्शन करने के लिए कई लोग आये और दर्शन करके चले गये। मैं उत्तर पाने की चाहत में वहीं बैठा रहा। थोड़ी देर बाद 'क्या नाम है' का स्वर गूंजा। दो मिनट की बातचीत किन्तु मुनिश्री के पलक नीचे के नीचे ही रहीं। परन्तु वाणी की मिठास ने मुझे इतना प्रभावित किया कि मैं उनके प्रथम दर्शन में ही उनका कायल हो गया। उस लाडनूं विहार के दौरान कई बार उनके दर्शन करने गया प्रायः उन्हें सिर नीचा किये हुए देखा। सदैव मेरे मन में यह प्रश्न उठा कि मुनिश्री क्या संसार से इतने विरक्त हो गये हैं कि वे संसार और इसके सौन्दर्य को देखना ही नहीं चाहते। एक-दो-बार गुरुदेव तुलसी से भी यह प्रश्न पूछा तो यही उत्तर मिला कि मेरा मुदित बहुत ही सहज और अन्तर्मुखी है। अपने शिष्य के संदर्भ में किसी भी गुरु के ये विचार शिष्य की महानता को स्वतः व्यक्त करते हैं।

इसी प्रकार की एक घटना स्मृति के वातायन में प्रतिबिम्बित हो रही है। आचार्य महाप्रज्ञ की अहिंसा यात्रा के दौरान अणुव्रत समिति लाडनूं के हम कार्यकर्तागण राजलदेसर से खाटू तक साथ-साथ थे। रास्ते के गांवों में रोड पर ही भीड़ को इकट्ठा कर उन्हें अहिंसा का संकल्प दिलाया जाता था। राजलदेसर से रतनगढ़ के बीच का गांव (नाम स्मरण में नहीं है) जहां रोड पर गांव की भीड़ एकत्र की गयी थी। अणुव्रत रथ के माध्यम से हम लोग अहिंसा के स्वर बुलन्द कर रहे थे। भीड़ को साध्वीप्रमुखा एवं अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल सम्बोधित कर आगे बढ़े थे कि तभी आचार्यश्री का काफिला पहुंचा। आचार्य महाप्रज्ञ ने भी लोगों को सम्बोधित किया और अन्त में युवाचार्य महाश्रमण को अहिंसा का संकल्प दिलाने का आदेश किया। युवाचार्यश्री ने उपस्थित भीड़ को

14 सितम्बर 1997 को गंगाशहर में हजारों की उपस्थिति में आचार्य महाश्रमण ने आपको युवाचार्य पद पर अभिषिक्त किया। आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के बाद 23 मई 2010 को तेरापंथ के ग्यारहवें अधिशास्ता के रूप में आपका विधिवत पदाभिषेक सरदारशहर के गांधी विद्या मंदिर के विशाल प्रांगण में हुआ। आपके जीवन में 12 वर्ष का एक संयोग भी जुड़ा है। आपने 12 वर्ष की अवस्था में दीक्षा ली और 12 वर्ष बाद 24 वर्ष की अवस्था में महाश्रमण बने तथा पुनः 12 वर्ष बाद 36 वर्ष की अवस्था में युवाचार्य पद पर मनोनीत हुए और पुनः 12 वर्ष बाद 48 वर्ष की अवस्था में आचार्य महाश्रमण के रूप में पदाभिषिक्त हुए।

www.terapanthinfo.com

अहिंसा का संकल्प दिलाया। तभी सड़क के किनारे स्थित घर की एक वृद्धा ने गोचरी के लिए निवेदन किया। आचार्यश्री की आज्ञा से युवाचार्यश्री ने वृद्धा के घर में प्रवेश किया और एक गिलास दूध लिया। दूसरा गिलास दूध और पीने के लिए वृद्धा जिद करने लगी। अन्त में युवाचार्यश्री ने कहा, माताजी क्या आप हमें दुबारा अपने घर नहीं बुलाना चाहती जो एक बार ही सब दे देना चाहती हैं। युवाचार्यश्री के सहजतापूर्वक शब्दों ने वृद्धा को इतना प्रभावित किया कि वह जिद छोड़ प्रसन्न हो उठी और बोली, ''महाराज बार-बार आना है।''

ऐसी अनेक घटनाएं स्मृतिपटल पर हैं जिससे आचार्यश्री की सहजता का बोध होता है। किन्तु सहजता में सत्यता कभी भी आवृत्त नहीं होती है। आचार्यश्री के व्यक्तित्व का वैशिष्ट्य है सत्यता को सहजतापूर्वक व्यक्त करना। उनकी सहजता के साथ दृढ़ता भी होती है। कोरी सहजता कभी-कभी अप्रासंगिक हो सकती है किन्तु दृढ़ता के साथ सहजता सदैव प्रासंगिक एवं उपयोगी होती है। आचार्यश्री वसूलों एवं नियमों के प्रति सदैव प्रतिबद्ध रहते हैं। उनका मानना है कि किसी भी संघ एवं संस्था को संचालित करने के लिए यदि कोई नियम बनाये गये हैं तो उनकी अनुपालना दृढ़ता के साथ होनी चाहिए। उनमें किसी भी प्रकार की शिथिलता को स्वीकृति नहीं मिलनी चाहिए। खास-तौर पर साधु-साध्वियों के। उनका मानना है कि संघीय नियम उनके लिए सर्वोपरि होने चाहिए। चूंकि संघीय नियम साधु-साध्वियों के आचार की सबलता के लिए बनाये गये हैं, अतः किसी भी प्रकार का शिथिलाचार मान्य नहीं होना चाहिए। वे बात-बात में आचार्य भिक्षु का नामोल्लेख भी करते हैं कि किसी प्रकार भी रवण मुनि ने शिथिलाचार के विरुद्ध आवाज बुलन्द कर एक नये युग का सूत्रपात किया था। दुर्व्यवस्था या दुराचरण के प्रति कोई भी क्रान्ति तभी सफल हो सकती है जब उसके साथ दृढ़ता हो, प्रतिबद्धता हो। आचार्यश्री महाश्रमण के प्रत्येक निर्णय में ऐसी दृढ़ता एवं प्रतिबद्धता देखी जाती है।

ऐसी ऋजुता, सरलता, सहजता एवं दृढ़ता की प्रतिमूर्ति आचार्य महाश्रमण का पदार्पण राजस्थान के सरदारशहर की धरती पर 13 मई, 1962 को हुआ था। बचपन के मोहन नाम का यह मेधावी विद्यार्थी अपनी आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत 12 वर्ष की उम्र में की अर्थात् बालक मोहन मुनि सुमेरमल लाडनूं से 12 वर्ष की अवस्था में दीक्षित होकर मुनि मुदित बन गये। संभवतः तेरापंथ के इतिहास में यह विरल घटना है कि एक आचार्य की दीक्षा आचार्य से न होकर एक मुनि से हुई थी। उस समय दिल्ली में प्रवासित आचार्य तुलसी ने सरदारशहर में विराज रहे मुनि सुमेरमल स्वामी को निदेशित कर बालक मोहन को दीक्षा दिलवायी थी। तब कौन जानता था कि नवदीक्षित मुनि मुदित एक दिन तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता बनेंगे। 5 मई, 1974 को बालक मोहन मुनि मुदित बन गया। उदयपुर मर्यादा महोत्सव में महाप्रज्ञ ने 16 फरवरी, 1986 को इन्हें अपना निकटतम सहयोगी घोषित किया। 14 मई, 1986 को आचार्य तुलसी ने ब्यावर में उन्हें मुनि समूह का मुखिया नियुक्त कर दिया और यहीं से मुनि मुदितकुमार की नेतृत्व क्षमता और आध्यात्मिक समता की यात्रा प्रारंभ हुई।

आचार्य तुलसी एक क्रान्तिकारी आचार्य थे। वे नवोन्मेषशालिनी प्रतिभा के धनी थे। नित नूतन क्रांति करना मानों उनके जीवन का लक्ष्य था। लाडनूं की पुण्यधरा पर 8 सितम्बर 1989 को उन्होंने फिर एक नये इतिहास का सृजन किया, एक नयी क्रान्ति की जब पहली बार तेरापंथ धर्मसंघ में मुनि मुदित को 'महाश्रमण' के गरिमामय पद पर नियुक्त किया। वरीयता क्रम में यह पद आचार्य और युवाचार्य के बाद तीसरा बड़ा पद था। यह पद अपने आप में गौरवशाली भी था और कुछ नया करने का अवसर देने की दिशा में एक नया कदम भी था। 'महाश्रमण' पद पर प्रतिष्ठापित मुनि मुदित ने आचार्य तुलसी के आदेश से कुछ स्वतंत्र यात्राएं कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। 14 सितम्बर 1997 को गंगाशहर में हजारों की उपस्थिति में आचार्य महाश्रमण ने आपको युवाचार्य पद पर अभिषिक्त किया। आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के बाद 23 मई 2010 को तेरापंथ के ग्यारहवें अधिशास्ता के रूप में आपका विधिवत पदाभिषेक सरदारशहर के गांधी विद्या मंदिर के विशाल प्रांगण में हुआ। आपके जीवन में 12 वर्ष का एक संयोग भी जुड़ा है। आपने 12 वर्ष की अवस्था में दीक्षा ली और 12 वर्ष बाद 24 वर्ष की अवस्था में महाश्रमण बने तथा पुनः 12 वर्ष बाद 36 वर्ष की अवस्था में युवाचार्य पद पर मनोनीत हुए और पुनः 12 वर्ष बाद 48 वर्ष की अवस्था में आचार्य महाश्रमण के रूप में पदाभिषिक्त हुए।

आचार्य तुलसी के 'अहिंसा सार्वभौमता' एवं आचार्य महाप्रज्ञ की अधूरी अहिंसा यात्रा को पूरा करने का व्रत लेकर आचार्य महाश्रमण राजलदेसर से अहिंसा यात्रा का नेतृत्व कर रहे हैं। इस यात्रा में आप गरीबों, उपेक्षितों एवं पीड़ितों के लिए न केवल सहज उपलब्ध हुए हैं अपितु उनके घावों पर मरहम लगाने तथा सम्मान के साथ जीवन जीने के लिए उन्हें प्रेरित भी कर रहे हैं। आचार्य महाश्रमण अहिंसा यात्रा आपके नेतृत्व में नये भारत के निर्माण की दिशा में प्रस्थित होगी, ऐसा विश्वास है।

निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय
जिला-नागौर, (लाडनूं-राजस्थान)

www.terapanthinfo.com

अध्यात्म योगी

मुनि राकेशकुमार

सत्ता व अधिकार से अलंकृत होकर अधिकतर लोग अहं के भार से भारी हो जाते हैं। जो असाधारण व्यक्तित्व के धनी होते हैं वे स्थितप्रज्ञ होते हैं। हर स्थिति में समता और सहजता से जीना उनका नैसर्गिक स्वभाव होता है। आचार्य महाश्रमण एक ऐसे ही व्यक्तित्व का नाम है जो तेरापंथ धर्मसंघ के सर्वोच्च शिखर पर आरूढ़ होकर भी बिलकुल निर्भार हैं। उनकी समता, सहजता और नम्रता हर व्यक्ति के लिए प्रेरणादायक तथा अनुकरणीय है।

● अध्यात्मनिष्ठ

भगवान महावीर ने कहा है हमारा सारा व्यवहार अध्यात्म की भूमिका पर आधारित होना चाहिए। जहां इस सत्य की उपेक्षा और विस्मृति होती है वहां नाना प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होती हैं। आज के सामाजिक और राजनैतिक जीवन में नेतृत्व के साथ जो अशोभनीय और निंदनीय प्रसंग श्रुतिगोचर होते हैं, यह उसी का परिणाम है। धार्मिक नेतृत्व के लिए अध्यात्म की भूमिका का सबल आधार होना आवश्यक है। आचार्य महाश्रमण ने इस सत्य को गहराई से आत्मसात किया है। उनका हर व्यवहार स्व पर कल्याण की भावना से ओत-प्रोत होता है। इसी का परिणाम है कि गुरुत्तर दायित्व का भार उठाते हुए भी वे सर्वथा निर्भार हैं। अति व्यस्त होते हुए भी वे अस्त-व्यस्त नहीं हैं। उन्होंने अपनी अध्यात्मनिष्ठा और कर्तव्य-निष्ठा से गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ का दिल ही नहीं जीता अपितु वे उनकी कसौटी पर खरे भी उतरे हैं। इसके साथ ही उन्होंने अल्प समय में ही अपने करुणापरायण, उदार व विशाल दृष्टिकोण से सारे धर्मसंघ की असीम श्रद्धा अर्जित की है।

● आदर्श पुरुष

नेतृत्व की सफलता के लिए बुद्धिमत्ता और कार्यकुशलता जरूरी है, यह सर्वविदित है। पर इसके साथ चरित्रनिष्ठा भी बहुत जरूरी है। उसके बिना बौद्धिक बल व अन्य कौशल का सही उपयोग नहीं हो सकता। धार्मिक नेतृत्व के लिए उत्कृष्ट चरित्र-बल पहली अनिवार्यता है, अन्यथा अन्य योग्यताएं अधिक उपयोगी नहीं हो पाती। आगम साहित्य में आचार्य की जो अर्हताएं प्रतिपादित की गयी हैं उसमें श्रद्धाबल और चरित्रबल का प्रमुख स्थान है। तेरापंथ के आचार्य पद का निर्णय करने में इस सत्य पर विशेष ध्यान दिया जाता है। जहां चरित्रबल की उपेक्षा हुई है, तथा बौद्धिक क्षमता के आधार पर नेतृत्व का निर्णय हुआ है, वहां समाज के लिए अनर्थकारी परिणाम सामने आये हैं। प्राचीन साहित्य में इस संबंध में अनेक उदाहरण मिलते हैं।

आचार्य महाश्रमण धार्मिक नेतृत्व की सभी अर्हताओं से संपन्न हैं। नेतृत्व के लिए मस्तिष्क का हर समय शांत और संतुलित होना जरूरी है। हर संगठन में तरह-तरह की परिस्थितियां उत्पन्न होती रहती हैं। इसी प्रकार संगठन में विविध प्रकार के लोग होते हैं। यदि नेता का स्वभाव शान्त और शीतल होता है तो वह जटिल और उलझी हुई परिस्थितियों को भी सुलझाने में सफल हो जाता है। उग्र विचार के लोगों को भी वह शांत और सहज बना सकता है। आचार्य महाश्रमण ने बौद्धिक विकास के साथ भावनात्मक संतुलन और अनुशासन को साधा है। इससे वे हर स्थिति को संभालने में सक्षम हैं।

गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के कुशल नेतृत्व में आचार्य महाश्रमण का निर्माण हुआ है। वर्तमान में आप आचार्य महाप्रज्ञ के कुशल उत्तराधिकारी हैं। आप आचार्य महाप्रज्ञ के स्वप्नों को साकार करने में अहर्निश गतिशील हैं। आज वे हमारे आदर्श पुरुष हैं, उनके जीवन-दर्पण में स्वयं का प्रतिबिंब देखकर हम अपनी जीवन शैली को संवार और निखार सकते हैं।

www.terapanthinfo.com

आचार्य महाश्रमण का व्यक्तित्व जितना उदार, भव्य और गौरवशाली है उनका कृतित्व भी उतना ही प्रभावी, सारपूर्ण और जनहितकारी है। यही कारण है कि वे आज जनजीवन के अस्तित्व की रक्षा और अस्तित्व के संरक्षण के लिए आस्था की लौ के रूप में उभरे हैं। प्रखर चिंतन एवं बेबाक प्रवचन शैली के ऐसे संदेशवाहक हैं जिनमें आचरण अैर व्यवहार की एकरूपता है। सर्वधर्म समभाव के ऐसे सृजक हैं जो जीवन की यात्रा पांवों से नहीं वरन् विचारों से कर रहे हैं। स्थायी आकर्षण से बंधे ऐसे चुम्बकीय वीर हैं जिन्होंने लाखों-करोड़ों संतप्त हृदयों को झंझोड़ कर उनमें सुख-शान्ति और मधुरता की मिठास घोल दी है।

भारतीय गर्व और गौरव के प्रतीक

सुषमा जैन

यूँ तो धर्म-परायण भारत भूमि पर प्राचीन काल से ही विभिन्न जाति एवं सम्प्रदायों से सम्बन्धित संत विचरण करते आ रहे हैं सभी ने अपने-अपने अनुयायियों को आत्मानुशासना के बल पर आत्मशक्ति का संदेश और प्रेरणा भी दी है। परन्तु यौवन की तरुणाई, सागर की गहराई और पर्वत की ऊंचाई से अभिमंडित तथा अपने प्रभावोत्पादक व्यक्तित्व एवं वात्सल्यपूर्ण कृतित्व के लिए सुविख्यात एक राष्ट्र सन्त ऐसे भी हैं जिन्होंने वर्तमान युग की नब्ज पर पूरी तरह हाथ रखकर अल्पसमय में ही अपना नाम अवतारों की श्रेणी में दर्ज करा लिया है। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त इस दिव्य सन्त के दर्शन मात्र से ही यह आभास हो उठता है कि वर्तमान की भागदौड़, हिंसा के ताण्डव से त्रस्त, भौतिक सुखों की चरम सीमा में संतप्त इस आणविक युग में शान्ति की तलाश के लिए दर-दर भटकते मानव को जिस शान्ति दूत की तलाश थी उसका पदार्पण परम् पूज्य गुरुदेव 'आचार्य महाश्रमण' के रूप में हो चुका है।

खेलने-कूदने और खाने-पीने की उम्र में एक नन्हा कोमल मात्र 12 वर्षीय बालक समस्त सुख वैभव को ढोकर मारकर निकल पड़ता है अपनी काया से युग का कायाकल्प करने, मृतपाय हो चुकी मानवता को मान देने और सम्पूर्ण विश्व की अनेकता को एकता के सूत्र में बांधने। बालक के विराट व्यक्तित्व और दृढ़-संकल्प के समक्ष सभी नाते-रिश्तेदार, घर-परिवार नतमस्तक हो गये और मोहन, मुनि मुदित बनकर तल्लीन हो गया जिनवाणी मां की अराधना में। संयम और साधना के असहनीय कंटकपूर्ण मार्ग पर साहसपूर्ण गति से चलते हुए जहां एक और शास्त्रों के गहन अध्ययन द्वारा मुनि मुदित उद्भट विद्वान, व्याख्याता, साहित्यानुरागी और धर्म मर्मज्ञ के रूप में प्रतिष्ठित हुए वहीं दूसरी ओर जन-जन के कल्याण का श्रेष्ठ मार्ग खोज निकालने में भी पूरी तरह सफल रहे।

मुनि मुदित की असाधारण

www.terapanthinfo.com

समन्वयवादी प्रवृत्ति एवं सृजनशीलता को देख न केवल अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी हतप्रभ थे बल्कि आचार्य महाप्रज्ञ ने तो अपने जीवन काल में ही इनमें संघ प्रमुख बनने की क्षमताएं देख ली थी। यह इनकी संगठन क्षमता, नेतृत्व गुण और विद्वता का ही परिणाम था कि मात्र 34 वर्ष की अवस्था में ही उदयपुर में 16 फरवरी 1986 को आचार्यश्री के अन्तरंग सहयोगी बने तथा केवल तीन माह पश्चात् 14 मई 1986 को ब्यावर में साहाय्यपति की उपाधि से विभूषित हुए। 9 सितम्बर 1989 को लाडनूं (राजस्थान) की धरती उद्भासित हो उठी जब इन्हे महाश्रमण की उपाधि से विभूषित किया गया। वैराग्य के विभिन्न चरणों को अपने अद्भूत कौशल से पार करते हुए 14 सितम्बर 1997 को गंगाशहर राजस्थान में युवाचार्य पद प्राप्त कर युवाचार्य महाश्रमण कहलाए। आचार्य महाप्रज्ञ ने तो इनमें असीम विद्वता-क्षमता देख अपने उत्तराधिकारी के रूप में घोषणा कर दी थी। अतः उनके महापरिनिर्वाण के पश्चात् 31 जुलाई 2010 का दिन श्रमण परंपरा में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हो गया जब ज्ञान के अगाध सागर आचार्य महाश्रमण, अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण कहलाए और बन गये सबसे अधिक विशाल, ऊर्जावान और तेजस्वी तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें आचार्य। समस्त भारत की कीर्ति में अपार वृद्धि हुई और श्रमण संस्कृति को मिल गया एक स्तुत्य संरक्षण।

पूज्यश्री की धर्मसभाओं में समुद्र की तरह उमड़ते जन सैलाब और जनमानस में तेजी से बढ़ती लोकप्रियता का रहस्य यही है कि उनके सम्पर्क में आते ही पीडित को पीड़ा, घायल को घावों तथा त्रस्त को तनावों से मुक्ति का रास्ता तुरन्त प्राप्त हो जाता है।

उनका सान्निध्य सूर्य से आने वाले प्रकाश और आकाश से गिरने वाले जल की भाँति सभी को समान सम्मान और समस्याओं के समाधान के सूत्र सहज सुलभ करा रहा है। पूज्यश्री का मानना है कि मन ही हमारी अशान्ति का वाहक है इसलिए यदि मन पर अंकुश लग जाये, उसमें निहित नकारात्मक तत्वों का स्थान यदि सकारात्मक तत्व ग्रहण कर ले तो परिवार समाज तो क्या पूरी सृष्टि में शान्ति हो सकती है। उनका स्पष्टतः यह भी संदेश है कि पूरे विश्व विशेषकर भारत को अशान्ति की भट्टी में झोंकने वाला भ्रष्टाचार केवल एक समस्या नहीं है यदि यह समस्या होती तो इसका समाधान संभव हो सकता था। परन्तु आज भ्रष्टाचार स्वच्छंदता को जन्म देने वाली उस भौतिक व्यवस्था का परिणाम है जिसमें जीवन का प्रधान तत्त्व पैसा है। रुपये को मानदण्ड बनाकर मनुष्य-मनुष्य के सुख-दुःख का सौदा कर रहा है। यही कारण है कि भ्रष्टाचार वर्तमान जीवन शैली की पूरक मान्यताओं की परिभाषा बनकर सम्पूर्ण समाज के बीच पसर गया है। इसको समूल नष्ट करने के लिए नये स्वस्थ समाज का निर्माण करना होगा। जिसके लिए सामाजिकता, नैतिकता, मानवता, आदर्शों और मूल्यों के बीज बोने होंगे तभी संयमी धैर्यवान, आत्मीय और सज्जन वृक्षों की फसल लहलहा सकेगी।

आचार्य महाश्रमण का व्यक्तित्व जितना उदार, भव्य और गौरवशाली है उनका कृतित्व भी उतना ही प्रभावी, सारपूर्ण और जनहितकारी है। यही कारण है कि वे आज जनजीवन के अस्तित्व की रक्षा और अस्तित्व के संरक्षण के लिए आस्था की लौ के रूप में उभरे हैं। इसलिए आचार्य महाश्रमण मात्र किसी व्यक्ति का नाम नहीं है बल्कि मिलन है उन संस्कृतियों का जो सबको एक रहने की प्रेरणा देता है, परम्परा है उस समर्पण की जिसकी उपस्थिति मात्र से ही ज्ञान दीप प्रज्जवलित हो उठते हैं। प्रखर चिंतन एवं बेबाक प्रवचनशैली के ऐसे संदेशवाहक हैं जिनमें आचरण और व्यवहार की एकरूपता है। सर्वधर्म समभाव के ऐसे सृजक हैं जो जीवन की यात्रा पांवों से नहीं वरन् विचारों से कर रहे हैं। स्थायी आकर्षण से बंधे ऐसे चुम्बकीय वीर हैं जिन्होंने लाखों-करोड़ों संतप्त हृदयों को झंझोड़ कर उनमें सुख-शान्ति और मधुरता की मिठास घोल दी है। मां जिनवाणी के ऐसे सच्चे सपूत हैं जो धर्म, संस्कृति, कला, व्याकरण आदि समस्त विधाओं में वृहस्पति सम पारगामी हैं। समृद्धि में वृद्धि की ऐसी ऋद्धि हैं जिनके स्मरण मात्र से ही बुझे चेहरे खिल उठते हैं, जिनके आगमन के हर्षातिरेक में दुश्मन भी गले मिल जाते हैं, जिनके आत्मीय वात्सल्यमयी आंचल में सिमटकर गरीब-अमीर, कमजोर-मजबूत तथा अपने बेगाने सभी एक हो जाते हैं। समय और समाज के ऐसे संवेदनशील कल्पवृक्ष हैं, जो बिना कुछ मांगे ही सब कुछ प्रदान कर देते हैं।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार
न्यू कृष्णा नगर, जैन बाग, वीरनगर
सहारनपुर - 247001 (उ.प्र.)

अर्द्धशतक अक्षर प्रणाम

हे!
प्रबुद्ध तीर
आधुनिक कबीर।
निर्मल नजीर।
मानवीय समीर।
जो
अन्दर-बाहर से
पूर्णतः
फकीर।
ऐसी
प्रदिप्त
लौ
को प्रणाम।

● **मुनि मोहजीतकुमार**

www.terapanthinfo.com

अपेक्षा है एक अभिनव-मोड़ की

प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार

जिस युग में अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात हुआ था, उस युग में उसकी जितनी जरूरत थी, उससे कहीं अधिक प्रासंगिक ही नहीं बल्कि अनिवार्यतः आवश्यक है आज अणुव्रत आंदोलन की। अणुव्रत आंदोलन का घोष है ''संयमः खलु जीवनम् संयम ही जीवन है।'' सन् 1949 में जब अणुव्रत आंदोलन प्रारम्भ हुआ, उस समय संयम का जीवन-मूल्य उतना खतरे में नहीं था, जितना आज है। यदि इस जीवन-मूल्य को बनाए रखना है, तो अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से हमें संयम-विकास के नूतन आयामों को खोजना होगा। वैयक्तिक जीवन में तो संयम का विकास अत्यंत अनिवार्य है ही, वरन् सार्वजनिक जीवन में आज उसके बिना मनुष्य-समाज का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है। जो युग आज चल रहा है, उसमें उभरने एवं पनपने वाली अनेकानेक जागतिक समस्याओं के मूल में है संयम का ह्रास, भले वह समस्या चाहे पर्यावरण-प्रदूषण की हो, सृष्टि-संतुलन-विधान की हो, मौसम-परिवर्तन के परिणामस्वरूप आने वाली विकराल प्राकृतिक आपदाओं की हो, पारिवारिक जीवन में हो रहे विघटन की हो अथवा सार्वजनिक जीवन में बढ़ रहे अपराध, दुर्घटना आदि की हो।

आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त नारा है

बदले युग की धारा
अणुव्रतों के द्वारा।

आज चिन्तन करना होगा स्वयं अणुव्रत आंदोलन की धारा को नई दिशा देने का। यदि 'संयम' को वैयक्तिक एवं समष्टिगत जीवन में कारगर रूप में विकसित करना है, तो ऐसा एक सूत्री कार्यक्रम व्यापक रूप में अणुव्रत के मंच पर चलाना होगा।

आचार्य महाप्रज्ञ की समुज्जवल प्रज्ञा ने हमें यह बोध कराया कि संयम, अहिंसा आदि मूल्य केवल उपदेश देकर जीवन में फलित नहीं किए जा सकते। इसी आधार पर उन्होंने प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अहिंसा-प्रशिक्षण, सापेक्ष अर्थशास्त्र आदि के विभिन्न प्रायोगिक आयामों को युग के समक्ष प्रस्तुत किया। इन आयामों की सैद्धांतिक गुणवत्ता के विषय में पर्याप्त-आधार हमारे पास हैं, किन्तु इनकी अनुप्रायोगिक आधारभूमि को अभी पर्याप्त रूप में सुदृढ़ करने की अपेक्षा है। अणुव्रत की प्रवृत्तियों के साथ हमें यथासंभव 'अनुप्रयोगों' को जोड़ना होगा तथा प्रायोगिक निष्पत्तियों का लेखा-जोखा एवं मूल्यांकन प्रस्तुत करना होगा। उदाहरणार्थ नशामुक्ति का कार्य बहुत ही उत्साह के साथ एवं सघन रूप में चलाया जाय, किन्तु उसके साथ ही 'व्यसन-मुक्ति' के प्रयोगों को जोड़ना होगा। यह व्यापक प्रशिक्षण के द्वारा ही संभव होगा। इस प्रकार सिद्धांत, प्रशिक्षण, अनुप्रयोग, प्रयोग और परीक्षण की एक व्यवस्थित शृंखला बनानी होगी। केवल 'नशा-त्याग' का आंदोलन या प्रतिज्ञा तथा उसके आंकड़ों के आधार पर ही अभियान की सफलता का मूल्यांकन पर्याप्त नहीं होगा।

शिक्षा के क्षेत्र से ही इसका व्यवस्थित प्रारम्भ किया जाय। सर्वप्रथम अध्यापक-वर्ग को प्रशिक्षित कर तैयार किया जाए तथा अध्यापकों के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुंचा जाय। साथ ही बहुसंख्या में प्रशिक्षक तैयार कर, उन्हें इस अभियान के साथ जोड़ा जाय। विद्यालय- विद्यालय में प्रशिक्षक पहुंचें, शिक्षकों को अभिप्रेरित करें, उनका व्यवस्थित प्रशिक्षण हो, वे फिर विद्यार्थियों को निष्ठा के साथ प्रयोग कराए और अन्त में आधुनिकतम अनुसंधान विधि द्वारा परीक्षण हो।

दिखने में यह कार्य भले ही कठिन लगे, किन्तु योजनाबद्ध रूप में इसे सफलता की सीढ़ी तक पहुंचाया जा सकता है। साधु-साध्वियां, समण-समणियां, उपासक-उपसिकाएं, अणुव्रत कार्यकर्ता इत्यादि की शक्ति का भी केन्द्रीकरण हो तथा अणुव्रत समितियों, तेरापंथी सभाओं महिला-मंडलों, युवक परिषदों आदि के कार्यकर्ताओं का भी पूरा उपयोग किया जाय, तो एक सुव्यवस्थित कार्यक्रम सुदीर्घ काल तक चलाने पर निश्चित रूप से उसका ऐसा परिणाम संभवतः प्राप्त हो सकेगा, जिसके आधार न केवल हमें अनुभव होगा अपितु दूसरे लोग भी अनुभव करेंगे कि ''अणु'' की शक्ति कितनी महान् है।

क्या आचार्य महाश्रमण के अमृत महोत्सव के प्रसंग को निमित्त बनाकर तथा 'मेवाड़' को इसका प्रयोग-क्षेत्र चुनकर ऐसा एक ''अभिनव-मोड़'' का चिंतन संभव है? यदि हो तो निश्चित रूप से इसके आशातीत परिणाम आ सकते हैं तथा गुरुदेव तुलसी की जन्म-शताब्दी (वर्ष 2014) एवं आचार्य महाप्रज्ञ की जन्म-शताब्दी (2020) तक इसी अभियान को उत्तरोत्तर शक्तिशाली बनाकर यह प्रमाणित किया जा सकता है कि ''संयम खलु जीवनम्'' एक घोष ही नहीं, जीवन की अक्षुण्ण सच्चाई है।

नशामुक्ति के संदर्भ में जो करेंगे, उसका ही फिर अन्य समस्याओं के समाधान में पुनरावर्तन किया जा सकेगा। अणुव्रत आंदोलन का यह दायित्व है और आचार्य-त्रयी के ऐतिहासिक प्रसंगों का इससे अधिक और कोई समारोह नहीं हो सकता।

www.terapanthinfo.com

वंदन है अभिवंदन है....

जिनशासन के सर्वोच्च शिखर सादर अभिनंदन है
श्रद्धा-पुष्प, आस्था-अक्षत, समर्पण ही चंदन है
ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप-वीर्य पंचाचार संजीवन है
एकादशमाधिपति अमृत महोत्सव, पुलकित गण उपवन है
हे महाश्रमण! शत-शत वंदन है अभिवंदन है।।

नीलाम्बर में उदित प्राणमय दिव्य दिवाकर
ज्ञान सुधा से शीतल करते स्नेह सुधाकर
उर में नव्य स्पन्दन करते प्रज्ञ-प्रभाकर
जीवन को आलोकित कर दो हे करुणाकर
सबहुँ तीरथ-धाम पुण्य, हे नाथ! तब दर्शन है।।

जीवन मान सरोवर में विकसे नीरज-से
अनासक्त अध्यात्म चेतना के धीरज-से
अमल धवल चादर, विमुक्त भव-रज से।
शोभित हो तप-त्याग-अहिंसा की सजधज से
सम-शम-श्रम अमृत से अभिसिक्त जीवन है।।

भिक्षु-सिद्धान्त, भारीमाल-समर्पण, ऋषिराय-सौम्यता
जयाचार्य-स्वाध्याय, मघवा-ऋजु, डालिम-अनुशासनप्रियता
कालूगणी-निस्पृही, तुलसी-नवोन्मेषी महाप्रज्ञ स्थितप्रज्ञता
दसों आचार्यों की सकल गुण सम्पदा, बोध-गम्यता
गुरु वाक्य ही ब्रह्म वाक्य है, प्रफुल्लित मोहनानन है।।

ऋद्धि-सिद्धि, नव-निधि, सब हैं संग तुम्हारे
प्रेमाश्रु निर्झर प्रतिपल कोमल ऋषि पांव पखारें
पौरुष की अथक गाथा गाएं सूरज चांद सितारे
वीतरागी छवि को हसरत से जग समग्र निहारे
मुख से झरते मंत्राक्षर, शक्ति का उद्भव संवर्द्धन है।।

पर्वत में ऊँचाई होती, पर ना होती गहराई
सागर में गहराई होती, पर ना होती ऊँचाई
साम्य योगी महापुरुष तुमने जानी जीवन सच्चाई
सूर्य रहे प्राची में, पर विश्वव्यापी होती अरुणाई
जीवन मूल्यों का ऊर्ध्वारोहण, कषाय-विसर्जन है।।

विश्व भाल पर सृजित हुआ अभिनव इतिहास
भ्रमित मानव ने अलौकिक प्रज्ञा से पाया उजास
सत्यनिष्ठ-आचारनिष्ठा-आत्मनिष्ठा कृत विश्वास
जीवन-पोथी के पत्रों पर उकेरा सर्वांगीण विकास
इन्द्रधनुषी आयामों में प्रतिबिम्बित मौलिक चिंतन है।।

हे अमिताभ आर्यवर! आगमों के परम प्रकाशक
मर्यादा और अनुशासन के तुम प्रबल प्रसारक
नवयुग में, शुभ शांति-क्रांति के उदात्त आह्वाहक
पुरुषार्थ के पुरोधा, श्रमण परम्परा-संस्कृति संपोषक
शुभंकर-श्रेयस्कर अनुशासना में निर्द्वन्द्व जन-मन है।।

रत्नत्रयी-आराधक गुरुवर, विद्या-विनय-विवेक प्रदाता
आर्हत-वांङ्मय व्याख्याता, तेरापंथ के भाग्य विधाता
दसों दिशाओं में फहराई, धर्म-कीर्ति की ज्ञान-पताका
सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् के तुम हो सक्षम उद्गाता
आर्ष-वाणी का सर्वत्र सात्विक अभिव्यंजन है।।

हे महा मनस्वी - हे महा तपस्वी - हे महा धृतिधारी
नीर-क्षीर के परम विवेकी, युगनायक मंगलकारी
सहज-सरल-सौम्य करुणेश, गंग सम हो हितकारी
सदा शील-श्रुत संपन्न, संघ तुम पर है बलिहारी
चिन्मय सबका चित्त करो, कट जाय भव बन्धन है।।

संकल्पों के मंगल स्वस्तिक आज मैं सजाऊँ
असीम को कौन से शब्दालंकारों में उपमाऊँ
सांसों के इकतारे में भक्ति सुर-साज बजाऊँ
मन मंदिर में अर्चना के पावन दीप जलाऊँ
संघ समर्पिता रहूँ सर्वदा, विनयी पुष्प मन है।।

हे महाश्रमण! शत-शत वंदन है अभिवंदन है।

● **पुष्पा सिंघी**
जैन हैण्डलूम एम्पोरियम
नन्दी साही, चौधरी बाजार
कटक - 753001 (उड़ीसा)

www.terapanthinfo.com

जागरूकता की मूर्त प्रेरणा

जगदीश चंद्र शर्मा

आचार्य महाश्रमण बहुमुखी प्रेरणा के ऐसे प्रभापुंज हैं जिन्हें जागरूकता, सजगता अथवा जाग्रत रहने की मूर्त प्रेरणा के रूप में देखा जा सकता है। जो प्रेरणा अर्थात् कार्य में प्रवृत्त करने की क्रिया का मूर्त अथवा साकार रूप और वह भी शरीरधारी जीवंत, चैतन्य और प्रबुद्ध स्वरूप, पूर्ववर्ती आचार्यों की परंपरा को अधिक सशक्त बनाने की दृष्टि से अतीव उपयुक्त और प्रशंसनीय प्रतिभावान पात्र हैं। वह ज्ञानराशि के अगाध रत्नाकर में अवगाहन कर अपने कार्य, अनुभव और ज्ञान के द्वारा समाज में व्याप्त विसंगतियों को दूर कर जन-जन में नवीन प्रेरणा कर स्फुरण करने की दृष्टि से युवाचार्य महाश्रमण अब आचार्य महाप्रज्ञ के क्रांतिकारी निर्णय के अनंतर अध्यात्मनिष्ठा, अनुशासन, विनम्रता, आचारनिष्ठा के साथ ही भिक्षु-शासन की गरिमा का संवर्धन करने वाले उनके उत्तराधिकारी आचार्य महाश्रमण के रूप में प्रख्यात हुए हैं। उनका अब तक का जीवन एक अध्यवसायी, ज्ञान-पिपासु, सर्वजन मंगलकामनायुक्त, उत्कर्षरत और एक आदर्श चिंतक के रूप में सदा-सदा के लिए विश्रुत रहेगा। तभी उन्हें जन-जन के लिए जागरूकता की मूर्त प्रेरणा के स्रोत कहा जा सकता है।

उनके यत्र-तत्र व्यक्त किए गए विचारों के आधार पर उनके दृष्टिकोण के विभिन्न आयाम हैं

● मनुष्य की क्षमता

मनुष्य की क्षमता अनंत है, अपार है। यदि उसका सही उपयोग किया जाए तो वह कई गुना बढ़कर अपने वर्चस्व को

व्यक्त करने की सामर्थ्य रखती है। उसका सही उपयोग करने के लिए संकल्प आवश्यक है "मनुष्य में जितनी क्षमता होती है उतना उसका उपयोग नहीं होता। उसका कारण है संकल्प का अभाव। कल्पना जब तक कल्पना रहती है वह संकल्प नहीं बनती। जब वह स्थिरता और निश्चिंतता तक पहुंच जाती है, संकल्प बन जाती है। संकल्प एक शक्ति है। उसका प्रयोग रचना और विध्वंस दोनों में किया जा सकता है। वह व्यक्ति के विवेक पर निर्भर करता है कि वह उसका उपयोग किस दिशा में कर सकता है। दृढ़ संकल्पी के लिए दुष्कर कुछ नहीं होता।"

● शरीर का महत्व

आचार्य महाश्रमण ने शरीर के महत्व को मुक्त कंठ से स्वीकार किया। शास्त्रों में भी कहा गया है कि "शरीर माद्यं खलु धर्म साधनम्" अर्थात् शरीर निश्चित रूप से धर्म का साधन है। शरीर की उपयोगिता सर्वविदित है। शरीर होगा तो हम होंगे इसलिए शरीर को सदैव निरोग और शक्ति-सम्पन्न बनाए रखना हमारा परम कर्त्तव्य है क्योंकि "शरीर हमारा अनादिकालीन साथी है। जितना सहचरत्व शरीर निभाता है उतना वाणी, मन और श्वास भी नहीं निभाते। आज तक एक क्षण भी ऐसा नहीं बीता जब संसारी आत्माओं के साथ शरीर कभी नहीं रहा है।"

शरीर का उपयोग अच्छे और बुरे दोनों कार्यों में किया जा सकता है। प्रत्येक को इसे समझ कर बुराई का त्याग कर अच्छाई की ओर अग्रसर होना चाहिए।

"शरीर एक साधन है। उसका प्रयोग धर्म-कार्यों में भी किया जा सकता है और पाप कार्यों में भी।.... वह व्यक्ति के विवेक पर भी निर्भर है कि वह उसे धर्म का साधन बनाता है अथवा पाप का साधन।"

● उपभोक्तावादी संस्कृति का दुष्प्रभाव

आज अनेक प्रलोभनों से उपभोक्तावादी संस्कृति लोगों का भरपूर शोषण कर उनके जीवन को नष्ट करने पर तुली है। शरीर के ही संदर्भ में एक प्रसंग पर महाश्रमण ने उल्लेख करते हुए संकेत दिया कि एक लड़के ने भरपेट भोजन करने के बाद अपने पिता से पूछा

"ऊर्ध्वं गच्छन्ति नोद्गाराः नाधोगच्छति वायवः।

निमंत्रणं समायातं तात! ब्रूहि करोमि किम्?

पिताश्री! खाना इतना खा लिया है कि न तो उद्गार (डकार) हो रहा है और न ही अधोवायु का निस्सरण। और भोजन के लिए निमंत्रित किया गया हूं। आप बताएं क्या करूं?"

पिता ने कहा

"भोज नं कुरु दुर्बुद्धे! मा प्राणेषु दयां कुरू।

परान्नं दुर्लभं लोके शरीराणि पुनः पुनः।।

www.terapanthinfo.com

पुत्र! प्राणों की चिन्ता मत करो, जाओ भोजन करो। मुफ्त का भोजन कब-कब मिलता है? शरीर तो अगले जन्म में फिर मिल जाएगा।

पिताश्री की यह व्यंग्य प्रेरणा उपभोक्तावादी संस्कृति में पलने वालों के लिए एक पाठ-बोध है।''

● धन का मोह

वर्तमान में ऐसा प्रतीत होने लगा कि धन मानव-मूल्यों से भी ऊपर निकलने लगा है। मानवीय मूल्यों की उपेक्षा और धन के प्रति उत्कट लिप्सा मनुष्य को अपने ही भयंकर विनाश की ओर ले जा रही है। उसे मार्ग से विरत करने के लिए महापुरुष अपने सद्विचारों-उपदेशों-संदेशों आदि से निरंतर उद्बोधन दे रहे हैं कि वह यथार्थ को समझे और अपने कल्याण की ओर लगे

''धन के प्रति आसक्ति या ज्यादा राग-भाव अगर है तो वह भी दुखदायी ही है। जहां भी ज्यादा आसक्ति है वहां सुख नहीं हो सकता। आवश्यकता है हम राग को कम करें, सुखी जीवन जीने का प्रयत्न करें।''

● सुखी जीवन के लिए

सुखी जीवन के मार्ग में अनेक दुःखों का सामना करना पड़ता है। उन दुःखों पर विजय पाने के उपरांत ही सुख का मार्ग प्रशस्त होता है

''जन्म दुःख है, बुढ़ापा दुख है, रोग दुःख है, मृत्यु दुःख है। आश्चर्य है संपूर्ण संसार दुःखमय है। अगर दुनिया में दुःख नहीं होता तो धर्म या अध्यात्म का कोई मूल्य नहीं होता। दुःख से निवृत्त होने के लिए ही व्यक्ति धर्म या अध्यात्म का सहारा लेता है।''

● लगाम खींचना

दुष्प्रवृत्तियों की बढ़ती रोकने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को सावधान और सन्नद्ध रहना चाहिए

''जत्थेन पासे कइ दुप्पउतं, काएण वाया अदु माणसेण।

तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा, आइन्नओ खिप्पमिवक्खलीयं।''

जहां कहीं भी मन और काया को दुष्प्रवृत्त हुआ देखो तो धीर साधु वहीं संभल जाए जैसे गतिमान अश्व लगाम को खींचते ही संभल जाता है।

● प्रायश्चित

प्रायश्चित करना गर्व का विषय है। प्रायश्चित से मन का भार उतर जाता है। व्यक्ति को इससे नवीन दिशा का बोध होता है

''प्रायश्चित एक प्रकार की चिकित्सा है। चिकित्सा रोगी को कष्ट देने के लिए नहीं किन्तु रोग-निवारण के लिए की जाती है। इस प्रकार प्रायश्चित भी राग, द्वेष अथवा तज्जनित अपराधों के शोधन के लिए किया जाता है।''

● सेवा का महत्व

जन-जीवन में सेवा को अति महत्वपूर्ण माना गया है। सेवा करने से व्यक्ति को आत्मसंतोष तो मिलता ही है अपितु उसके जीवन में नित्य नया निखार भी आता है

''ज्ञानी महान है। ध्यानी महान है। उनसे भी ज्यादा महान वे हैं जो स्वार्थ को छोड़कर परार्थ या परमार्थ का अभिलाषी बनता है।''

● जीवन-निर्माण के तत्त्व

जिन गुणों से जीवन बनाया जाता है वे गुण सचमुच मूल्यवान हैं। उन्हीं के विकास से जीवन जीवन कहलाने का अधिकारी होता है

''जीवन-निर्माण में दो तत्त्वों का महत्वपूर्ण स्थान है। ज्ञान और चरित्र।... पहले ज्ञान और फिर चरित्र।..... सम्यक् ज्ञान के बिना सम्यक् चरित्र प्राप्त नहीं होता।''

● ज्ञान-प्राप्ति का स्रोत : स्वाध्याय

स्वाध्याय का क्षेत्र विशाल है। स्वाध्याय जितना चाहें किया जा सकता है। कोई विराम नहीं। कोई छोर नहीं। केवल निष्ठा अपेक्षित है। आचार्य महाश्रमण ने स्वाध्याय के पांच प्रकार बताए हैं

1. वाचना अर्थात् पठन, 2.प्रतिप्रच्छन्ना अर्थात् प्रश्न पूछना, 3. परिवर्तना अर्थात् परिचित विषय को बार-बार दोहराना, 4. अनुप्रेरणा अर्थात् परिचित और स्थिर विषय पर चिंतन करना एवं 5. धर्म-कथा अर्थात् स्थीरीकृत और चिंतित विषय का उपदेश करना।

● संगठन की दृढ़तार्थ

आचार्य महाश्रमण तेरापंथ धर्मसंघ को मजबूत देखना चाहते हैं। इसके लिए आवश्यक है कार्यकर्ता सुयोग्य हों। अच्छे कार्यकर्ताओं के मौलिक गुण उन्होंने इस प्रकार बताए हैं परमार्थभावना, साहस, विश्वास, प्रामाणिकता और कार्यक्षमता बढ़ाने में विद्यार्थी की भांति निरंतर संलग्न रहना। जैसे ''सुखार्थिनः कुतो विद्या, कुतो विद्यार्थिनः सुखम्'' किन्तु उन्होंने इससे भी आगे कहा है ''सुखार्थिन कुतः कार्यम्, कुतः कार्यर्थिनः सुखम्।''

पद-यात्रा, व्यसन-मुक्ति, आत्म-अनुशासन, अस्पृश्यता-निवारण, नारी-जागृति, सामाजिक कुरूढ़ियों का उन्मूलन, आत्मसंयम, प्रसन्नतावर्धन, आचार-निष्ठा, भावनात्मक एकता, मिलावट-विरोध, संस्कार-निर्माण, वैमनस्यविनाश, सत्संग, शिकार-वर्जना, मदिरा-उन्मूलन, खाद्य-विवेक, ईमानदारी और कई गुणों के विकास पर मार्गदर्शन दिया।

आचार्य महाश्रमण अपने पूर्ववर्ती आचार्यों की वंदना करते हुए स्वयं को धन्य मानते हैं। सम्प्रति अणुव्रत आंदोलन को गति और विस्तार देने में दत्तचित्त होकर लगे हैं। संक्षेप में, आचार्य महाश्रमण मौलिक विचारक, विद्वान मनीषी, बहुभाषा-निष्णात, प्रकांड वैयाकरण, ज्ञान के सागर, मधुर भाषी और सर्वोच्च पद के सुयोग्य पात्र हैं।

पोस्ट - गिलूंड
जिला - राजसमंद (राजस्थान)

एक विरल सत्यान्वेषक

प्रो. बच्छराज दूगड़

आचार्य भिक्षु ने अपने परम विनीत शिष्य मुनि भारमलजी से एक दिन कहा 'यदि किसी ने तुम्हारी गलती बताई तो तुम्हें प्रायश्चित स्वरूप तेला करना होगा।' मैं महाश्रमण के लिए उस प्रकार तेला करने की बात तो नहीं कहता, किंतु एक बात अवश्य कहना चाहता हूँ-आज सुविधावाद का युग है। साधु-समाज पर भी उसका प्रभाव पड़ने लगा है। इस स्थिति को देखते हुए मैं महाश्रमण पर एक प्रयोग करना चाहता हूँ। महाश्रमण! यदि तुम्हारे बारे में ऐसी कोई शिकायत आई कि मुनि मुदित सुविधावादी बन रहे हैं या तुम्हारी कोई सुविधावादी प्रवृत्ति मेरे स्वयं के ध्यान में आई तो तुम्हें प्रायश्चित स्वरूप तीन दिनों तक तीन-तीन घंटे खड़े-खड़े ध्यान करना होगा।' आचार्य तुलसी द्वारा यह एक कठिन अनुशासनात्मक प्रयोग उस व्यक्तित्व के लिए था जिसे भविष्य में भारमलजी के समान ही तेरापंथ धर्मसंघ की बागडोर संभालनी थी। 'महाश्रमण' पद पर मनोनीत करते हुए आचार्य तुलसी ने मुनि मुदित के सरलमना, ऋजु, विनम्र और विद्याप्रेमी गुणों का जिक्र कर भविष्य की ओर इंगित करते हुए कहा था 'इनमें वे सभी गुण हैं जो एक अच्छे व्यवस्थापक में होने आवश्यक हैं।' इसी की पुष्टि आचार्य महाप्रज्ञ ने महाश्रमण मुनि मुदित को युवाचार्य पद देते हुए इन शब्दों में की थी 'आज मैं सचमुच निश्चिंत हो गया हूं।' आचार्य महाप्रज्ञ ने वि.सं. 2053 की दीपावली को लिखे उत्तराधिकार पत्र में यह उल्लेख किया था 'मुनि मुदित कुमार की अध्यात्मनिष्ठा और आचारनिष्ठा ने मेरे मन को प्रभावित किया है। उनकी विनम्रता भी आकृष्ट करती रही है।'

भारतीय परंपरा में गुरु का स्थान सर्वोपरि है। आचार्य महाप्रज्ञ को जिस प्रकार आचार्य तुलसी ने ढाला, उसी प्रकार आचार्य महाप्रज्ञ आचार्य महाश्रमण को निरंतर गढ़ते रहे हैं। इसमें आचार्य महाप्रज्ञ का पुरुषार्थ तो है ही, किंतु साथ ही आचार्य महाश्रमण की गुरु से प्राप्ति की वैसी ही उत्कंठा है, जिस प्रकार स्वाति नक्षत्र के जल बिंदु को पीने की चातक की उत्कंठा होती है। आचार्य महाश्रमण का यह सौभाग्य भी है कि उन्हें आचार्य महाप्रज्ञ जैसे साक्षातधर्मा पथप्रदर्शक प्राप्त हुए। वे आधुनिक युग के नचिकेता हैं जो अनावृत सत्य को जानने के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर गुरु-चरणों में तत्पर हैं। उनकी गुरुभक्ति अद्वितीय है। गुरु के मुंह से निकला हर शब्द, गुरु का हर इंगित उनके लिए ब्रह्मवाक्य है। अहिंसा यात्रा के अंतर्गत आचार्य महाप्रज्ञ की लाडनूं से सीधे बीदासर यात्रा निर्धारित थी जबकि आचार्य महाश्रमण को लाडनूं से स्वतंत्र विहार कर राजलदेसर होते हुए बीदासर पधारना था। राजलदेसर 2-3 दिन का प्रवास था। बारिश की वजह से राजलदेसर के ताल में दलदल की स्थिति हो जाती थी। राजलदेसर के श्रावकों का आग्रहपूर्ण निवेदन था - युवाचार्यश्री 1-2 दिन और विराज जायें ताकि ताल पूरा सूख जाए और यात्रा निर्विघ्न हो। अकस्मात् आचार्य प्रवर का संदेश आया - युवाचार्य अनुकूल हो तो राजलदेसर से विहार कर बीदासर आ जाए। युवाचार्यश्री चाहते तो एक-दो दिन राजलदेसर रुक सकते थे किंतु गुरु इंगित को शिरोधार्य कर श्रावकों के आग्रह को नकारते हुए आचार्य प्रवर के पत्र को सिर पर रखकर कहा गुरु इंगित से बड़ा मेरे लिए कुछ नहीं है, मैं आज ही बीदासर के लिए प्रस्थान करूंगा। उस समय युवाचार्यश्री का तेज देखने योग्य था। उस दृश्य को शब्द बांध ही नहीं सकते, मैं घटना मात्र को कह रहा हूं भावों की अभिव्यक्ति असंभव है। यह घटना उनकी गुरु के प्रति अनन्य श्रद्धा और विश्वास को दर्शाती है।

आचार्य महाश्रमण सत्य के अन्वेषक हैं। वस्तुतः एक धर्मसंघ के महत्त्वपूर्ण दायित्व का भार जिसके कंधे पर हो, उसकी सबसे बड़ी संपदा सत्य ही होती है। सत्यान्वेषक के लिए पहली शर्त है उद्दाम अनुसंधित्सा। जहां यह भाव आ जाता है कि सत्य को जान लिया, वहां सत्य स्थिर पानी की तरह सड़ने लगता है।

आचार्य महाश्रमण एक सृजनशील साहित्यकार, अखण्ड परिव्राजक, कुशल समाज सुधारक एवं अहिंसा के व्याख्याकार हैं। अहिंसा यात्रा-2 का प्रारंभ कर ग्रामवासियों एवं श्रद्धालुओं को नैतिक मूल्यों के विकास एवं अहिंसक चेतना के जागरण के लिए अभिप्रेरित कर रहे हैं।

आचार्य महाश्रमण सामाजिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक समस्याओं से वे गहरा सरोकार रखते हैं। महत्त्वपूर्ण यह है कि वे केवल समस्याओं की ही बात नहीं करते, उनके समाधान भी प्रस्तुत करते हैं।

आचार्य महाश्रमण के समक्ष ग्रामीणजन बीड़ी-गुटखा का परित्याग करते हुए

किंतु जहां यह उत्कट अभिलाषा बनी रहती है कि सत्य को जानना है, वहां सत्य बहते पानी की तरह निर्मल बना रहता है। आचार्य महाश्रमण ऐसे ही जिज्ञासु हैं। उनकी जिज्ञासुवृत्ति सहज सामने आती रही है। उनके ज्ञान की गंभीरता का रहस्य भी यही है। विषय की स्पष्टता के बिना तथा बिना ग्राह्य बनाए उसे स्वीकार करना उन्हें कभी काम्य नहीं रहा है जिज्ञासा में उन्हें न कोई संकोच है और न वे अपनी जिज्ञासाओं की इतिश्री करते हैं। स्वाध्याय, प्रश्न-प्रतिप्रश्न, श्रवण और मनन द्वारा निरंतर परत-दर परत वे सत्य को अनावृत करते रहते हैं। उनके अनावृत ज्ञान की परीक्षा आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा की जाती रही है। आचार्यश्री, साध्वी विश्रुतविभा, मुनि मुदित एवं कुछ साधु-साध्वी-समणीवृन्द को अध्यापन करवाते। यदा-कदा मुझे भी वहां उपस्थित रहने का सौभाग्य मिलता। अध्यापन के दौरान आचार्यश्री साधु-साध्वी-समणीवृन्द को प्रश्न करते। उत्तर न मिलने की स्थिति में मुनि मुदित से प्रश्न करते और मुनि मुदित क्षणभर सोचकर उस प्रश्न का उत्तर प्रस्तुत कर देते। आचार्यश्री साधु-साध्वी एवं समणीवृन्द की ओर प्रेरणा की दृष्टि से देखते फिर मुनि मुदित की ओर स्नेहिल आंखों से निहारते।

ज्ञान प्राप्ति के लिए दो साधनों का उपयोग होता रहा है पहला तर्क और दूसरा श्रद्धा। तर्क तो प्रमाण के रूप में प्रेमियों को जानने का साधन है ही। गीता के अनुसार श्रद्धा भी ज्ञान प्राप्ति का साधन है 'श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानम्।' जैन दर्शन में ज्ञान का क्रम श्रद्धा के बाद है। श्रद्धा और तर्क प्रायः परस्पर विरोधी समझे जाते हैं, पर वस्तुतः वे एक-दूसरे के पूरक हैं। जो श्रद्धा तर्क द्वारा समर्थित न हो, वह श्रद्धा पुष्ट नहीं कही जा सकती। जैन दर्शन और महावीर वाणी में आचार्य महाश्रमण की आस्था अविचल है, फिर भी जैन धर्म की किसी मान्यता को तर्क की कसौटी पर कसे बिना मानने को वे तैयार नहीं हैं। महावीर-वाणी में अटूट श्रद्धा होते हुए भी वे आगम वाणी को तर्क की कसौटी पर कसते रहते हैं। उनका यही एक गुण उन्हें सच्चे दार्शनिक के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए पर्याप्त है। तर्क आधारित श्रद्धा का परिणाम यह होता है कि नित-प्रतिदिन आगम के नए-नए अर्थ व्यंजित होते रहते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ के साथ आगम-मंथन में उनके प्रश्न-प्रतिप्रश्नों की शृंखला तब तक चलती रहती थी जब तक आगम का मर्म उनकी पकड़ में न आ जाए। दर्शनशास्त्र में तो कहा ही जाता है कि उत्तर ढूंढने से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है प्रश्न उठाना। प्रश्न उठाने की इस प्रक्रिया में आचार्य महाश्रमण का कोई सानी नहीं है।

प्रश्न उपस्थापित करना, विशेषकर आचार्य महाप्रज्ञ जैसे गुरु के समक्ष सरल कार्य नहीं है। एक ओर गुरुभक्ति है, दूसरी ओर तर्कसंगतता का प्रश्न। तर्कसंगतता पर इतना अधिक बल कभी-कभी शिष्य की श्रद्धा के विषय में संशय उत्पन्न कर सकता है। आचार्य महाश्रमण की विशेषता यह है कि वे प्रश्न पर प्रश्न उठाते हैं, किंतु उनकी श्रद्धा के विषय में संदेह का कोई अवकाश इसलिए नहीं होता क्योंकि उनके प्रश्न सरल जिज्ञासुवृत्ति से उत्पन्न होते हैं। उनमें न कहीं पांडित्य प्रदर्शन का लेश है और न दुराग्रह का अंश। केवल विशुद्ध सत्य का आग्रह है। उन्होंने अनेकांत को आत्मसात करके ही अपनी तर्कबुद्धि को श्रद्धा का परिपूरक बनाया है। तर्क द्वारा सत्य को जाना जाता है, किंतु एक तर्क से जिस सत्य को जानते हैं, प्रति तर्क द्वारा उस सत्य को काटा भी जा सकता है, इसीलिए तर्क को 'अप्रतिष्ठित' कहा गया है। सत्य को तर्क द्वारा जाना जाता है, किंतु सत्य पर स्थिर रहने की सामर्थ्य श्रद्धा ही प्रदान करती है। आचार्य महाश्रमण में इसे साक्षात् घटित होते देखा जा सकता है।

सत्य अथवा धर्म का ही दूसरा पर्याय ऋजुता है। स्वभाव में स्थित हुए बिना ऋजु नहीं बना जा सकता। आचार्य महाश्रमण अपनी सरलता के कारण सहज ही जनता के विश्वास-भाजन बने हैं। उनकी सरलता, उनकी आध्यात्मिक ऊंचाई को प्रतिध्वनित करती है। आचार्य महाश्रमण के साथ व्यवस्था पक्ष भी जुड़ा है। व्यवस्था में सरलता काम्य तो है, किंतु एक समस्या यह भी है कि सामान्य जन सरलता का उपयोग अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु भी कर लेते हैं। अतः सरलता के साथ ऐसी सजगता भी आवष्यक है जिससे व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति के लिए उसका दुरुपयोग न हो।

तेरापंथ धर्मसंघ कोई छोटा संगठन नहीं है। उसमें कार्य करने वाले व्यक्तियों की संख्या भी उत्तरोत्तर बढ़ रही है। ऐसे में अपनी पीड़ा अभिव्यक्त करने वालों की लंबी कतार सदा बनी रहती है तो आचार्य महाश्रमण की करुणा का अजस्र स्रोत भी सदा बहता रहता है। ऐसी करुणा तभी संभव है जब वह सहज, स्वाभाविक एवं ऋजुता से उद्बुद्ध हो। महाकवि कालिदास ने तप के प्रसंग में पार्वती के शरीर को स्वर्ण के कमल का बना हुआ कहा था, जो कमल की तरह कोमल होने पर भी स्वर्ण की तरह तेज से देदीप्यमान था। आचार्य महाश्रमण का अंतस करुणा से आर्द्र होने के कारण कमल की तरह कोमल तो है ही, संयम मार्ग पर दृढ़ होने के कारण कंचन की तरह खरा भी है। संयम मार्ग में प्रमाद भाव का आक्रमण संभावित है। निरंतर जागरूकता ही इस आक्रमण से साधक को बचा सकती है। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ से सतत जागरूकता का अवदान आचार्य महाश्रमण में शत-प्रतिशत उतरा है, जो हमें तेरापंथ के भविष्य के प्रति आश्वस्त बनाता है।

व्यक्ति इतने आवरण ओढ़े रहता है कि उसके यथार्थ रूप को देख पाना आसान नहीं होता। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ की क्रांत दृष्टि ने मुनि मुदित के भीतर छिपी हुई उज्ज्वलता को देखा और भावी उत्तराधिकारी के रूप में जब उनका नाम सामने आया तो जनसमूह के चेहरे पर संतोष मिश्रित उल्लास उभरता हुआ नजर आया। चतुर्विध धर्मसंघ का एक स्वर में हृदय से अनुमोदन तभी संभव है, जब वह व्यक्ति अजातशत्रु हो। अजातशत्रु दिखावटी व्यवहार से उत्पन्न नहीं होता, इसके लिए अहिंसा में प्रतिष्ठित आवष्यक है। 'अहिंसाया प्रतिष्ठायां वैर त्यागः' पतंजलि का यह सूत्र आचार्य महाश्रमण में घटित होता है।

आचार्य महाश्रमण अतिशय अनुशासनप्रिय हैं। अहिंसा यात्रा के अनन्तर सिरियारी चातुर्मास का प्रसंग है। आचार्य महाप्रज्ञ ''फेमिली एंड द नेशन'' पुस्तक का लेखन करवा रहे थे। लेखन कार्य में सहयोग की दृष्टि से मुख्य नियोजिका विश्रुतविभा, मुनि महेन्द्रकुमार के साथ मुझे भी अवसर मिला था। लेखन की गति धीमी थी, उसे गति देने की दृष्टि से यह नियम कर दिया गया था। प्रातः 8.30 से 10.00 बजे तक आचार्यप्रवर के कक्ष में कोई भी साधु-साध्वी एवं दर्शनार्थी प्रवेश नहीं करेगा। इस नियम के साथ ही कार्य में गति आ गई। एक दिन आचार्य महाश्रमण दरवाजे पर खड़े होकर आचार्यश्री से अनुमति मांगने लगे कि क्या मैं अंदर आ जाऊं। आचार्यश्री ने स्मित हास्य के साथ कहा देखो! महाश्रमण अनुमति मांग रहा है। फिर कहा महाश्रमण को पूछने की जरूरत है क्या? इस छोटी किंतु बोध देने वाली घटना युवाचार्यश्री की अनुशासनप्रियता को दर्शाती है।

आचार्य महाश्रमण की प्रकृति अत्यन्य वात्सल्यपूर्ण है अहिंसा यात्रा 2004-05 के अनन्तर बाल वैरागी अंकित साथ थे। उम्र मात्र 9-10 वर्ष रही होगी। इस कच्ची उम्र में साथ-साथ यात्रा करना, अपने कार्य स्वयं निपटाना एक बच्चे के लिए अत्यन्त कठिन है। कभी-कभी बच्चे को अभिभावकों की ओर से डांट भी मिल जाया करती थी। युवाचार्यश्री ने मुझे बुलाकर कहा बच्छराजजी यात्रा के दौरान आप थोड़ा अंकित का ध्यान रख लेना। युवाचार्य प्रवर प्रायः रोजाना अत्यन्त वात्सल्य भाव से उस बाल वैरागी से दैनिकचर्या पूछते थे, मातृवत स्नेह दर्शाकर उसे अभिप्रेरित करते रहते थे। अभी हाल ही में उन बाल वैरागी (वर्तमान में मुनि अनुशासन) के छोटे भाई मुनि मृदु से मैंने पूछा आपको कैसे लगते हैं युवाचार्यश्री। आप कुछ पंक्तियां युवाचार्यश्री के प्रति अपनी भावनाओं की लिखें। मैं उन्हें ठीक कर दूंगा। मुनि मृदु एवं मुनि विश्रुत ने कहा युवाचार्यश्री स्वयं रात को उठ-उठ कर मुनि मृदु का बिछौना ठीक करते हैं, उन्हें पछेवड़ी ओढ़ाते हैं। यह है मातृवत् वात्सल्य, यह है एक बीज को वृक्ष में परिणत करने का पुरुषार्थ, यह है अकर्मण्यता और यह है सेवाभाव।

आचार्य महाश्रमण एक सृजनशील साहित्यकार, अखण्ड परिव्राजक, कुशल समाज सुधारक एवं अहिंसा के व्याख्याकार हैं। अहिंसा यात्रा-2 का प्रारंभ कर ग्रामवासियों एवं श्रद्धालुओं को नैतिक मूल्यों के विकास एवं अहिंसक चेतना के जागरण के लिए अभिप्रेरित कर रहे हैं।

आचार्य महाश्रमण सामाजिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक समस्याओं से वे गहरा सरोकार रखते हैं। महत्त्वपूर्ण यह है कि वे केवल समस्याओं की ही बात नहीं करते, उनके समाधान भी प्रस्तुत करते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति अत्यन्त विनयशील एवं उनके अनन्य सहयोगी आचार्य महाश्रमण अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान एवं अहिंसा प्रशिक्षण जैसे मानवोपयोगी आयामों के लिए कार्य कर तनाव, संत्रास, अशांति तथा हिंसा से आक्रांत विश्व को शांति, संयम, सरल एवं सादगीपूर्ण जीवन का संदेश देते हैं। शांत, मृदु एवं विनम्र व्यवहार से संवृत्त; आकांक्षा-स्पृहा से विरक्त; जीवन एवं जगत के अज्ञात रहस्यों को अनवरत खोजने में रत और अपनी अंतःप्रज्ञा से जनकल्याण के लिए समर्पित युवा मनीषी आचार्य महाश्रमण भारतीय संत परम्परा के गौरव पुरुष हैं।

आचार्य महाश्रमण के व्यक्तित्व को शब्दों में बांधना न तो संभव है और न ही उचित। अभी तो सूर्योदय का प्रकाश है, दोपहर के प्रकाश का दर्शन अभी शेष है। भविष्य के गर्भ में छिपे इस देदीप्यमान व्यक्तित्व से तेरापंथ और जैन समाज ही नहीं, संपूर्ण मानवता को बड़ी आशाएं हैं।

अध्यक्ष : अहिंसा एवं शांति विभाग
जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय
लाडनूं (राजस्थान)

नमन वंदन

इकराम राजस्थानी

ऋषभ देव और महावीर का ज्ञान तिरोहित होता,
तुलसी के तप तेज से, जिनका मन आलोकित होता,
चरण–चिह्न पड़ने से, सारा पंथ सुशोभित होता,
जिनकी मधु मुस्कान से सारा जग सम्मोहित होता,
चरण–धूल पड़ने से कुंदन धरती कण बनते हैं।
महाप्रज्ञ के महापुण्य से महाश्रमण बनते हैं।।

तन को रखते मुक्त सदा जो मन की काराओं से,
मानवता को गद्‌गद् करते प्रेम की धाराओं से,
मनुज प्रेम और सेवा के सच्चे सपूत बनते हैं,
अणुव्रत और अहिंसा के जो अग्रदूत बनते हैं,
शांति–स्नेह, सद्‌भाव के इनसे सेतु शरण बनते हैं।
महाप्रज्ञ के महापुण्य से महाश्रमण बनते हैं।।

जिनके मुख पर आगम का संदेश सदा रहता है,
गुरू चरणों की सेवा का परिवेश सदा रहता है,
सीधा–सरल सौम्य ही जिनका सदा वेश रहता है,
जिनके माथे पर यश का अभिलेख सदा रहता है,
मुख से शब्द निकलकर युग के उदाहरण बनते हैं।
महाप्रज्ञ के महापुण्य से महाश्रमण बनते हैं।।

'अक्स', 1-ख, 10 हाबो, शास्त्री नगर, जयपुर (राजस्थान) - 302016

परम-अहिंसक वह होता है जो अपरिग्रही बन जाता है। हिंसा का मूल है परिग्रह। परिग्रह के लिए हिंसा होती है।

अहिंसा है जीवन का आधार

आचार्य महाश्रमण

महावीर अब हमारे बीच नहीं हैं, पर महावीर की वाणी हमारे पास सुरक्षित है। आज कठिनाई यह हो रही है कि महावीर का भक्त उनकी पूजा करना चाहता है, पर उनके विचारों का अनुगमन करना नहीं चाहता। उन विचारों के अनुसार तपना और खपना नहीं चाहता। महावीर के विचारों का यदि अनुगमन किया जाता तो देश और राष्ट्र की स्थिति ऐसी नहीं होती।

भगवान महावीर का दर्शन अहिंसा और समता का ही दर्शन नहीं है, वह क्रांति का भी दर्शन है। उन्होंने अपने समग्र परिवेश को सक्रिय किया। उन्होंने जन-जन को तीर्थंकर बनने का रहस्य समझाया। एक धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करके ही वे कृतकाम नहीं हुए, उन्होंने तत्कालीन मूल्य-मानकों को भी चुनौती दी।

'सूयगडो' सूत्र में एक जगह आया है कि श्रमण भगवान महावीर लोक (दुनिया) में उत्तम हैं। लोकोत्तम कौन हो सकता है? लोकोत्तम वही व्यक्ति हो सकता है, जो अहिंसा का पुजारी हो। श्रमण महावीर परम अहिंसक थे, इसीलिए सूत्रकार ने उन्हें लोकोत्तम कहा।

अब तक चौबीस तीर्थंकर हुए हैं। माना जाता है कि उन तीर्थंकरों के शरीर के दक्षिणांग में एक चिह्न था, जिसे ध्वज भी कहा जाता है। महावीर का ध्वज-सिंह है। यह कैसी विसंगति है। एक तरफ अहिंसा अवतार महावीर और दूसरी तरफ सिंह जो हिंसा का प्रतीक है। यह समानता कैसे? क्या इसमें भी कोई राज है? हम दूसरे प्रकार से सोचेंगे तो पता चलेगा कि यह बेमेल नहीं, बल्कि बहुत उचित मेल है। सिंह-पौरुष और शौर्य का प्रतीक है। भगवान महावीर की अहिंसा शूरवीरों की अहिंसा है, कायरों की नहीं। पलायनवादी और भीरु व्यक्ति कभी अहिंसक नहीं हो सकता। अहिंसा की आराधना के लिए आवश्यक है अभय का अभ्यास। सिंह जंगल का राजा होता है, वन्य प्राणियों पर प्रशासन व नियंत्रण करता है, इसी तरह

महावीर की अहिंसा है अपनी इन्द्रियों और मन पर नियंत्रण करना।

महावीर अगर अभय और पराक्रमी नहीं होते तो वे संगमदेव द्वारा उपस्थापित मारणान्तिक उपसर्गों को सहन नहीं कर सकते। वे चण्डकौशिक के डंक की पीड़ा को आनन्द में नहीं, परिणाम में पाते। जन-साधारण के समक्ष अगर कोई ऐसा उपसर्ग उपस्थित हो जाता है, तो घबरा कर भाग जाता है या कोई शक्तिशाली होता है तो उसे मिटाने की कोशिश करता है। महावीर पलायन और प्रतिबंध दोनों से ऊपर उठे हुए थे। महावीर चण्डकौशिक को देखकर घबराये नहीं। सांप ने डंसा तो भी उनके मन में प्रतिशोध के भाव नहीं जागे। वे जानबूझ कर सलक्ष्य सर्प की बांबी के पास गये थे। उन्हें अपनी सुरक्षा का भय नहीं था। महावीर की अहिंसा थी सर्वत्र मैत्री। उनकी मैत्री संकुचित दायरे में आबद्ध नहीं थी। उनके मन में चण्डकौशिक सर्प के प्रति भी उतने ही मैत्री के भाव थे, जितने कि अन्य प्राणियों के प्रति।

श्रमण महावीर अपने नश्वर शरीर की सार-संभाल छोड़ चुके थे। परम अहिंसक वह होता है जो अपने शरीर की मूर्च्छा त्याग देता है, जिसे मृत्यु का भय व्यथित नहीं करता। भगवान महावीर ने इस संकल्प के साथ अभिनिष्क्रमण किया कि मैं अपने पूरे साधनाकाल में शरीर की सार-संभाल न करता हुआ, शरीर पर मूर्च्छा न करता हुआ विचरण करूंगा।

भगवान महावीर अहिंसा की अत्यंत सूक्ष्मता में गये हैं। आज तो विज्ञान ने भी सिद्ध कर दिया है कि वनस्पति सजीव है, पर महावीर ने आज से अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व ही कह दिया था कि वनस्पति भी सचेतन है, वह भी मनुष्य की भांति सुख-दुःख का अनुभव करती है। वनस्पति इतनी सुकोमल होती है कि उसका स्पर्श करने मात्र से उसे पीड़ा होती है। महावीर ने कहा-पूर्ण अहिंसा व्रतधारी व्यक्ति सजीव वनस्पति का स्पर्श भी नहीं कर सकता।

महावीर की अहिंसा है 'आयतुलेपयासु' परम अहिंसक वह होता है जो संसार के सब जीवों के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है, जो सब जीवों को अपने समान समझता है। इस आत्मतुला को जाननेवाला और इसका आचरण करनेवाला ही महावीर की परिभाषा में अहिंसक है। उनकी अहिंसा की परिभाषा में किसी प्राणी का प्राण-वियोजन करना ही हिंसा नहीं है, किसी के प्रति बुरा चिन्तन करना भी हिंसा है।

परम-अहिंसक वह होता है जो अपरिग्रही बन जाता है। हिंसा का मूल है परिग्रह। परिग्रह के लिए हिंसा होती है। आज विश्व में परिग्रह की समस्या है। एक महिला जिसके पैरों में सोने के कड़े हैं, उसके पैर काट लिये जाते हैं। एक औरत जिसके कानों में स्वर्ण के कुण्डल हैं, उसके कान काट लिये जाते हैं। ऐसी घटनाएं क्यों घटती हैं? परिग्रह के लिए। परिग्रह में आसक्त व्यक्ति निरपराध प्राणी की भी नृशंस हत्या कर डालता है। एक व्यक्ति धन आदि के प्रलोभन में आकर किसी के कहने से किसी की हत्या कर डालता है।

भगवान महावीर ने दुनिया को अपरिग्रह का संदेश दिया, वे स्वयं अकिंचन बने। उन्होंने घर, परिवार राज्य, वैभव सब कुछ छोड़ा, यहां तक कि वे निर्वस्त्र बने। कुछ लोग उन अपरिग्रही महावीर को भी अपने जैसा परिग्रही बना देते हैं। कई जैन मंदिरों में महावीर की प्रतिमा बहुमूल्य आभूषणों से आभूषित मिलती है।

महावीर की अहिंसा है समता। समता के बिना अहिंसा नहीं सधती। समता का अर्थ है हर स्थिति में मानसिक संतुलन बनाए रखना। हिंसा का मूल है राग-द्वेष। समता की भूमिका में ये समाप्त हो जाते हैं। जितना-जितना समता का विकास होता है, उतना-उतना राग-द्वेष का विनाश होता चला जाता है।

महावीर का पूरा साधना-काल समता की साधना में बीता। उनके सामने अनुकूल और प्रतिकूल दोनों प्रकार के परीषह उत्पन्न हुए। उन्होंने अपनी सहिष्णुता के द्वारा उन परीषहों को निरस्त किया। उनकी समता की साधना थी- "लाभ-अलाभ, सुख-दुःख जीवन-मरण, निन्दा-प्रशंसा तथा मान-अपमान के द्वंद्वों में सम रहना।"

महावीर की अहिंसा केवल उपदेशात्मक और शब्दात्मक नहीं है। उन्होंने उस अहिंसा को जीया और फिर अनुभव की वाणी में दुनिया को उपदेश दिया। आज विश्व हिंसा की ज्वाला में झुलस रहा है। अहिंसा के शीतल सलिल से ही संसार को राहत मिल सकती है।

प्रस्तुतिः ललित गर्ग

नवभारत टाइम्स दैनिक 15 अप्रैल 2011 से साभार

बालचंद एवं आशा भलावत अणुव्रत ग्राम भारती विनयपुरम के लिए बस की चाबी सौंपते हुए

श्रीमती गणपति देवी बांठिया

(जन्म : 04-11-1935 (राजलदेसर) ● निधन : 25-04-2011 (फरीदाबाद)

धर्मपत्नी स्व. मांगीलालजी बांठिया - बीदासर
पुत्रवधु स्व. भैंरूदानजी बांठिया

की पुनीत यादगार में

श्रद्धावनतः

मोहनीदेवी (धर्मपत्नी स्व. बच्छराजजी कोठारी) नणद-नणदोई
धनपति देवी (धर्मपत्नी स्व. खूबचंदजी) बड़ी देवरानी
लक्ष्मीदेवी-जीवराज, विजयलक्ष्मी-खींवराज, अन्तरदेवी-स्व.बुद्धमल देवरानी-देवर
भीखमचंद-भंवरीदेवी सुराणा, बाबूलाल-राजोदेवी सुराणा भाई-भवजाई
नोरतनमल-प्रभादेवी सुपुत्र-पुत्रवधु **आदित्य-पूनम** सुपौत्र-सुपौत्रवधु
सुशीला-स्व. उम्मेदसिंह कुचेरिया (लाडनूं), संतोष-चन्द्रप्रकाश दूगड़ (चुरू) पुत्री-दामाद
योगिता-प्रवीण भंसाली (टमकोर) पौत्री-दामाद
राहुल कुचेरिया, कौशल दूगड़, रीतिका कुचेरिया, माधुरी दूगड़ दोहिता-दोहित्री
हर्षित भंसाली पड़-दोहिता

N.K. RUBBER INDUSTRIES

E-38, Sanjay Colony, Sector-23
Faridabad - 121005 Haryana (INDIA)
Tel. : 91-129-2230720(O), 2237011(R)
M. : 9313990717, Fax : 91-129-2232547
E-mail : nkrubber@ndf.vsnl.net.in, banthia@nkrubber.com ● **website :** http:èèwww.nkrubber.com

अमृत महोत्सव गीत

संघ का गौरव गाएं हम
जय जय महाश्रमण महिमामय आज बधाएं हम।
संघपुरुष हो सदा चिरायु घोष सुनाएं हम।
रंगोली भावों की रचदे नई ऋचाएं हम।।

श्री तुलसी श्री महाप्रज्ञ गुरुवर के हम सब आभारी,
महाश्रमण-सा महातपस्वी मिला समय पर अवतारी।
वीतराग-सी प्रभुता-विभुता को विरुदाएं हम।।

पंचाचार-प्रधान बने अब जन-जन की जीवन शैली,
निष्ठामृत से फैल रही है, कीर्ति-कौमुदी अलबेली।
संकल्पों की जोत जलाकर बढ़ते जाएं हम।।

मानव-हित के लिए बहाते रहो सुधारस की धारा,
बांटो बोधि समाधि शान्ति, फैले गण में श्रुत-उजियारा।
अनुकम्पा की जगे चेतना ध्येय बनाएं हम।।

जन्मदिवस की अर्धसदी का उत्सव आया वरदायी,
नए सूर्य की दिगूदिगन्त में पहुंच रही है अरुणाई।
करो नया प्रस्थान नया अभियान चलाएं हम।।
अमृत महोत्सव की घर-घर में अलख जगाएं हम।।

लय : हमारा प्यारा राजस्थान....

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा

उच्चता के सोपान

विजयराज सुराणा

पत्थर निर्जीव है, परंतु कलाकार उसे छैनी व हथौड़े की चोट मार-मारकर एक कलाकृति का रूप देना चाहता है। यदि उस पत्थर में मजबूती या सहन शक्ति नहीं है तो वह चूर-चूर हो जायेगा या टुकड़ों में बंट जायेगा। यदि उसमें भीतरी मजबूती है, तो वह बाहरी चोटों एवं थपेड़ों का मुकाबला करते हुए एक सुन्दर प्रतिमा का आकार ग्रहण कर लेता है। जिसे देख व्यक्ति के जीवन्त नेत्र विस्मित हो जाते हैं, और सहज रूप में ही उसका शीश झुक जाता है।

चंचल बालक मोहन को प्रारंभ में तराशा मुनि सुमेर ने और वह बन गया मुनि मुदित। बाद में आचार्य तुलसी के हाथों दिन-प्रतिदिन तराशा जाता रहा एवं मुनि मुदित उन झंझावतों व थपेड़ों को पूरे मनोयोग और श्रद्धा के साथ सहता-रहता और उन महान आचार्यों का मार्गदर्शन प्राप्त कर बन गया 'महाश्रमण'। उसके बाद तीसरा महान कलाकार आया आचार्य महाप्रज्ञ। अपनी सहनशीलता, निष्ठा व ग्रहणशीलता के अनेक गुणों से, महाप्रज्ञ की नजरों से बन गया आचारनिष्ठ, तपोनिष्ठ युवाचार्य महाश्रमण। यही हैं वे उच्चता के सोपान जिन्हें आचार्य महाश्रमण ने नापा है।

गुरु कौन बनता है, जो स्वयं अपने गुरु के प्रति समर्पित एवं आचारनिष्ठ शिष्य बन, गुरु की हर आज्ञा की अनुपालना में रहता है एवं हर इंगित की आराधना करता है। इस हेतु सिखों के समर्थ गुरु रामदास का एक बहुत ही प्रेरणादायक उदाहरण है। उनके गुरु अमरदास ने अपने सभी शिष्यों को सामने पड़ी हुई गीली मिट्टी से घड़ा बनाने का आदेश दिया। सभी शिष्यों ने पूर्ण सहजता से गुरु आदेश को स्वीकार कर घड़ा बनाने में अपनी-अपनी कलाकारी लगाई। घड़े तैयार होने पर गुरु ने सभी घड़ों में कोई न कोई नुक्स निकालकर पुनः घड़ा बनाने का आदेश दिया। कुछ तो अनमने हो गये परन्तु अधिकांश ने पुनः श्रम किया। इस बार भी गुरु ने हर घड़े में कुछ न कुछ कमी निकालकर पुनः नया बनाने को कहा। इस बार कुछ और शिष्य असफल रहे तथा कुछ ने गुरु आदेश के अनुरूप पुनः घड़ा बनाने का प्रयास किया। इस तरह गुरु अमरदास अनेक बार शिष्यों द्वारा बनाये गये घड़ों में कमी निकालते गये और पुनः घड़ा बनाने के लिए कहते गये।

कहना नहीं होगा कि अन्त में केवल एक शिष्य बचा जो घड़ा बनाकर लाया। वह सभी शिष्यों में से अन्तिम शिष्य था रामदास। उसे भी गुरु ने कई बार कमियां निकालकर सुझाव देकर नया घड़ा बनाने को कहा। रामदास ने भी गुरु की आज्ञा की अवहेलना नहीं की एवं उनके आदेश का पालन करते हुए बार-बार घड़ा बनाते रहे। रामदास समर्पण भाव से उनके आदेश का पालन करते रहे एवं अन्त में गुरु की पसन्द का एक शानदार, कलात्मक घड़ा बना दिया। अमरदासजी का उद्देश्य घड़ा बनाना नहीं था, बल्कि अपना सत्यनिष्ठ उतराधिकारी चुनने की एक प्रक्रिया थी कि कौन शिष्य ऐसा हो सकता है। खोज पूरी हो गयी। सुशिष्य, आज्ञाकारी समर्पित रामदास को अमरदासजी ने अपना उतराधिकारी घोषित कर दिया।

ऐसे ही गुणग्राही सहनशील व सर्वत्मना समर्पित महाश्रमण मुदित सोपान चढ़ते-चढ़ते उनके गुरु आचार्य महाप्रज्ञ ने उन्हें तपोनिष्ठ संबोधन से सम्बोधित कर अपना उ त्तराधिकारी घोषित कर दिया। ऐसे लोगों की आभा अलौकिक होती है। कर्मजा शक्ति भी अद्भुत होती है। अपने अनुकरणीय श्रोताओं को प्रभावित करने वाली प्रवचन शैली होती है। ऐसे सर्व-शक्तियों व गुणों से सम्पन्न हैं अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण।

आचार्य बनने के बाद राजलदेसर में सम्पन्न मर्यादा महोत्सव में रत्नाधिक मुनियों को पूर्ण सम्मान देते हुए, **अपने दीक्षा गुरु को तेरापंथ का गरिमामय पद 'मंत्री मुनि' पद पर आरूढ़ कर अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की। उन सबसे भी बढ़कर उस विशेष अवसर पर सभी विषयों को छूता हुआ अपना सार-गर्भित संदेश दिया। उनके संदेश ने सभी श्रोताओं के दिल को झकझोरा है।** वह एक ऐतिहासिक दस्तावेज बना है। कुछ पके घड़े होते हैं परन्तु अनेकों गुण ग्राही भी होते हैं एवं कर्मणा भी होते हैं। इन्हीं के चलते आचार्य तुलसी ने अपने 60 वर्ष के शासन काल में गड्ढ़े में पड़े गुमनाम तेरापंथ को 'अणुव्रत' के अवदान से बहुश्रुत व उच्चता के शिखर छूने वाला धर्मसंघ बना दिया।

बंधुओ! निम्नता की कोई सीमा हो सकती है परन्तु ऊंचाई की कोई सीमा नहीं है। धर्मगुरुओं ने तेरापंथ श्रावकों को उच्चता की राह पर डाल दिया है, हम उनकी आज्ञा की अनुपालना कर रहे हैं, परन्तु डगर अभी और लम्बी है। आचार्य महाश्रमण यही चाहते हैं कि हमारे पैर पीछे नहीं पड़ें, परन्तु उनके मार्गदर्शन, आदर्शों व शिक्षाओं की पालना करते हुए हमें महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा के निम्न कथन पर अमल करना होगा

संघ हिमालय के शिखरों पर चढ़े
सभी हम साथ हैं
धर्म सारथे! थामो बलगा
सबल तुम्हारे साथ है
जय जय ज्योति चरण
जय-जय महाश्रमण।

महामंत्री : अणुव्रत महासमिति

अकथ की कहानी आचार्य महाश्रमण

मुनि विनयकुमार 'आलोक'

तेरापंथ धर्मसंघ एक मर्यादित, अनुशासित जीवन्त तथा गतिशील धर्मसंघ रहा है। श्रीपाद् आचार्य भिक्षु से लेकर आचार्य महाप्रज्ञ तक आचार्यों की एक महान् तथा यशस्वी परम्परा रही है, जिन्होंने अपने व्यक्तित्व तथा कृतित्व से न केवल धर्मसंघ को ही अपितु जैन जगत् को जो खार ऊंचाइयां प्रदान की। इन सभी आचार्यों ने अपने कुशल नेतृत्व तथा बेजोड़ संगठन-क्षमता से जनसाधारण को चमत्कृत किया है।

आचार्य महाश्रमण तेरापंथ के ग्यारहवें आचार्य हैं, जो 9 मई 2010 को आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के बाद इस पद पर प्रतिष्ठित हुए। इंग्लैण्ड के संविधान की यह प्रसिद्ध कहावत है कि 'राजा मर गया, राजा चिरायु हो।' यह कहावत आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के बाद, महाश्रमण के आचार्य बनने पर सटीक रूप से लागू होती है।

आचार्य महाश्रमण की जीवन यात्रा मोहनलाल से मुनि मुदितकुमार, मुनि मुदितकुमार से महाश्रमण, महाश्रमण से युवाचार्य तथा युवाचार्य से आचार्य बनने तक की यह यात्रा समर्पण, निष्ठा, मर्यादा, अनुशासन, उत्कृष्ट भक्ति तथा साधुता की अपूर्व कहानी है।

आचार्य महाश्रमण को तेरापंथ के दो महान प्रतापी तथा यशस्वी आचार्यों का नेतृत्व, मार्गदर्शन, अन्तरंग सान्निध्य तथा वात्सल्य प्राप्त हुआ है। यह उनका महान् सौभाग्य ही माना जायेगा। इसी कारण से इन दोनों आचार्यों की प्रतिमूर्ति है। आप ऐसे विरले मनीषी हैं, जिन्हें इन दो महान आचार्यों ने तैयार किया है। साथ ही आपको इन दोनों महान आचार्यों की विरासत भी मिलने के साथ-साथ तेरापंथ धर्मसंघ की महान सम्पदा भी प्राप्त हुई है। इस मामले में आप तेरापंथ धर्मसंघ के सबसे भाग्यशाली आचार्य ही माने जाएंगे।

आचार्य महाश्रमण को लगभग 700 साधु-साध्वियों का नेतृत्व करने का सौभाग्य भी मिला है। इसके अतिरिक्त 100 से अधिक समण-समणियां भी आपके नेतृत्व में कार्यरत हैं। इस दोनों के अतिरिक्त मुमुक्षु बहिनें भी आपके नेतृत्व की आराधना में हैं। लाखों श्रावक-श्राविकाएं आपके इंगित की आराधना करने की दिशा में समर्पित हैं। सरदारशहर में आचार्य महाप्रज्ञ के देवलोक गमन के समय जो जन-सैलाब उमड़ा, वह इस बात का स्पष्ट संकेत था कि आचार्य-केन्द्रित, तेरापंथ धर्मसंघ की व्यवस्था भविष्य में भी न केवल सुरक्षित रहेगी, अपितु उत्तरोत्तर विकसित होती रहेगी। यह आचार्य महाश्रमण को नई ऊर्जा तथा शक्ति से कार्य करने तथा समाज को नई दिशा प्रदान की और उन्मुख करेगी। आपके नेतृत्व में तेरापंथ का भविष्य सुखद तथा उज्जवल है।

आचार्य महाश्रमण आने वाले वर्षों में मानव-जाति को अहिंसा, विश्वशांति, निःशस्त्रीकरण, मानव अधिकार, शोषणमुक्त समाज की संरचना तथा प्रज्ञा की ओर प्रवृत्त करने में अधिक शक्ति लगायेंगे, क्योंकि उनके नेतृत्व में धर्मसंघ के पास आधारभूत संरचना प्राप्त है। ऐसे युवा मनीषी, चिरायु हों और युगों-युगों तक मानवता का नेतृत्व करते रहें। यह सभी की मंगलकामना है।

चरण-चंदन-वंदन

प्रभु मुझमें प्रेम भाव भर दो, बरसो तन मन तर कर दो
अंग-अंग पुलकित हो जाये, वो उमंग उदभव भर दो
लहर लहर लहराऊं गाऊं
ऐसी रस गागर भर दीजे
आपकी छवि का सुप्रभात भर दो
प्रभु मुझमें पावन प्रकाश भर दो
स्नेह की सुगन्ध से भर दूं
आपके पूजन की थाली
प्रतिभा पराग बिखरे
ऐसी कृपा करो वनमाली
वंदना में निरत रहूं - वर दो
वाणी में वो शुभ स्वर दो
आनन्द हो विस्तृत छूले तारे
अनुराग राग में डूबे सारे
सांसों की सरगम में मेघ-मल्हार
निष्काम भाव से काम सरे सारे
आंखों में मेरे सुप्रभात भर दो
माटी का दीपक हूं ज्योतित कर दो

● **बंशीलाल 'पारस'**
ओशो-कुंज', ट-14, बापूनगर
भीलवाड़ा (राजस्थान)

व्यक्ति बनेगा स्वस्थ तभी तो स्वस्थ समाज बनेगा

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण

अमृत महोत्सव 2011-2012 पर
शत-शत अभिनन्दन

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा
तेरापंथ युवक परिषद्
तेरापंथ महिला मण्डल

(बल्लारी-कर्नाटक)

सही मंजिल की ओर उठा एक कदम

मुनि सुखलाल

संसद् देश की सर्वोच्च संस्था है। पर ऐसा लगता है कि वह भी दिग्मूढ हो गई है। कोई समझ नहीं पा रहा है कि आखिर क्या किया जाये? सांसदों पर से ही जनता का विश्वास उठ गया है। जनता सोचने लगी है कि ऐसे सांसदों से न्याय की आशा नहीं की जा सकती।

अहिंसा यात्रा चल रही है। यह क्यों चल रही है इसका एक ही उत्तर है कि आज पूरी दुनिया में हिंसा को बढ़ावा मिल रहा है। देश में भी आये दिन हिंसा की दिल दहला देने वाली घटनाएं घट रही हैं। सरकार उनसे निपटने में असमर्थ प्रतीत हो रही है। बल्कि सरकार स्वयं इतने घोटालों से घिर रही है कि उनका अंत ही नहीं दिखाई देता। यों तो घोटाले हर समय होते रहे हैं। राजतंत्र में तो राजा के लिए कोई भी क्रूर कर्म घोटाला नहीं होता था। इसीलिए आज यद्यपि अनेक जगह राजतंत्र मिट गया है/मिट रहा है। पर लोकतंत्र में भी घोटालों की कोई कमी नहीं दिखाई देती। अहिंसा यात्रा में अनेक क्षेत्रों में लोग आचार्यश्री से निवेदन करते हैं आचार्यश्री हम तो अखबारों में रोज-रोज नित-नये बेहुदे घोटालों की खबरें पढ़ते-पढ़ते दुःखी हो गए हैं। हमारा देश किधर जा रहा है इसका पता नहीं चलता। आप हमारे बड़े राजनेताओं को समझा कर हमें इस संकट से मुक्ति दिलवाएं। देश आज नैतिकता के किस पायदान पर खड़ा है यह सबके सामने है। सभी ईमानदार लोग लज्जित हैं। बेईमानों को भी लज्जित होना चाहिए। लगता है सभी बड़े लोग एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हो गए हैं। कोई उपाय नहीं दिखाई दे रहा है।

संभवतः लोगों की इस आकुलता का ही एक उत्तर अहिंसा यात्रा है। उस समय जब भारत आजाद हुआ था, कुछ छोटे घोटाले तो शुरू हो गए थे। उसी समय आचार्य तुलसी ने अणुव्रत अभियान शुरू किया। उससे प्रभावित होकर अनेक लोगों ने अनैतिक आचरण नहीं करने की प्रतिज्ञा की थी। विदेशी अखबारों ने भी विस्मित होकर लिखा था क्या भारत में सचमुच सतयुग आ रहा है? राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद तथा प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने भी अणुव्रत के प्रयत्नों की प्रशंसा की थी। सचमुच वह जनजागरण का एक विनम्र प्रयास था।

पिछले कुछ वर्षों में आचार्य तुलसी के उत्तराधिकारी आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा यात्रा के रूप में अध्यात्म चेतना के जागरण एवं नैतिक मूल्यों के संवर्धन के रूप में एक सार्थक यात्रा शुरू की थी। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्रों के रूप में उसके कुछ पदचिह्न आज भी पहचाने जा सकते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ के नक्शे-कदम पर आगे बढ़ते हुए उनके उत्तराधिकारी आचार्य महाश्रमण भी उनका अनुगमन कर रहे हैं। यद्यपि इस वर्ष देश में जितने घोटाले हुए हैं, हो रहे हैं, यह आश्चर्य का विषय है। एक घोटाले की चर्चा शांत नहीं हो पाती उससे पहले ही कोई नया घोटाला सामने आ जाता है। घोटाला भी छोटा-मोटा नहीं अपितु हजारों-करोड़ों रुपयों में पैर पसारे दिखाई देता है। इस वर्ष 2-जी स्पेक्ट्रम का घोटाला सामने आया तो संसद् का पूरा सत्र ही उसकी बलिवेदी पर चढ़ गया। उस जद्दो-जहद में एक दिन भी कोई सार्थक कार्य नहीं हुआ। आखिर केन्द्रीय सरकार के मंत्री को त्याग-पत्र देना पड़ा। फिर भी संसद् नहीं चली। इसी बीच महाराष्ट्र में आदर्श सोसायटी घोटाला सामने आया और वहां भी मुख्यमंत्री को त्याग-पत्र देना पड़ा। कॉमनवैल्थ खेलों को लेकर भी बड़े-बड़े ओहदेधारियों को त्याग-पत्र देना पड़ा। अभी विकीलिक्स कम्पनी द्वारा उद्घाटित रहस्य चर्चा में है। ये तो कुछ गड़े हुए मुर्दों का नृत्य है। न जाने कितने मुर्दे जगह-जगह कब्रिस्तानों में गडे पड़े हैं। ऐसा नहीं है कि पिछली सरकारों ने भी घोटाले न किए हों, कुछ-कुछ वे भी सामने आ रहे हैं। पर वर्तमान के कुछ प्रेत तो सामने दिखाई दे रहे हैं। संसद् देश की सर्वोच्च संस्था है। पर ऐसा लगता है कि वह भी दिग्मूढ हो गई है। कोई समझ नहीं पा रहा है कि आखिर क्या किया जाये? सांसदों पर से ही जनता का विश्वास उठ गया है। जनता सोचने लगी है कि ऐसे सांसदों से न्याय की आशा नहीं की जा सकती।

आचार्य महाश्रमण का चिंतन है कि जन जागरणा ही इसका एक समाधान है। इसीलिए अहिंसा यात्रा के चार सूत्र सामने आये हैं

1. साम्प्रदायिक सौमनस्य
2. भ्रूणहत्या निरोध
3. नशामुक्ति
4. ईमानदारी का प्रयास।

यह एक सार्वभौम कार्यक्रम है। अहिंसा यात्रा उसी दिशा में उठा हुआ एक ईमानदार कदम है। यह तो जनता के सहयोग पर निर्भर है कि उसका कितना फायदा उठाया जा सकता है। यह सही दिशा में उठा हुआ हर कदम मंजिल की दूरी को कम करता है, यह निश्चय है।

महाश्रमण का 'द्युति' व 'मुक्ति'-दर्शन

सन्तोष बैद

यह जगत एक वलय है। सुख-दुःख का चक्र घूमता रहता है। व्यक्ति समस्या संकुल है। वह समस्याओं और दुःखों से मुक्त होना चाहता है क्योंकि सुख और मुक्ति सबको इष्ट है। दुःख और बंधन कष्टकारक होता है। इसलिए व्यक्ति इन समस्याओं से मुक्त होना चाहता है। एक आध्यात्मिक व्यक्ति तो जीवन-मरण के चक्र से भी मुक्ति चाहता है अर्थात् 'मोक्ष' चाहता है।

● समस्या के प्रकार

यहां समस्या से मुक्त होना दो प्रकार का है 1. जीवन-मरण के चक्रव्यूह से मुक्ति। 2. लौकिक/अलौकिक समस्याओं से मुक्ति।

अब प्रश्न है मुक्ति की प्राप्ति कैसे हो? मुक्ति-पथ का दिशाबोध देने हेतु, दुःख एवं समस्या विलयन हेतु इस धरा पर समय-समय पर महापुरुष अवतरित होते रहे हैं। भारत की इसी पुनीत धरा पर 'आत्म-साधना पथ पर आरूढ़, तीर्थंकर के प्रतिनिधि, तीर्थंकरों के प्रति प्रणत, विनम्र, आगमविद्, विविध भाषा एवं दर्शनविद्, प्रज्ञा, शक्ति व महाश्रम के धारक, चारित्र-साधना के देदीप्यमान दिवाकर, 'जैन श्वेतांबर तेरापंथ' के उन्नायक 11वें आचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं 'महासाधक आचार्य महाश्रमण'। समस्या-समाधानदाता के रूप में आपका आंतरिक व बाह्य दोनों ही व्यक्तित्व श्रेयष्कर है। अद्वितीय है। आपकी 'द्युति' यानि 'आभामण्डल' उतना ही तेजस्वी है जो व्यक्ति को दुःख व समस्याओं से मुक्त करता है। अब समाधान हेतु 'महाश्रमण-द्युति' एवं 'मुक्ति-दर्शन' का अवलोकन करें

● समस्या द्वन्द्व की

यह जगत द्वन्द्वात्मक है। जहां द्वन्द्व है वहां समस्या है। सबसे बड़ा द्वन्द्व है चेतन-अचेतन का संयोग। चेतन और अचेतन का यह द्वन्द्व ही जीवन है। शुद्ध अचेतन कोई समस्या पैदा नहीं करता। 'शुद्ध चेतन' अर्थात् 'मुक्त-आत्मा' सर्वथा समस्या रहित होती है। दुःखों से मुक्त होती है। शुद्ध चेतन सिद्ध, बुद्ध, निरावरण, असंवेदन, आत्म-रमण, केवल-ज्ञान एवं केवल-दर्शन आदि गुणों से संयुत हो जाती है, किन्तु यह सुलभ अवसर अनन्त-अनन्त जीवों में भव्य-प्राणियों में भी किसी-किसी को सुलब्ध होता है। ऐसा क्यों?

● समाधान - 'महाश्रमण-दर्शन' का

आचार्य महाश्रमण कहते हैं

''रागद्वेषादिकल्लोलैरलोलं यन्मनोजलम्।
स पश्यतयात्मनस्तत्त्वं तत्तत्त्वं नेतरो जनः।।''

प्रश्न हुआ 'आत्मा' तत्त्व का साक्षात्कार कौन कर सकता है? उत्तर की भाषा में कहा गया जिस व्यक्ति का मनरूपी जल राग-द्वेष आदि की तरंगों से तरंगित नहीं होता, जो राग-द्वेषमुक्त बन जाता है, वही व्यक्ति आत्मा का साक्षात्कार कर सकता है। यहां प्रश्न फिर बनता है राग-द्वेष मुक्त हो कैसे? महासाधक का 'मुक्ति-दर्शन' हमें दिशाबोध देता है कि ''शुद्ध उपयोग की साधना राग-द्वेष-मुक्ति की साधना है। जिस उपक्रम से राग-द्वेष शांत हो सके, उसकी आराधना करनी चाहिए। अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों को समता के साथ रहने का अभ्यास करना चाहिए।.... जो घटना घटित हो उसे केवल देखना सीखें, उसके साथ जुड़ें नहीं।.... यह ज्ञाता-द्रष्टा भाव ही शुद्धोपयोग का मार्ग प्रशस्त करता है। आत्म-दर्शन से पहले आदमी इतना-सा प्रयास करे कि पहले अपनी कमियों को देखना शुरू करे।..... समीक्षण या आत्म-निरीक्षण चलता रहे और दूसरी ओर वीतरागमुक्त रहने का सलक्ष्य अभ्यास चलता रहे तो राग-द्वेष से काफी अंशों में मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। आगे चलकर तो पूर्ण वीतराग अवस्था को उपलब्ध हुआ जा सकता है। आत्म वैभव को प्राप्त करना है तो मनरूपी दर्पण साफ, स्थिर और अनावृत होना चाहिए।'

● समस्या कषाय की

कषाय अर्थात् क्रोध, मान, माया और लोभ। यह एक बहुत बड़ी समस्या है। कषाय आत्म-विकास को अवरुद्ध करता है तो व्यवहार को भी अशुद्ध एवं अशोभनीय बनाता है। जैन-दर्शन के अनुसार कषाय को आश्रव का एक प्रकार कहा गया है। आश्रव को 'कर्म-आगमन का द्वार' कहा गया है। परिभाषा की दृष्टि से 'राग-द्वेष के उत्ताप को कषाय कहा जाता है। आत्मा को मलिन बनाने वाला यह तत्त्व अनेक क्षेत्रों जैसे पारिवारिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में समस्या पैदा करता है। आए दिन अखबारों में घटित घटनाएं मारपीट, हिंसा, डकैती, अपहरण इत्यादि का मूल कारण क्रोध, मान, माया और लोभ का वलय ही घूमता नजर आता है।

● कषाय मुक्ति की साधना क्यों?

आचार्य महाश्रमण कहते हैं 'यह कषाय कम या अधिक हर संसारी प्राणी में होता है जब तक कि वह मुक्त नहीं हो जाता। एक साधक का परम लक्ष्य भी कषाय मुक्ति की साधना है ताकि वह अपने निर्दिष्ट लक्ष्य 'मोक्ष' की प्राप्ति कर सके।' 'कषाय की प्रबलता चेतना को विकृत बनाती है। विकार पैदा करने वाला एकमात्र मोहनीय कर्म है। क्रोध, मान, माया, लोभ, भय, घृणा आदि मोहनीय कर्म की शाखाएं-प्रशाखाएं हैं। चार कषाय क्रोध, मान, माया और लोभ पुनर्भव/संसार की जड़ों को सींचते हैं।... सकषायी व्यक्ति इन चारों गतियों में ही भ्रमण करता रहता है। पांचवीं गति (सिद्ध गति) तक पहुंचने के लिए जरूरी है कि आदमी अकषाय की साधना करे।' आगम के आलोक में आचार्य महाश्रमण कहते हैं

आश्रवो भवहेतुः स्यात्, संवरो मोक्ष-कारणम्।

इतीयमार्हती दृष्टिः शेषमस्याः प्रपञ्चनम्।।

अर्थात् आश्रव संसार-भ्रमण का कारण है और संवर मोक्ष का कारण। यही संक्षेप में आर्हत अथवा जैन-दर्शन है। बाकी सारा इसी का विस्तार है। व्यवहार में भी आगम दृष्टि से देखें तो हम पाते हैं कि 'क्रोध प्रीति का नाश करता है। अभिमान विनय का नाश करता है। माया मित्रता का विनाश करती है और लोभ सबका विनाश करता है।' भव-भ्रमण एवं व्यवहार के विनाश से बचने का उपाय है कषायमुक्ति। इस विनाश से बचने के लिए दिशा-बोध एवं प्रयोग प्राप्त होता है 'महाश्रमण-दर्शन' में, आइए इसे हृदयंगम करें

● कषाय-मुक्ति का उपाय व प्रयोग

अंतर्मुखी बनने के लिए कषाय-मुक्ति की साधना आवश्यक है। उसके भी दो प्रयोग हैं क्रोध, मान, माया और लोभ का उदय हो ही नहीं ऐसा अभ्यास करना। ऐसी स्थितियों से बचना जिससे क्रोध आदि के भाव उत्पन्न होते हों। दूसरा प्रयोग है क्रोध आदि का उदय होने पर उन्हें विफल अथवा असफल कर देना, जैसे किसी स्थिति में क्रोध का भाव उत्पन्न हो गया, तत्काल संकल्प-शक्ति, दीर्घश्वास, मौन, विधायक चिंतन आदि के द्वारा क्रोध की ज्वाला को शांत कर देना। क्रोध के फल न लग सकें। कठोर शब्द बोलना, पीटना, मारना आदि क्रोध के फल हैं, यह स्थिति पैदा होने से पूर्व ही साधक क्रोध के भाव को क्षमा में परिणत कर दे। अर्थात् हम कषाय आश्रव को योग आश्रव में परिणत न होने दें, ऐसा प्रयास किया जा सकता है। क्रोध मन में आ गया, वाणी में आ गया अथवा चेहरे पर आ गया वह क्रोध 'योग आश्रव' बन गया। साधक यह प्रयास करे कि कषाय आश्रव को योग आश्रव की सीमा में प्रवेश न करने दे।

● अनुप्रेक्षा प्रयोग

आचार्य महाश्रमण कहते हैं

''उवसमेण हणे कोहं उपशम के द्वारा क्रोध का हनन करो।

माणं मछवया जिणे मृदुता के द्वारा अभिमान को जीतो।

मायं चज्जवभावेण ऋजुता के द्वारा माया को जीतो।

लोहं संतोसओ जिणे सन्तोष के द्वारा लोभ को जीतो।''

कषाय-मुक्ति का उपाय 'महाश्रमण-दर्शन' में निर्दिष्ट है, वह इस प्रकार है

साधक 'क्रोध-कषाय' को जीतने का अभ्यास करे। उस पर विजय प्राप्त करने के कई उपाय हो सकते हैं, जैसे

1. उपशम भाव की अनुप्रेक्षा
2. दीर्घश्वास का अभ्यास
3. संकल्प शक्ति का प्रयोग
4. ज्योति केन्द्र पर सफेद रंग का ध्यान
5. शांत स्वभाव वाले महापुरुषों का स्मरण।

प्रतिपक्ष भावना दुर्वृत्तियों को जीतने का उपाय है।.... इसी प्रकार अभिमान, माया और लोभ की वृत्ति का शोधन करने के लिए क्रमशः मृदुता, ऋजुता और सन्तोष (अनासक्ति) की अनुप्रेक्षा एवं अभ्यास अपेक्षित है।

● अमृत-महोत्सव की प्रासंगिकता : कषाय मुक्ति के संदर्भ में

महापुरुषों से सम्बन्धित पर्व/महोत्सव अनेक दृष्टियों से उपादेय बन जाते हैं। 'अमृत महोत्सव' आचार्य महाश्रमण के जीवन के 50वें वर्ष के प्रवेश के उपलक्ष में मनाया जाने वाला महोत्सव है। इससे आचार्य महाश्रमण के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व के विशद रूप से, उनके अनेक आयामों से जनता को अवगत होने का सुअवसर प्राप्त होगा तो आपके प्रेरक साधनामय जीवन से, महासाधक रूप से जीवन-मूल्यों की प्रेरणा एवं सुपाथेय भी प्राप्त हो सकेगा। अमृत महोत्सव की उपादेयता पर सूक्ष्म दृष्टि से विचार करें तो उद्देश्य के रूप में छिपा है 'साधना का आलोक' महासाधक आचार्य महाश्रमण के शब्दों में इसे अभिव्यक्त करें

''जन्म लेना सृष्टि की सामान्य घटना है। इसमें कोई विशेषता वाली बात नहीं लगती। हर प्राणी जन्म लेता है।

करीब 49 वर्ष पूर्व मैं जन्मा। पूज्य गुरुदेव तुलसी और पूज्य आचार्य महाप्रज्ञ का गरिमामय साया मुझे प्राप्त हुआ। अब मैं 50वें वर्ष में प्रवेश करने जा रहा हूं। इस प्रसंग को लेकर अमृत महोत्सव वर्ष मनाया जा रहा है। इसमें मुख्य कार्यक्रम 'ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य' इस पंचाचार के विकास है। साधना में मेरी रुचि है। मैं चाहता हूं 'मेरे पूरे धर्मसंघ में साधना का विकास हो।'

साधना के दो आयाम हैं

1. कषाय (क्रोध, मान, माया और लोभ) का मंदीकरण।
2. निर्धारित आचार के प्रति जागरूकता।

मैं चाहता हूं 'मेरा धर्मसंघ अध्यात्म के विकास की दिशा में आगे बढ़े।''

उपर्युक्त आलेख से अमृत महोत्सव की उपादेयता : कषाय मुक्ति के संदर्भ में स्पष्ट होती है। ''कषायमुक्तिः किल मुक्तिरेव'' अर्थात् कषायमुक्ति ही मुक्ति है।

● समस्या 'अनिष्ट' की

संसार का हर प्राणी विकास चाहता है। आगे से आगे बढ़ना चाहता है। एक

सच्चा साधक साधना के क्षेत्र में अपने 'इष्ट लक्ष्य मोक्ष' तक पहुंचना चाहता है। इसी प्रकार अन्य क्षेत्रों की बात है, पर अनिष्ट तत्व या अनिष्ट भाव विकास में बाधक भी बन जाते हैं। कहा गया है ''यादृशी चित्तवृत्तिः स्यात्, तादृक कर्मफलम्-नृणाम।'' जैसी चित्त वृत्ति होती है, वैसा ही कर्म का फल मिलता है।

● अनिष्ट तत्त्व क्या है?

इस जगत में प्रकृति अथवा भावना के आधार पर व्यक्तियों को दो भागों में बांटा जा सकता है 1. विधायक भाव प्रमोद, मैत्री, करुणा, अहिंसा आदि। इन गुणों से युक्त व्यक्ति विधायक प्रकृति वाले होते हैं। 2. निषेधात्मक भाव ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, लोभ, अहंकार आदि। ऐसे भाव वाले व्यक्ति क्षुद्र प्रकृति के होते हैं। ऐसे लोग अपनी आत्मा को तो मलिन बनाते ही हैं किन्तु दूसरों का अहित करना उनका लक्ष्य रहता है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु निषेधात्मक चिंतन के व्यक्ति 'येन-केन-प्रकारेण' यहां तक कि अनिष्ट मंत्र-तंत्र का सहारा लेकर भी दूसरों का अहित करने की कोशिश करते हैं। ऐसी घटनाएं घटित होती देखी-सुनी जाती हैं।

● घटित यथार्थ घटना

पिछले कुछ वर्षों से विघ्न-बाधाओं से कोई व्यक्ति आक्रान्त था। अजीबोगरीब घटनाएं घटित होती रहती, यथा स्वाध्याय-अध्ययन में बाधा, ध्यान में बाधा, सामायिक-काल में बाधा, तप में बाधा। यहां तक कि उपयोग में लाए जाने वाले उपकरण-वस्त्र आदि भी उपयोग लायक न रहना। यह बाधा, सामान्य अवरोध नहीं लग रहा था क्योंकि कारण समझ से बाहर थे। ऐसा लगता था कि ज्ञान-धर्म-ध्यान-साधना आदि में बाधा डालना एवं जीवन में समस्या पैदा करना किसी का लक्ष्य बन चुका था।

● महाश्रमण का तेजस्वी आभामंडल

पंचाचार साधना एवं ध्यान के महासाधक आचार्यश्री एक ऐसे 'द्युति सम्पन्न', शक्तिपुंज व्यक्तित्व हैं, जिनके शक्तिशाली पुनीत आभामंडल से समस्याओं का स्वतः निदान होते देखा गया है। समस्या से परेशान उस व्यक्ति का जब कभी भी अपने धर्म गुरु आचार्य महाश्रमण के परिपार्श्व में दर्शन-साधना-सेवा हेतु आना होता तो एक आश्चर्यजनक परिवर्तन सामने आता। कोई भी अनिष्टकारक घटना घटती ही नहीं।

यह आचार्य महाश्रमण के सशक्त पवित्र आभामंडल का परिणाम नहीं तो और क्या है? धर्म की साधना, अध्यात्म के तेज के सामने अधर्म की शक्तियां प्रतिहत हो जाती हैं यह स्पष्ट है। आचार्य महाश्रमण की करुणा, आभामंडल का तेज एवं मार्गदर्शन व्यक्ति को समस्यामुक्त बनाता है। अशांति से शांति का पथ प्रशस्त कराता है। यह अनुभूतजन्य है।

● क्या है आभामंडल?

हमारे अन्तःकरण में सूक्ष्म शरीर के भीतर छः लेश्या, भाव का मंडल और उसका संवादि अंग है आभामंडल। यह हमारे शरीर के चारों ओर गोलाकार रूप में होता है। जितने भाव अच्छे होते हैं। कषाय कम होते हैं उतना ही यह आभामंडल शक्तिशाली बनता है। तेजस, पद्म, शुक्ल लेश्या का आभामंडल सशक्त होता है जो एक प्रकार का कवच है। यह बाह्य बाधाओं एवं संक्रमणों से हमें बचाता है। ऐसा लगता है महासाधकों का आभामंडल अपने आस-पास के क्षेत्र/परिपार्श्व पर भी प्रभाव डालता है, शक्तिशाली बनाता है।

आचार्य महाश्रमण कहते हैं 'जो व्यक्ति दूसरों का अहित करता है, अनिष्ट करता है, वह परापकार का जीवन जीता है। वे व्यक्ति महान् होते हैं जो किसी का अहित तो करते ही नहीं अपितु दूसरों की भलाई के लिए स्वयं कष्ट झेलने को तत्पर रहते हैं.....पर-कल्याण का कार्य ही आत्म-कल्याण का हेतु बनता है।

● ज्वलंत समस्या

इस युग की ज्वलंत समस्या है 'परदर्शन' एवं अशान्ति। व्यक्ति स्वयं को कम दूसरों को अधिक देखता है। उदाहरणार्थ हम अखबार देखते हैं तो भी हम दूसरों को ही अधिक देखते हैं, पढ़ते हैं। परिवार, समाज, राष्ट्र के बारे में जानकारी अच्छी है किन्तु अधिक 'पर-दर्शन' भी अशान्ति पैदा कर देता है। हम टी.वी. आदि मनोरंजन के माध्यम से दूसरों को ही देखते हैं। यह 'पर-दर्शन' गलत संस्कार का हेतु भी बनता है। दूसरे क्या करते हैं? क्या नहीं करते? इस पर व्यक्ति की नजर अधिक रहती है। यदि परिस्थितियां उसके मनोनुकूल नहीं है तो यह 'पर-दर्शन' पीड़ाकारक व अशान्ति देने वाला बन जाता है।

● महाश्रमण : मुक्ति-दर्शन

आर्हत वाङ्मय का एक सुंदर सूक्त है संपिक्खई अप्पगमप्पएणं स्वयं, स्वयं को देखें। प्रेक्षाध्यान का यह एक आधारभूत सूत्र है कि अपने-आपको देखें। आदमी की आंखें बाहर देखती हैं। वह भीतर में भी देखने का अभ्यास करे। भीतर की ओर देखने का मतलब है स्वयं को देखना, आत्म-साक्षात्कार करने की दिशा में आगे बढ़ना। जो व्यक्ति स्वयं का विश्लेषण करता है, स्वयं की अच्छाइयों और कमियों को देखता है और फिर अच्छाइयों को बढ़ाने और कमियों को दूर करने का प्रयास करता है, वह व्यक्ति आध्यात्मिक दृष्टि से भी आगे बढ़ सकता है और व्यावहारिक दृष्टि से भी आगे बढ़ प्रगति कर सकता है।

ध्यान की एक विधि है प्रेक्षाध्यान। ध्यान के द्वारा आदमी चंचलता से स्थिरता की ओर आगे बढ़ता है। बाहर से भीतर की ओर बढ़ता है। प्रवृत्ति से निवृत्ति में आता है। भोग से योग की ओर अग्रसर होता है। अंधकार से प्रकाश की ओर प्रस्थान करता है। अनेक लोग ध्यान के अभ्यास के द्वारा अपनी समस्याओं से मुक्ति पाते हैं और अध्यात्म की दिशा में प्रवर्द्धमान बनते हैं। हम देखते हैं कि मानसिक अशान्ति/व्यग्रता व्यक्ति को अस्वस्थ बनाती है तो सही दिशाबोध का एक वाक्य भी व्यक्ति को मंजिल तक पहुंचा देता है।

द्वारा : छगनमल बैद
जैन मंदिर एवं यूको बैंक के पास
गंगाशहर-334401 (बीकानेर-राज.)

श्रमण मुदित से आचार्य महाश्रमण

डॉ. हीरालाल छाजेड़

13 मई 1962 को राजस्थान के सरदारशहर कस्बे में जन्मे एवं 5 मई 1974 को आचार्य तुलसी के आदेश से मुनि सुमेरमल (लाडनू) के हाथों दीक्षित हुए। नामकरण हुआ 'श्रमण मुदित' और यहीं से यात्रा प्रारंभ होती है। अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी की उन्होंने अनन्य सेवा की तथा उनके दिल में अपना स्थान बनाकर उनके कृपा पात्र बने। विनम्रता की प्रतिमूर्ति मुनि मुदित आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ जैसे सक्षम महापुरुषों द्वारा तराशे गये। 16 फरवरी 1986, उदयपुर में महाप्रज्ञ के अंतरंग सहयोगी बने। 13 मई 1986, ब्यावर में वे अग्रगण्य बने। 9 सितंबर 1989 को 'महाश्रमण' पद पर आरूढ़ हुए। 1997 में महाश्रमण 'युवाचार्य' के रूप में मनोनीत हुए। मई 2010 को आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के पश्चात आपने तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्य पद को सुशोभित किया। यह है मुनि मुदित से आचार्य महाश्रमण पद की संक्षिप्त यात्रा। यह भी अनोखी बात है कि मुनि सुमेरमल लाडनूं के हाथों दीक्षा व मुनि सुमेरमल सुदर्शन ने पछेवड़ी ओढ़ाई। गौरवर्ण, आकर्षक मुखमंडल, सहज मुस्कान, अल्पभाषी, आंतरिक पवित्रता, विनम्रता, पापभीरूता, दृढ़ता, शालीनता व सहजता जैसे गुणों से ओत-प्रोत बाह्य एवं आंतरिक व्यक्तित्व के धनी आचार्य महाश्रमण को न केवल तेरापंथ धर्मसंघ अपितु पूरा धार्मिक समाज आशाभरी नजरों से निहार रहा है।

महानता के तीन लक्षण हैं चिंतन में उदारता, व्यवहार में निश्छलता और सफलता में नम्रता। इन्हीं गुणों ने श्रमण से महाश्रमण पद पर प्रतिष्ठित करवा दिया। आचार्य महाप्रज्ञ ने महाश्रमण मुनि मुदित को युवाचार्य पद पर मनोनीत करते हुए कहा था आज मैं सचमुच निश्चिंत हो गया हूं। आचार्य महाप्रज्ञ ने वि.सं. 2053 की दीपावली को लिखे उत्तराधिकार पत्र में यह उल्लेख किया था 'मुनि मुदितकुमार की अध्यात्मनिष्ठा और आचारनिष्ठा ने मेरे मन को प्रभावित किया है। उनकी विनम्रता भी आकृष्ट करती रही है।

भारतीय परंपरा में गुरू का स्थान सर्वोपरि है, उसमें तेरापंथ धर्मसंघ में गुरु का विशेष महत्व है। आचार्य महाश्रमण का यह सौभाग्य रहा कि उन्हें आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ जैसे सक्षम गुरुओं का पथ-दर्शन प्राप्त हुआ। उनकी छत्र-छाया में रहकर अनावृत सत्य को जानने के लिए सर्वस्व न्योछावर कर गुरु-चरणों में तत्पर रहे हैं। उनकी गुरु भक्ति अद्वितीय मानी जाती है। गुरु के मुंह से निकला हर शब्द, गुरु का हर इंगित उनके लिए ब्रह्म वाक्य रहा है।

आचार्य महाश्रमण शासक के साथ-साथ साधक का भाव भी बहुत गहरा है। आपका व्यवहार बहुत कोमल और शालीन है जैसा कि पहले भी उल्लेख किया है। आपके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति को मानसिक शांति व चित्त समाधि का अनुभव होता है।

आचार्य महाश्रमण के विनय व्यवहार और कार्य-कलापों से आचार्य महाप्रज्ञ इतने संतुष्ट और आनंदित थे इसका प्रमाण समय-समय पर आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रकट किये गये ये उद्‌गार थे ''युवाचार्य के रूप में महाश्रमण का मनोनयन न सिर्फ तेरापंथ धर्मसंघ पर उपकार है, बल्कि स्वयं मेरे पर भी उपकार है। इन्हें पाकर सारा संघ गौरवान्वित है। इन्होंने संपूर्ण कार्य का दायित्व संभाल लिया जिससे मैं काफी हल्कापन महसूस करता हूं।'' आचार्य महाश्रमण के लिए मंगल कामना करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा ये निरोग रहते हुए धर्मसंघ के उन्नयन एवं विकास की नई ऊंचाइयों को छुयें।'

आचार्य महाश्रमण मौलिक चिंतन के धनी हैं। वे कभी व्यक्तित्व विकास पर तो कभी शांत सहवास के सूत्रों की चर्चा करते हैं तो कभी जीने की कला का प्रशिक्षण देते हैं, कभी आने वाले गृहस्थों को तनाव की समस्या का समाधान देते नजर आते हैं। ''दो महान आचार्य कलाकारों की कृति का नाम है महाश्रमण।'' जैसा मैंने अनुभव किया मेरी नजर में सबसे प्रमुख बात आचार्य महारमण की आचारनिष्ठा और संयमनिष्ठाा प्रेरणादायक है। आप प्रारंभ से ही अप्रमत योगी हैं। आपकी चारित्रिक आभा अत्यन्त निर्मल है। विश्व विख्यात संत आचार्य तुलसी की अनुपम देन महाश्रमण में आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के प्रतिबिम्ब आचार्य महाश्रमण में दिखाई देता है। आचार्य महाश्रमण की नेतृत्व क्षमता अद्‌भुत हैं एवं आप कठोर श्रम करने के आदी हैं। इसी कारण आचार्य महाप्रज्ञ ने आपको 'महातपस्वी' कहा। आप अनेक विशेषताओं के धनी हैं। इसलिए आपको एक प्रतिभावान अद्वितीय और अजात शत्रु भी कहा जा सकता है।

तेरापंथ के यशस्वी आचार्य परम्परा के महान तपस्वी, अणुव्रत अनुशास्ता युवा मनीषी, अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ आपके दीर्घ आयुष्य और साधनारत जीवन की कामना करते थे। आपके 50वें जन्मदिवस एवं पदाभिषेक दिवस के प्रथम वर्ष समारोह पर मंगल कामना है कि आप अहिंसा यात्रा के माध्यम से संपूर्ण राष्ट्र में शांति एवं समरसता का संदेश देते हुए अणुव्रत आंदोलन को गति देकर नई ऊंचाईयों को छूएं।

जयश्री टी. कंपनी, चौधरी बाजार
नन्दीशाही, कटक-1 (उड़ीसा)

अभिवंदन
अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण का

बढ़ें संयम पथ पर

लोकमान्य गोल्छा
अध्यक्ष
गोल्छा ऑर्गेनाइजेशन
एवं
समस्त गोल्छा परिवार

गोल्छा हाउस, काठमांडो (नेपाल)
फोन नं. : 4250001/4249939 (D)
फैक्स : 00977-1-4249723

मेवाड़ अंचल में अहिंसा यात्रा

माया का साया न रहे : आचार्य महाश्रमण

शिशोदा, १५ अप्रैल। आचार्य महाश्रमण ने जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा 'प्रत्येक व्यक्ति माया से बचे। माया से मित्रता विनष्ट हो जाती है। माया और मित्र दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते। इसके लिए संस्कार अच्छे होने चाहिए। संस्कार और संस्कृति इन दोनों की रक्षा बहुत जरूरी है। इनकी सुरक्षा के लिए अपेक्षित है व्यक्ति, परिवार सहित समाज का वातावरण अच्छा रहे।'

पारिवारिक सौहार्द के संदर्भ में आचार्य महाश्रमण ने कहा 'परिवार का वातावरण स्वस्थ होना चाहिए। पारिवारिक जीवन को शान्तिमय बनाना है तो छोटी-छोटी बातों को लेकर तनावग्रस्त होने से बचें। तनाव हो जाए तो उसे मिटाने का प्रयास करें।' साध्वी चारित्रयशा ने सुमधुर गीत का संगान किया।

समारोह में बड़ी संख्या में उपस्थित स्थानीय और आसपास के क्षेत्रों से समागत किसानों की ओर अभिमुख होते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा 'किसान अन्नदाता है। वह अपने श्रम से अन्न का उत्पादन करता है, उसके श्रम से ही अनाज सब तक पहुंचता है। किसानों का जीवन नशामुक्त रहे। उसमें किसी भी प्रकार का व्यसन न हो।'

मध्याह्न में राजसमन्द जिले के कलक्टर डॉ. प्रीतम बी. यशवंत एवं एस.पी. डॉ. नितिनदीप बलगन ने आचार्य महाश्रमण के दर्शन कर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

आचार्य महाश्रमण के विशेष निर्देश से मध्याह्न में विभिन्न प्रशिक्षण कक्षाएं चलीं। मुनि उदितकुमार ने युवकों को और मुनि विजयकुमार एवं मुनि प्रशमकुमार ने बच्चों को प्रशिक्षण दिया। कन्याओं और महिलाओं को महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा की सन्निधि में प्रशिक्षण दिया गया। रात्रि में प्रवचन के पश्चात स्थानीय परिवारों को पूज्यप्रवर की निकट उपासना का अवसर मिला। आचार्य महाश्रमण ने सबको जप, सामायिक आदि की प्रेरणा दी और प्रायः परिवारों का व्यक्तिशः परिचय लिया।

१६ अप्रैल। प्रातः सूर्योदय के कुछ क्षणों के बाद आचार्य महाश्रमण भक्तों के घर पगल्या करने हेतु पधारे। छोटी-छोटी गलियों में पहाड़ी उतार-चढ़ावों को पार करते और घरों की ऊंची-नीची सीढ़ियां चढ़ते-उतरते सत्तर से अधिक घरों में पधारे। श्रद्धालु श्रावकों की प्रसन्नता का कोई पार नहीं था।

२६१०वीं महावीर जयंती

जैन परंपरा के अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म कल्याणक महोत्सव। तीन वर्ष पूर्व १८ अप्रैल २००८ को शिशोदा में आयोज्य महावीर जयंती समारोह आचार्य महाप्रज्ञ के अस्वास्थ्य की स्थिति में स्थगित हो गया था। तीन वर्ष बाद उनके उत्तराधिकारी आचार्य महाश्रमण की अनुकंपा से शिशोदावासियों को वह अवसर उपलब्ध हुआ।

कार्यक्रम का प्रारंभ आचार्य महाश्रमण के मंगल मंत्रोच्चार से हुआ। स्थानीय महिला मंडल और तेयुप के सदस्यों ने मंगल गीत का संगान किया। प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष रमेशकुमार धाकड़, स्वागताध्यक्ष अरविन्द धाकड़ ने आगंतुकों का स्वागत किया। प्रकाश धाकड़ ने मुक्तकों के माध्यम से अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति दी।

चित्तौड़गढ़ की सांसद एवं राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष डॉ. गिरिजा व्यास ने कहा 'देश में महापुरुषों की प्रासंगिकता विद्यमान है। 'प्रकृति से छेड़छाड़ मत करो' भगवान महावीर का सिद्धान्त बहुत महत्त्वपूर्ण है, सार्वकालिक है। आज कुछ लोगों ने प्रकृति को मुट्ठी में लेने की कोशिश की है, जिसका परिणाम यह है कि प्रकृति भी विद्रोह पर उतर आई है। आचार्य बनने के बाद मैं पहली बार मेवाड़ में आचार्य महाश्रमण के दर्शन कर रही हूं। आपकी अहिंसा यात्रा बहुत उपयोगी है तथा आपकी वाणी में युगीन समस्याओं का समाधान है।'

केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री डॉ. सी.पी. जोशी ने कहा 'भगवान महावीर के सिद्धान्त वैसे तो त्रैकालिक हैं, किन्तु आज के समय में वे सर्वाधिक उपयोगी हैं। उन्हें आत्मसात् करने की जरूरत है, तभी जीवन सार्थक बनेगा। आचार्य के मेवाड़ पदार्पण से यहां नैतिकता और धर्म-अध्यात्म की सरिता प्रवाहित हो रही है। अपेक्षा है हम आपकी शिक्षाओं के अनुरूप स्वयं के जीवन को ढालें।' उदयपुर के सांसद रघुवीर मीणा ने अपने वक्तव्य में संत समाज को पथदर्शक बताते हुए महावीर के उपदेशों को अपने जीवन में उतारने का आह्वान किया।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा 'भगवान महावीर करुणा और संवेदनशीलता के अजस्र स्रोत थे। उनके अहिंसा-दर्शन में सब तरह की समस्याओं का समाधान है। अपेक्षा है हम उनके दर्शन को समझें और उसे अपने जीवन में चरितार्थ करने का प्रयास करें।'

मंत्री मुनि सुमेरमल स्वामी ने कहा 'भगवान महावीर कालजयी व्यक्तित्व थे। वे अपने आपमें एक संस्कृति थे, दर्शन थे। उन्होंने जो दर्शन दिया, वह अनुपम है। इसी कारण वे जन-जन के आराध्य बने।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने अभिभाषण में कहा 'दुनिया में एकमात्र भारतवर्ष ही ऐसा देश है, जहां सर्वाधिक महापुरुषों ने जन्म लिया और वे संपूर्ण विश्व में विख्यात हुए। वे महापुरुष हमारी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं के रक्षाकवच बने हुए हैं। ऐसे विशिष्ट महापुरुषों में भगवान महावीर का जीवन और दर्शन समस्त मानव जाति के लिए बहुत बड़ा आश्वासन है, प्रेरणा है, भरोसा है। महापथ पर चलने वाला वीर और महापथ का निर्माण करने वाला महावीर होता है। भगवान महावीर ने दार्शनिक पृष्ठभूमि पर अहिंसा और अपरिग्रह का सिद्धान्त दिया तो व्यावहारिक पृष्ठभूमि पर समता, सहिष्णुता और मैत्री की बात कही।' महाश्रमणीजी ने भगवान महावीर को प्रबंधन का महागुरु बताते हुए उनके कई सूत्रों की विशद व्याख्या की।

आचार्य महाश्रमण ने कहा 'भारत भूमि पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया। उन्होंने तप तपा, साधना की और सत्य का साक्षात्कार किया। उन्होंने जो जाना और जो प्राप्त किया, उससे जनता का पथदर्शन किया। उन महापुरुषों में उत्तम श्रेणी के महापुरुष हैं भगवान महावीर। उन्होंने अहिंसा, समता और संयम का उदाहरण ही प्रस्तुत नहीं किया, उसे अपने जीवन में जीवंत कर

अणुव्रत स्वस्थ और संतुलित जीवन की आचार-संहिता

दिखाया। उनमें अनुकंपा की विशिष्ट चेतना थी।'

विकास के चार आयामों की चर्चा करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा अणुव्रत स्वस्थ और संतुलित जीवन की आचार-संहिता है। आज बहुत आवश्यक है कि श्रावक के बारह व्रतों का व्यापक प्रचार-प्रसार हो। इससे व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का आध्यात्मिक विकास तो होगा ही, सामाजिक और सांस्कृतिक उन्नयन भी होगा।'

महावीर जयंती को उपयुक्त अवसर बताते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा 'भगवान महावीर के सर्वजन हिताय उपदेशों को एक मंच से प्रस्तुति देने से उसका व्यापक प्रभाव पड़ेगा। आयारो सूत्र में वर्णित भगवान महावीर के जीवन और दर्शन से प्रेरणा मिलती है। उनका जीवन साधना से ओतप्रोत था। अपेक्षा है उनके दर्शन को जीवन में उतारें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया।

१७ अप्रैल। आचार्य महाश्रमण ने शिशोदा में उपस्थित जनसमूह को संबोध प्रदान करते हुए कहा 'लोभ एक ऐसा तत्त्व है, जो सब कुछ नष्ट कर देता है। चित्त नैर्मल्य की न्यूनता का एक कारण है लोभ। मोहग्रस्त व्यक्ति असंतोष को प्राप्त होता है, इसलिए लोभ की वृत्ति को छोड़कर संतोष की चेतना को जागृत करने का प्रयास करना चाहिए। लोभ के समाप्त होने पर अनेक दुष्प्रवृत्तियां अपने आप समाप्त हो जाती हैं।'

शिशोदा के चार दिवसीय प्रवास के संदर्भ में आचार्य महाश्रमण ने कहा 'शिशोदा में महावीर जयंती का मुख्य कार्यक्रम संपन्न हो गया। यहां जनता की इतनी बड़ी उपस्थिति देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। इस प्रवास में अद्भुत उत्साह और अद्भुत उपस्थिति रही। प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक रमेश धाकड़ आचार्य महाप्रज्ञ के समय से ही समाजसेवा और संघसेवा के कार्य से जुड़े हुए हैं। ये खूब अच्छा काम करते रहें, शासन की सेवा करते रहें। शिशोदा की जनता में अध्यात्म चेतना और आत्मचेतना विकसित होती रहे। सबमें धार्मिक उत्साह बना रहे।' तेरापंथ मानव हितकारी संघ राणावास द्वारा संचालित बी.एड्. कॉलेज की ८५ छात्राएं पूज्य चरणों में उपस्थित हुईं। ट्रस्ट के अध्यक्ष तेजराज पुनमिया ने संस्थान की गतिविधियों की अवगति दी। आचार्य महाश्रमण ने छात्राओं को प्रेरणा-पाथेय प्रदान किया।

कोशीवाड़ा में भावभीना स्वागत

१८ अप्रैल। चार दिवसीय शिशोदा प्रवास के बाद आचार्य महाश्रमण ने कोशीवाड़ा के लिए विहार किया। लगभग दस किमी. की यात्रा में असली मेवाड़ के दर्शन हुए। मार्ग में सर्पाकार घूमती नदी, उसमें कल-कल बहता जल, एनीकट घाटियां और उसमें बिछी हरीतिमा मन को आकृष्ट व प्रफुल्लित कर रही थी। दूसरी ओर तीखे उतार-चढ़ाव और विकट मोड़ हर क्षण यात्रियों को सजग रहने का संदेश दे रहे थे। मध्यवर्ती ब्राह्मणबहुल दड़वल गांव के सैकड़ों लोगों ने पूज्यवर का स्वागत किया। आचार्य महाश्रमण ने गांववासियों को संक्षिप्त संबोध प्रदान किया। लगभग साढ़े दस किमी. का विहार कर पूज्यप्रवर ने विशाल जुलूस के साथ कोशीवाड़ा में प्रवेश किया। यहां पर प्रवास तेरापंथ भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में खमनोर पंचायत प्रधान पुरुषोत्तम माली, जिला प्रमुख किशनलाल गमेती, मेवाड़ कान्फ्रेंस के अध्यक्ष डॉ. बसंतीलाल बाबेल, प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष किशनलाल डागलिया ने पूज्यवर के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए। भ्रातृद्वय नचिकेता मुनि अनुशासनकुमार एवं मृदुकुमार ने अपनी मातृभूमि की ओर से भावपूर्ण शब्दों में आचार्य महाश्रमण का स्वागत किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा 'कोशीवाड़ा के दो छोटे-छोटे बालकों का एक साथ दीक्षित होना गांव वालों के लिए गर्व की बात है। आचार्य महाश्रमण के आगमन को लेकर गांव के लोगों में बहुत उत्साह है।'

आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल प्रवचन में क्रोध निवारण हेतु आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा निर्दिष्ट सूत्रों एवं प्रयोगों की चर्चा की। आचार्य महाश्रमण ने कहा 'कोशीवाड़ा छोटा-सा गांव है। यहां के अनेक परिवार मुम्बई में प्रवासित हैं। डागलिया और राठौड़ यहां के मुख्य परिवार हैं। यहां के अनेक कार्यकर्ता अपनी सेवाएं दे रहे हैं।'

जन प्रतिनिधि सम्मेलन

आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में कोशीवाड़ा में अपूर्व और ऐतिहासिक जन प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें राजसमन्द जिला परिषद के २५ सदस्यों में से पन्द्रह सदस्यों ने भाग लिया। जिले की सात पंचायत समितियों खमनोर, आमेट, कुंभलगढ़, भीम, राजसमन्द, रेलमगरा और देवगढ़ के २०४ सदस्यों में से १९१ सदस्यों ने भाग लिया। इस प्रकार का जिला स्तरीय सम्मेलन संभवतः पहली बार आयोजित हुआ।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा 'अहिंसा यात्रा के दौरान आचार्य महाश्रमण समसामयिक समस्याओं पर ध्यान दे रहे हैं। यहां उपस्थित जनप्रतिनिधि अहिंसा यात्रा को ऐतिहासिक बनाने के लिए अपने-अपने क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दें। सबको शिक्षा, चिकित्सा और न्याय सुलभ हो तो सामाजिक स्वस्थता की दिशा में प्रस्थान हो सकता है।'

आचार्य महाश्रमण ने जनप्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा 'जनप्रतिनिधि होना दायित्व ओढ़ना है। भारत लोकतांत्रिक प्रणाली वाला देश है। जनता के द्वारा जनता पर जनता के लिए शासन किया जाता है। चुनाव के समय उम्मीद्वार याचक और जनता दाता होती है। लेकिन चुनाव जीतने के बाद भूमिका बदल जाती है। उम्मीदवार दाता और जनता याचक हो जाती है। लोकतंत्र में चुनाव गंगा-स्नान माना जाता है। इसलिए चुनाव निष्पक्ष और शुचितापूर्ण होने चाहिए। मतदाता भय व प्रलोभन से मुक्त रहे। प्रतिनिधियों का काम है जनता की सेवा। उनमें नैतिकता और कर्तव्यनिष्ठा की भावना होनी चाहिए।'

राजसमन्द जिले को नशामुक्त बनाने का आह्वान करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा जिले के सभी प्रतिनिधि इसे नशामुक्त जिला बनाने का प्रयास करें तो इस जिले की विशिष्ट पहचान बन सकती है।'

द्वितीय सत्र में जिलाप्रमुख किशनलाल गमेती, उपप्रमुख मदनलाल गुर्जर, खमनोर पंचायत प्रधान पुरुषोत्तम माली, आमेट पंचायत के उपप्रधान सूरतसिंह, भीम पंचायत प्रधान श्रीमती दीपिकादेवी, राजसमंद पंचायत के उपप्रधान सुरेश जोशी, देवगढ़ के हमीरसिंह रावत, रेलमगरा की प्रधान श्रीमती रेखा अहीर, नाथद्वारा नगरपालिका की चेयरपर्सन रेखा शर्मा, देवकीनंदन गुर्जर तथा कई सरपंचों ने इस तरह के सम्मेलन को बहुत उपयोगी और सार्थक बताया। मुनि उदितकुमार एवं मुनि जयंतकुमार ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

आचार्य महाश्रमण ने अपने उद्बोधन में कहा 'कार्यकर्ताओं

www.terapanthinfo.com

अपराध-वृत्ति को बढ़ाने का कारण लोभ है

के श्रम का परिणाम है कि यहां इतने प्रतिनिधि उपस्थित हैं। राजसमन्द जिले को स्वस्थ और नशामुक्त जिला बनाने के लिए सलक्ष्य प्रयास किया जाए।' पूज्यप्रवर की प्रेरणा से अनेक प्रधानों, सरपंचों और पंचायत समिति के सदस्यों ने नशामुक्ति का फार्म भरकर संकल्प स्वीकार किया। सम्मेलन का संचालन प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष किशन डागलिया ने किया। पंचायत प्रधान व अन्य विशिष्ट लोगों को साहित्य व स्मृतिचिह्न से सम्मानित किया गया।

समीचा शिखर के दर्शन

२० अप्रैल। पूज्यवर ने प्रातः समीचा के लिए प्रस्थान किया। मध्यवर्ती समीचा घाटी का दृश्य मनोरम था। प्राकृतिक सुषमायुक्त इन दुर्गम घाटियों और पहाड़ों के बीच बनी गुफाओं ने महाराणा प्रताप को मुगलों से गुरिल्ला युद्ध करने में भरपूर सहयोग दिया था। पर्वतों के बीच बनी पक्की सड़क का दूसरा छोर तो दिखाई दे रहा था, किन्तु मध्य का भाग ऊंचे-ऊंचे पर्वतों की गोद में छिपा हुआ था। पहाड़ों पर पत्तों से आच्छादित झोंपड़ीनुमा मकानों में रहने वाले भील, गमेती जैसे आदिवासी लोग कुतूहल से अहिंसा यात्रा को निहार रहे थे। आचार्य महाश्रमण उस दुर्गम मार्ग से यात्रायित थे, जहां १४० किमी. प्रतिघंटा की रफ्तार से भागने वाले वाहन भी चढ़ाई में रेंगते से प्रतीत हो रहे थे और जहां पैदल चलनेवाले राहगीर उतार में ब्रेक की अपेक्षा महसूस कर रहे थे। पहाड़ों के बीच कल-कल बहनेवाला निर्झर और सीताफल, आम, बोर, महुआ, नीम, आइता, गोबल, कुणज, बांस, खन्नी, आक, रतनजोत, सिमलू, खाखरा, सरेस, पीपल, बड़ला, इमली आदि के वृक्ष राहगीरों के लिए नयनाभिराम दृश्य उपस्थित कर रहे थे। इन वृक्षों पर मीठी तान भर रहीं कोयलें यात्रियों में नव उत्साह संप्रेषित कर रही थीं। सड़क के दोनों ओर की गहरी खाइयां जागरूक रहने का स्पष्ट निर्देश दे रही थीं। घाटी की सबसे लंबी चढ़ाई चढ़ने के बाद पूज्यवर ने सड़क पर विराजकर कुछ क्षण विश्राम किया। पहले से प्रतीक्षारत साध्वीप्रमुखा आदि साध्वियों ने पूज्यवर की अभिवंदना की।

आचार्य महाश्रमण ने कहा 'समीचा हमारे लिए नया क्षेत्र है। इसका नाम तो हम सुनते रहे हैं, किन्तु आना प्रथम बार हुआ है। ऐसी जानकारी मिली कि पूर्ववर्ती दस आचार्यों में केवल नवम अधिशास्ता गुरुदेव तुलसी ही यहां पधारे थे और उसके अड़तालीस वर्ष बाद हमारा यहां आना हुआ है। मुझे सात्विक संतोष है कि जहां आचार्यों का कम आना होता है, वहां मैं अपनी प्रथम यात्रा में ही आ गया। घाटी को पार कर हम यहां आए हैं। हम चाहते हैं लंबे समय तक ऐसे घाटों को पैरों से चलकर बेधड़क पार कर सकें।' आचार्य महाश्रमण ने इस अवसर पर जीवन में आने वाले आरोहों-अवरोहों में मनोबल और शान्तभाव रखते हुए संतुलित रहने की प्रेरणा प्रदान की।

इस अवसर पर राजस्थान के पूर्व सिंचाई मंत्री सुरेन्द्र राठौड़ ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। सभा के अध्यक्ष सुखलाल सिंयाल ने अणुव्रत के संकल्पपत्र पूज्य चरणों में उपहृत किए। अनेक ग्रामीणों ने नशामुक्त बनने का संकल्प लिया।

आचार्य महाश्रमण मेवाड़ में

२१ अप्रैल २०११। आचार्य महाश्रमण समीचा के शान्ति भवन से प्रस्थान कर उच्च राजकीय माध्यमिक विद्यालय में पधारे। यहां स्थानीय तेरापंथ सभा द्वारा निर्मित हॉल के लोकार्पण के बाद पूज्यवर ने उसर की ओर प्रस्थान किया। दोनों ओर पहाड़ियों से घिरा हुआ मार्ग रमणीय और मनोरम था। महुआ बीनते हुए आदिवासी भील आचार्य महाश्रमण के दर्शन कर धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। आचार्य महाश्रमण ने कई स्थानों पर कुछ क्षण रुक कर प्राकृतिक छटा पर दृष्टिपात किया। मुम्बई महानगर के प्रवासी लोग इस इलाके को 'टेन्सन फ्री जोन' कहते हैं, क्योंकि यहां नेटवर्क के अभाव में मोबाइल सेवाएं ठप्प रहती हैं। शान्तिपूर्ण और सौन्दर्ययुक्त मार्ग से लगभग ३.५ किमी. का विहार कर आचार्य महाश्रमण उसर के जैन भवन में पधारे। गांव के सरपंच रमेश नबेड़िया आदि ने आचार्य महाश्रमण का भावभीना स्वागत किया।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण के प्रवचन से पूर्व कुम्भलगढ़ विधायक गणेशसिंह परमार, पूर्व सिंचाई मंत्री सुरेन्द्रसिंह राठौड़ सहित अनेक लोगों ने आचार्य महाश्रमण के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए।

आचार्य महाश्रमण ने कहा--'लोभ के कारण व्यक्ति अनेक अपराध कर लेता है। परिवार में कलह और बिखराव का कारण भी ज्यादातर लोभ ही होता है। हम अपनी साधना के द्वारा लोभ को पुष्ट करने वाले स्वार्थ को छोड़कर शुद्ध परार्थ और परमार्थ की दिशा में आगे बढ़ें।'

उसर आगमन के संदर्भ में आचार्य महाश्रमण ने कहा--'आज हम उसर आए हैं। विहार छोटा था, किन्तु मार्ग मनोरम था। यह इलका प्राकृतिक सौन्दर्य से समृद्ध है। इस मार्ग के प्राकृतिक दृश्यों को देखकर छद्मस्थ के मन में रागोत्पत्ति संभव है। गांव का नाम उसर है, किन्तु यह धरती उर्वरा लग रही है। केवल धरती ही नहीं, हमारा मस्तिष्क भी उर्वर बने।'

आचार्य महाश्रमण के प्रवचन के पश्चात पेसिफिक यूनिवर्सिटी, उदयपुर के सेक्रेट्री राहुल अग्रवाल, वाइस चांसलर बी.एल.शर्मा आदि पूज्यवर के उपपात में पहुंचे और विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया। मध्याह्न में राजस्थान सरकार के खेल एवं युवा राज्यमंत्री मांगीलाल गरासिया, कुंभलगढ़ तहसील प्रधान सूरजसिंह आदि भी श्रीचरणों में उपस्थित हुए।

पावन हुआ वन

२२ अप्रैल। उर्वर गांव के अनेक घरों का स्पर्श करते हुए आचार्य महाश्रमण ने लखमावतों का गुड़ा गांव की ओर विहार किया। प्रकृति के बीच १०.१ किमी. का विहार कर आचार्य महाश्रमण लखमावतों का गुड़ा स्थित राजकीय माध्यमिक विद्यालय में पधारे। गांव से लगभग १ किमी. दूर वन में अवस्थित यह विद्यालय आचार्य महाश्रमण के पदार्पण से पावन बन गया। पूज्यवर की इस मेवाड़ यात्रा में संभवतः यह पहला गांव है, जहां जैन समाज का कोई घर नहीं है।

आचार्य महाश्रमण ने कहा--'दार्शनिक जगत में आस्तिक और नास्तिक--ये दो विचारधाराएं प्रसिद्ध हैं। आत्मा, पुनर्जन्म, कर्म, मोक्ष आदि का अस्तित्व स्वीकार करने वाले आस्तिक कहलाते हैं। इसके विपरीत नास्तिक आत्मा आदि को नहीं मानते। किन्तु वर्तमान में शान्ति से जीने के लिए नास्तिक भी पापाचरण से बचें।' आचार्य महाश्रमण ने प्रवचन के मध्य स्वस्थ जीवनशैली के सूत्रों की भी चर्चा की। रात्रिकालीन कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों को धार्मिक प्रेरणा प्रदान की गई। अनेक ग्रामीणों ने पूज्यवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

www.terapanthinfo.com

कुंभलगढ़ की ऐतिहासिक यात्रा

कुंचोली, २३ अप्रैल। आचार्य महाश्रमण प्रातः लगभग पांच किमी. का विहार कर कुंचोली पधारे। सरपंच मनोहरसिंह ने गांववासियों के साथ आचार्यश्री की अगवानी की। शंकरलाल, भंवरलाल, वरदीचन्द केसूलाल पामेचा परिवार द्वारा पूज्यवर से मंगलपाठ श्रवण कर नवनिर्मित तेरापंथ भवन का लोकार्पण किया गया। आचार्य महाश्रमण का प्रवास इसी भवन में हुआ। पूज्यवर के पावन पदार्पण से पूरे गांव में हर्ष और उल्लास का वातावरण रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण के प्रवचन से पूर्व मुख्य नियोजिका और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा के प्रेरक वक्तव्य हुए। राजस्थान के खेल एवं युवा राज्यमंत्री मांगीलाल गरासिया, विधायक गणेशसिंह परमार आदि ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए।

आचार्य महाश्रमण ने कहा 'परिवारों में स्वर्ग और नरक दोनों तरह का वातावरण देखने को मिल सकता है। जिस परिवार में संप (सामंजस्य) संपत्ति और संस्कार हैं, वह परिवार स्वर्गतुल्य होता है। जहां इन तीनों का अभाव है, वहां नरक का वातावरण देखा जा सकता है। बड़ों के प्रति विनय और सम्मान का भाव पारिवारिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में भी स्वस्थ वातावरण निर्मित कर सकता है।'

मधुमक्खियों का आक्रमण

२४ अप्रैल। प्रातः आचार्य महाश्रमण ने कुंचोली से दोवास की ओर विहार किया। लगभग चार किमी. ही चले थे कि यात्रा व्यवस्थापक पुखराज दक और हंसमुखभाई मेहता ने सूचना दी आगे मधुमक्खियों का भयंकर उपद्रव हो रहा है। अनेक साधु-साध्वियां उसकी चपेट में आ गए हैं। कार्यकर्ता तत्काल उस ओर दौड़े और पाया कि देवड़ों की भागल के पास अनेक साध्वियां पहाड़ की तलहटी में मधुमक्खियों से जूझ रही हैं। इस दौरान अनेक मधुमक्खियां काफिले के आसपास मंडराती रहीं, लेकिन आचार्य महाश्रमण के आभामंडल में सभी सुरक्षित रहे।

संपूर्ण घटना के दौरान अहिंसा यात्रा के कार्यकर्ता, विभिन्न संघीय संस्थाओं के कर्मचारी, उदयपुर, रींछेड़, कुंचोली, केलवाड़ा, मजेरा आदि क्षेत्रों के कार्यकर्ता सक्रिय रहे। उपप्रधान वरधीचन्द, नाथूसिंह आदि ग्रामीणों तथा आसपास के भीलों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ। सूचना मिलने पर केलवा प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी के साथ राजनगर से चिकित्सा दल पहुंचा। उन्होंने तथा केलवाड़ा, ओड़ा के डॉक्टरों ने घायल साधु-साध्वियों तथा कार्यकर्ताओं का उपचार किया। अनेक प्रशासनिक अधिकारी भी पहुंचे और व्यवस्थाओं में अपना सहयोग प्रदान किया।

केलवाड़ा में भावभीना स्वागत

२५ अप्रैल। प्रातः केलवाड़ा की ओर विहार करते हुए आचार्य महाश्रमण ने मार्गवर्ती काकरवा के राजकीय माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान की, उन्हें नशामुक्ति का संकल्प करवाया। काकरवा के ही शंकर लुहार के घर में ग्रामीणों के बीच पूज्यवर का संक्षिप्त उद्‌बोधन हुआ। अनेक ग्रामीण नशामुक्ति हेतु संकल्पित हुए। दस किमी. का विहार कर आचार्य महाश्रमण केलवाड़ा पधारे। यहां मूर्तिपूजक संप्रदाय के अनेक घर हैं। आचार्य महाश्रमण के पदार्पण से उल्लास का वातावरण था। आचार्य महाश्रमण का प्रवास सुरेश कावड़िया के मकान में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में आचार्य महाश्रमण ने अपने प्रवचन में इन्द्रिय संयम की चर्चा की और उपस्थित जनता को कल की घटना से अवगत कराया।

कुंभलगढ़ की ऐतिहासिक यात्रा

२६ अप्रैल। केलवाड़ा से विहार करते ही रमणीय पर्वतीय मार्ग शुरू हो गया। थोड़ी-सी चढ़ाई के बाद पहाड़ियों के मध्य पक्की पाल का एक तालाब मिला जो भारत की भौगोलिक स्थिति को खूबसूरती के साथ दर्शा रहा था। उस तालाब को देखकर भारत का नक्शा जैसे आंखों के सामने आ गया। घने जंगल में एक ओर उत्तुंग पर्वत, दूसरी ओर सैकड़ों फुट विशाल गहरी खाईं के मध्य सर्पाकार सड़क पर गतिमान अहिंसा यात्रा का काफिला आचार्यचरण के साथ ओधी होटल पहुंचा। होटल मैनेजर उम्मेदसिंह के नेतृत्व में होटल प्रबंधन ने आचार्य महाश्रमण का स्वागत किया। आज दिन भर प्रवास यहीं रहा। सायं ४.३० बजे आचार्य महाश्रमण ने कुंभलगढ़ दुर्ग की ओर प्रस्थान किया। न केवल राजस्थान, बल्कि संपूर्ण भारत के विशाल और ऐतिहासिक किलों में इसकी गणना होती है। महाराणा कुंभा द्वारा निर्मित और बाद के महाराणाओं द्वारा संरक्षित और संवर्द्धित इस विशाल दुर्ग की छाती पर समय के अनगिनत घाव अंकित हैं। यह दुर्ग अब भारतीय पुरातत्व विभाग की अमूल्य धरोहर है। अरेट पोल, हल्ला पोल, हनुमान पोल, राम पोल, विजय पोल, भैरव पोल, चौगान पोल, पागड़ा पोल होते हुए आचार्य महाश्रमण ससंघ दुर्ग के शिखर पर स्थित बादल महल पहुंचे। शिखर से दूर-दूर तक दृष्टिगोचर हो रहा था प्रकृति का मनोहारी दृश्य। मारवाड़ के घाणेराव आदि कई क्षेत्र यहां से साफ देखे जा सकते हैं। गाइड कुबेरसिंह सोलंकी ने महाराणाओं की वंशावली सहित इस किले से जुड़ी इतिहास की विश्रुत घटनाओं की कड़ी से कड़ी जोड़ते हुए बताया 'महाराणा कुंभा ने सन १४४३-१४५८ के मध्य प्रमुख वास्तुविद मदन की देखरेख में इस अजेय दुर्ग का निर्माण करवाया। ईसा पूर्व दूसरी सदी में जैन राजा सम्प्रति के युग में विनिर्मित ३६० मंदिरों में ३०० जैन मंदिर थे। इनमें से कुछ मंदिरों के भग्नावशेष आज भी विद्यमान हैं। जहां तक दुर्ग की प्राचीरों की बात है, चीन की 'ग्रेट वाल' के बाद यह दूसरी दीवार है जो ३६ किमी. लंबी गहरी खाइयों से घिरी हुई है। ६१० वर्ग किलोमीटर में फैले समुद्र तल से ३५०० फुट ऊंचे सात सौ बुर्जों वाले इस दुर्ग की सात मीटर ऊंची व छह मीटर चौड़ी दीवार पर एक साथ आठ घोड़े खड़े हो सकते हैं। महाराणाओं के समय में दो घोड़े गश्त के रूप में समानान्तर दौड़ते रहते थे। बप्पा रावल द्वारा संस्थापित मेवाड़ राज्य के सिसोदिया वंश में अनेक प्रतापी शासक हुए, किन्तु महाराणा सांगा और महाराणा प्रताप की वीरगाथा कालजयी है। समय की गर्दिश आज तक उसे धुंधला नहीं सकी।

रात्रि में लाइट एंड साउंड सिस्टम से कुंभलगढ़ के इतिहास को सिलसिलेवार रोचक प्रस्तुति दी गई। हजारों लोग इस कार्यक्रम के साक्षी बने। आचार्य महाश्रमण का प्रवास दुर्ग के शिव मंदिर में हुआ। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा ने भी साध्वी परिवार के साथ दुर्ग के अन्य मंदिर में रात्रि प्रवास किया। मंदिर के परकोटे में रात्रि विश्राम के दौरान सांय-सांय करती तेज हवा की आवाज घने जंगल का स्पष्ट अहसास करा रही थी। बताया गया कि इस जंगल में पेंथर, जरख, रींछ आदि अनेक हिंस्र पशुओं का निवास है।

www.terapanthinfo.com

अणुव्रत जनप्रतिनिधि सम्मेलन

आमेट, 20 अप्रैल। अणुव्रत समिति आमेट के तत्वावधान में सभा भवन में आयोजित जनप्रतिनिधि सम्मेलन को संबोधित करते हुए मुनि सुरेशकुमार 'हरनावां' ने कहा आज देश के हर कोने में भ्रष्टाचार की चीख सुनाई दे रही है। आवश्यकता आकांक्षा में बदलकर समूचे वातावरण में अनैतिकता का जहर घोल रही है। ऐसे में सेवा के प्रतीक रूप जनप्रतिनिधि अगर रिश्वत नहीं लेने का संकल्प करें तो भ्रष्टाचार की जड़ें कमजोर हो सकती हैं। मुनिश्री भ्रष्टाचार मुक्त समाज निर्माण और अणुव्रत विषय पर बोल रहे थे। उन्होंने आगे कहा जनप्रतिनिधि अपने अधिकारों का नाजायज फायदा उठाने की कोशिश से बचें। देश की आजादी के साथ ही आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन कर गरीब की झोंपड़ी से राष्ट्रपति भवन तक अणुव्रत की गूंज की। आचार्य महाश्रमण उसी क्रम को आगे बढ़ा रहे हैं।

मुनि दर्शनकुमार ने कहा अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम अगर सामाजिक व्यवस्थाओं में लागू हो जायें तो नासूर बन रहा भ्रष्टाचार का अस्तित्व तहस-नहस हो सकता है। मुनि संबोधकुमार ने कहा आज समूचा मुल्क भ्रष्टाचार की गिरफ्त में है। ऐसे में जन प्रतिनिधि सम्मेलन सकारात्मक मुहिम है।

महिला मंडल द्वारा "बदले युग की धारा" अणुव्रत गीत से शुरू हुए कार्यक्रम में नगर पालिकाध्यक्ष कैलाश मेवाड़ा, उपखंड अधिकारी सुरेश सिंघी, तहसीलदार शिवकिशन सोनी ने अपने विचार रखे। सम्मेलन में उपस्थित 40 जनप्रतिनिधियों का अणुव्रत किट एवं साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर पानी- बिजली-पृथ्वी बचाओ के स्टीकर प्रशासनिक अधिकारियों को भेंट किये गये। नगर पालिका अध्यक्ष कैलाश मेवाड़ा ने शहर की सरहद पर "अहिंसा द्वार" के निर्माण करने व सार्वजनिक स्थलों पर अणुव्रत आचार संहिता के होर्डिंग्स लगाने की घोषणा की। स्वागत रोशनलाल कोठारी, अणुव्रत समिति के मंत्री चांदमल छाजेड़ ने एवं आभार ज्ञापन जगदीशचन्द्र जोशी ने किया। संचालन मुनि संबोधकुमार ने किया।

विद्यार्थी अणुव्रत सम्मेलन

दिल्ली। अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमार के सान्निध्य में सुमेरमल जैन पब्लिक स्कूल के तत्वावधान में अणुव्रत विद्यार्थी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं प्रबुद्ध व्यक्तियों ने भाग लिया। मुनि राकेशकुमार ने कहा बौद्धिक विकास के साथ भावनात्मक संतुलन और अनुशासन का विकास नहीं होगा, तब तक स्वस्थ समाज का निर्माण नहीं हो सकेगा। स्वतंत्रता के बाद शिक्षा नीति पर मार्गदर्शन करते हुए महात्मा गांधी ने कहा था एक स्कूल खुलेगा तो सौ कारागृह बंद होंगे। लेकिन आज स्कूलों का तो विस्तार हो रहा है, पर जेलखाने बंद होने के बजाय बढ़ ही रहे हैं। इसका मुख्य कारण भावनात्मक असंतुलन है। मुनिश्री ने अणुव्रत विद्यार्थी आचार संहिता की विस्तार से चर्चा की। मुनि सुधाकर व मुनि दीपकुमार के भी प्रासंगिक वक्तव्य हुए। रमेश कांडपाल ने विद्यार्थियों को प्रयोग करवाए। स्कूल की प्रिंसिपल सविता अमित ने मुनिश्री का स्वागत किया। कार्यक्रम में प्रो. कंवल, सोनाली पटावरी, नम्रता पटावरी, के.सी. जैन उपस्थित थे। विद्यार्थियों ने मुनिश्री से नशामुक्ति का संकल्प ग्रहण किया।

सैकड़ों व्यक्तियों द्वारा रिश्वत न लेने का संकल्प

भिवानी, 11 अप्रैल। आज व्यक्ति बुद्धिवादी हो गया है। इस बुद्धिवाद ने दुनिया को तकनीक तो दी किन्तु हृदय की सरलता, सहजता व तरलता को छीन लिया जो बच्चों में देखने को मिलती है। ये विचार मुनि विनयकुमार आलोक ने प्रशासन द्वारा आयोजित पंचायत भवन में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा हम विज्ञान को नहीं बदल सकते परन्तु सोच बदल सकते हैं। विवेक ही प्रभू भक्ति की पहचान है। तनाव से मुक्ति पाना चाहते हैं तो इसके लिए हमें जीवन में तीन बातों को धारण करना पड़ेगा 1. नशामुक्त जीवन, 2. ईमानदारी एवं 3. अनुशासन। ये ऐसे मूलमंत्र हैं जो व्यक्ति को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देने के साथ-साथ तनाव से मुक्ति भी प्रदान करते हैं। मुनिश्री ने उपस्थित संभागियों को नशामुक्ति के पाठ को जीवन में अपनाते हुए सभी कार्यों को पूरी लगन और निष्ठा के साथ करने का आह्वान करते हुए नशा न करने का संकल्प भी दिलवाया।

मुनिश्री ने अणुव्रत समिति द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों की भी विस्तार से जानकारी दी। मुनिश्री की प्रेरणा से सैकड़ों लोगों ने अणुव्रत के तीन संकल्प ग्रहण किये

1. मैं रिश्वत नहीं लूंगा।
2. मैं मद्यपान नहीं करूंगा।
3. मैं अपने अधिकारों का दुरुपयोग नहीं करूंगा।

कार्यक्रम में अतिरिक्त उपायुक्त रमेश चन्द्र बिढ़ान, जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी ओमप्रकाश शर्मा, उप-कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद विशाल कुमार, एडवोकेट सुरेन्द्र जैन, रविन्द्र लखोटिया, लक्ष्मण अग्रवाल, विकास जैन, रैडक्रॉस सचिव श्यामसुन्दर सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। मुनि नरेशकुमार, सुरेन्द्र जैन, रविन्द्र लखोटिया ने विचार रखे। संयोजन श्याम सुन्दर ने किया।

युगीन समस्याओं के समाधायक

जयपुर, 28 अप्रैल। आचार्य महाप्रज्ञ एक ऐसे व्यक्तित्व और कर्तृत्व थे जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर उभरने वाली समस्याओं का समाधान दिया। उच्च कोटि के विद्वान और परम दार्शनिक महाप्रज्ञ विनम्र साधक थे। उन्होंने आचार-विचार व व्यवहार के द्वारा जनमानस को केवल प्रभावित ही नहीं बल्कि प्रज्ञा रश्मियों से प्रकाशित भी किया। सामान्य जनता के साथ-साथ उच्च पदासीन बुद्धिजीवी, समाजसेवी तथा राजनीतिज्ञ भी उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करते रहे। ये विचार मुनि रमेशकुमार ने आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण दिवस की प्रथम पुण्यतिथि पर व्यक्त किये।

मुनि चैतन्यकुमार 'अमन' ने कहा प्रज्ञा-विनय-समर्पण के पर्याय आचार्य महाप्रज्ञ मानव शरीर में महामानव थे, व्यक्ति नहीं व्यक्तित्व थे। उनकी कर्तृत्व क्षमता अमाप्य थी। जीवन के नौवें दशक में भी अहिंसा यात्रा के द्वारा भारत के विभिन्न प्रांतों की यात्राएं कर अहिंसक क्रांति का शंखनाद किया। सभी धर्म-सम्प्रदायों में पारस्परिक प्रेम, सौहार्द, समन्वय एवं सर्वधर्म सद्भाव का संदेश देकर मानवीय एकता एवं विश्व मैत्री को बढ़ावा दिया। ऐसे महामानव की पुण्य तिथि पर उनकी स्मृति कर उनको श्रद्धांजलि समर्पित करना मानवीय कर्तव्य है। सौभाग बैद, सुशीला नखत, वर्षा पींचा, माणक गुजरानी तथा प्रो. महावीर राज गेलड़ा व ओमप्रकाश जैन ने अपनी भावांजलि समर्पित की। संचालन पुष्पा बैद ने किया।

www.terapanthinfo.com

एकदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर

कोलकाता, 18 अप्रैल। साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में महिला मंडल कोलकाता द्वारा एक दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर महासभा भवन में आयोजित किया गया। इसमें 100 से अधिक भाई-बहनों ने भाग लिया। शिविर का प्रारंभ महिला मंडल द्वारा प्रेक्षा गीत से हुआ। महिला मंडल की अध्यक्षा जतन बैंगानी ने शिविरार्थियों का स्वागत किया।

प्रथम सत्र में साध्वी कनकश्री ने कहा हर व्यक्ति सुख चाहता है, दुःख कोई नहीं चाहता है। आरोग्य को प्रथम सुख माना गया है लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में यह सुख किसी-किसी को ही मिलता है। मधुमेह रोग के कारणों की चर्चा करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि अधिक भाग-दौड़, मानसिक चिंता, तनाव, श्रम का अभाव तथा अव्यवस्थित जीवन शैली ये इस रोग के निमित्त बनते हैं। प्रेक्षाध्यान के विभिन्न प्रयोग सुझाते हुए साध्वीश्री ने इसके निवारण के लिए दीर्घश्वास प्रेक्षा करने पर बल दिया। जयपुर से समागत शिवानी बोथरा ने स्वस्थ रहने के प्रयोग करवाये।

शिविर के दूसरे सत्र में मधुमेह रोग विशेषज्ञ डॉ. एम.बी. गुप्ता ने स्लाइड शो के माध्यम से डायबिटीज के लक्षण, कारण और उसके निवारण के उपाय बताये। डॉ. गुप्ता ने मधुमेह रोगी को खान-पान के बारे में जागरूक रहने के लिए भी आगाह किया।

अंतिम सत्र में साध्वी मधुलता ने मधुमेह के निवारण के लिए प्राणायाम आदि का प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया। सूरज बरड़िया ने डायबिटीज और मनोविज्ञान विषय पर उपयोगी टिप्स बताए। प्रशिक्षकों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। संचालन मंजू सुराणा ने किया।

अणुव्रत समिति कोलकाता के बढ़ते कदम

कोलकाता, 20 अप्रैल। अणुव्रत समिति कोलकाता के तत्वावधान में महासभा भवन कोलकाता में महावीर जयंती धूमधाम से मनाई गयी। इस अवसर पर अणुव्रत समिति द्वारा निर्मित पानी बचाएं, भ्रष्टाचार का विरोध हो, पर्यावरण बचाओ, निष्पक्ष और निर्भय होकर मतदान करें एवं प्राणी मात्र पर दया करें पांच नारों की तख्तियों द्वारा रैली निकाली गयी। इन नारों की तख्तियों को हाथों में लेकर स्कूली छात्र-छात्राएं, वरिष्ठ नागरिक जुलूस में शामिल हुए। उक्त नारों का उद्घोष करते हुए रैली सभाभवन में पहुंची। अणुव्रत समिति द्वारा सभा भवन में स्टॉल लगाकर अणुव्रत आचार संहिता एवं पंचसूत्रीय संकल्प पत्र भरवाए। कार्यक्रम की सफलता में सभी कार्यकर्ताओं का सराहनीय श्रम रहा। विशेष रूप से कोलकाता अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्याम सुन्दर चोरड़िया का पूर्ण सहयोग रहा।

जीवन विज्ञान कार्यक्रम

बगड़ीनगर, 9 अप्रैल। जीवन विज्ञान प्रभारी मुनि किशनलाल के सान्निध्य में जीवन विज्ञान का कार्यक्रम रखा गया। इसमें 125 शिक्षकों ने भाग लिया। मुनिश्री ने जीवन विज्ञान की उपयोगिता और उसके महत्व पर प्रकाश डाला। दो चरणों में चलने वाले इस कार्यक्रम में शिक्षकों के अलावा 300 विद्यार्थी शामिल हुए। कार्यक्रम में अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका, जोशी, भागचंद सोलंकी ने विचार रखे। धन्यवाद ज्ञापन नरेन्द्र एम. रांका ने किया। महेन्द्र सिंघी, दानमल सुराणा, गजेन्द्र चौहान ने मधुर गीतों का संगान किया।

आचार्य महाप्रज्ञ की प्रथम पुण्यतिथि

पटियाला, 28 अप्रैल। साध्वी उज्जवलकुमारी के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ की पुण्यतिथि पटियाला अर्बन स्टेट सीताराम जैन के निवास पर मनाई गयी। प्रारंभ साध्वी सूरजप्रभा व साध्वी नयप्रभा द्वारा मंगलाचरण से हुआ। साध्वी डॉ. लावण्ययशा ने आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व, कर्तृत्व एवं कुशल नेतृत्व पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा आचार्य महाप्रज्ञ ने राजस्थान के एक छोटे से ग्राम टमकोर में जन्म लेकर संघ को नई ऊंचाइयां प्रदान की। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान के अवदानों को सदियां याद रखेंगी। आचार्य महाप्रज्ञ ने युग की नब्ज को पहचाना, युगीन समस्याओं का समाधान प्रस्तुति कर दिशा प्रदान की। आचार्य महाप्रज्ञ ने 250 से भी अधिक पुस्तकें लिखकर सरस्वती के भंडार का संवर्द्धन किया।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के प्रो. डॉ. प्रद्युम्न शाह ने अपनी भावांजलि अर्पित करते हुए कहा मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूं कि हमें आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वे महान आचार्य, प्रसिद्ध व्याख्याकार, महान दार्शनिक व साहित्यकार थे। ऐसे महान योगी, पवित्र, निर्मल आत्मा को नमन।

इस अवसर पर रतनलाल जैन, वंदना जैन, नगराज जैन, सीताराम जैन ने कविता एवं भजन के माध्यम से अपनी भावांजलि दी। साध्वी उज्जवलकुमारी ने कहा कि आचार्यश्री मानवीय मूल्यों की स्थापना में अथक प्रयास करते रहे। कार्यक्रम का संचालन साध्वी डॉ. लावण्ययशा ने किया।

महावीर के सिद्धांतों की महती अपेक्षा

डाबड़ी, 14 अप्रैल। साध्वी गुप्तिप्रभा की प्रेरणा से अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र डाबड़ी के तत्वावधान में महावीर जयंती पर प्रभात फेरी निकाली गयी। साध्वीश्री ने उपस्थित संभागियों को युग पुरुष महावीर के जीवन की महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए अहिंसा, अनेकांत व अपरिग्रह पर विस्तार से प्रकाश डाला। उपस्थित वक्ताओं ने महावीर के सिद्धांतों की इस युग में महती अपेक्षा की बात कही। अगर हम इनको समझकर महावीर द्वारा बताये गये रास्ते पर चलें तो कई समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जायेगा। साध्वी कुसुमलता ने भी अपने विचार रखे। साध्वी मौलिकयशा ने कविता पाठ किया। अहिंसा प्रशिक्षक भवानी सिंह व सोनू महारण ने विचार रखे। संचालन साध्वी मौलिकयशा ने किया।

अणुव्रत समिति द्वारा स्लेट वितरण

गंगापुर, 18 अप्रैल। अणुव्रत समिति गंगापुर द्वारा नगर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों के जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को स्लेटें वितरित की गयी। इस संबंध में अणुव्रत समिति गंगापुर के संरक्षक देवेन्द्र कुमार हिरण ने बताया कि रा.उ.प्रा. विद्यालय मैलोनी ग्राम, रा.उ.प्रा.वि. बैंगनपुरा, उ.प्रा. विद्यालय वार्ड नं. 1 व 2, उ.प्रा. विद्यालय शास्त्रीनगर एवं राजकीय बालिका उ.प्रा. विद्यालय कुण्ड चौक, अतिरिक्त जवाहर सेवा सदन एवं आदर्श विद्या मंदिर में जरूरतमंद विद्यार्थियों को अणुव्रत समिति गंगापुर द्वारा विद्यार्थियों को स्लेटें वितरित की गयी।

www.terapanthinfo.com

अणुव्रत शिक्षक संसद का प्रांतीय अधिवेशन

बाढ़ (बिहार)। राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद राजसमंद की प्रादेशिक इकाई बिहार राज्य अणुव्रत शिक्षक संसद का 15वां दो दिवसीय प्रांतीय अधिवेशन ए.एन. एस. कॉलेज स्थित स्वतंत्रता सेनानी जगदीश नारायण सिंह प्रेक्षागृह में समणी मलयप्रज्ञा के सान्निध्य में आयोजित किया हुआ।

अधिवेशन का उद्घाटन बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष सह-प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष 'अणुव्रत सेवी' सिद्धेश्वर प्रसाद ने किया। अध्यक्षता संगठन के राष्ट्रीय संयोजक एवं अध्यक्ष भीखमचंद नखत ने की। डॉ. हीरालाल श्रीमाली, डॉ. धर्मेन्द्र आचार्य एवं नवल किशोर प्रसाद सिंह अति विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर अणुव्रत आंदोलन के राष्ट्रीय स्तर पर सराहनीय कार्य करने वाले डॉ. सिद्धेश्वर प्रसाद-पटना, अरूण भट्टा पाटिल नन्दूखार महाराष्ट्र तथा डॉ. नरेन्द्र कुमार राय गाजीपुर उ.प्र. को अणुव्रत सेवा सम्मान प्रदान किया गया। साथ ही एस.डी.एम. बाढ़ शिवकुमार पण्डित को बिहार जनसेवा सम्मान तथा पं. सत्यनारायण चतुर्वेदी पत्रकार को साम्प्रदायिक सद्भावना सम्मान प्रदान किया गया। इसके अलावा बिहार प्रांत के 30 अणुव्रती शिक्षक कार्यकर्ताओं को आचार्य तुलसी बिहार गौरव सम्मान प्रदान किया गया।

समणी मलयप्रज्ञा ने अणुव्रत आंदोलन को एक वैचारिक क्रांति की संज्ञा देते हुए इसे जन-जन तक पहुंचाने की जरूरत पर प्रकाश डाला। उन्होंने व्यक्तित्व के निर्माण में अणुव्रत के प्रायोगिक पक्ष की भूमिका को भी स्पष्ट किया। समणी नीतिप्रज्ञा ने मधुर स्वरों में गीतिका का संगान किया।

दो दिवसीय अधिवेशन के आयोजक प्रो. साधुशरण सिंह 'सुमन' ने राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद द्वारा जनपद में किये जा रहे विकास कार्यों पर प्रकाश डाला। संयोजन हेमंतकुमार ने किया। स्वागत भाषण अधिवेशन संयोजक प्राचार्य राजेशकुमार 'राजू' ने किया। कार्यक्रम में सुरेश चन्द्र प्रसाद सिंह, राणा शत्रुघ्न सिंह, प्रो. एस.पी. वर्मा, डॉ. गौरीशंकर राजहंस, पंडित शशि भूषण दूबे एवं आलेहसन आजाद सहित कई विद्वानों ने अपने विचार रखे। समापन समारोह का उद्घाटन बिहार सरकार के कैबिनेट मंत्री शाहिद अली खाँ तथा राज्य सुन्नी वक्फ बोर्ड के चेयरमैन इरशाद उल्लाह ने किया। डॉ. पंकज कुमार तथा डॉ. अंजेश कुमार के संयोजन में शिक्षा व्यवस्था पर एक सारगर्भित परिचर्चा भी आयोजित की गयी। अधिवेशन में प्रदेश के 17 जिलों के दो सौ से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा सैकड़ों स्थानीय शिक्षकों ने अपनी सहभागिता दर्ज की। बिहार प्रांत के लोगों को नशामुक्त बनाने के संकल्प के साथ अधिवेशन संपन्न हुआ।

जन चेतना जागरण अभियान

अहमदाबाद, 16 अप्रैल। गुजरात राज्य अणुव्रत समिति द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ की प्रथम वार्षिक पुण्य तिथि पर गुजरात राज्य निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आचार्य महाप्रज्ञ व्यक्ति नहीं संस्कृति थे। वे आध्यात्मिक जगत के उज्जवल नक्षत्र, प्रेक्षा प्रणेता, साहित्य सृजन, महान दार्शनिक एवं समाज सुधारक थे। उन्होंने युगीन समस्याओं के समाधान हेतु अहिंसा यात्रा का श्रीगणेश किया। नैतिकता, इच्छा परिणाम, संयम, पर्यावरण शुद्धि, व्यसनमुक्ति एवं अहिंसा के प्रति जन चेतना जाग्रत करने के उद्देश्य से गुजरात राज्य निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

आचार्य महाप्रज्ञ ओवर ब्रिज के लोकार्पण अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी की सार्वजनिक सभा से सभा भवन तक अणुव्रत बेनर लगाकर अणुव्रत आचार संहिता के होर्डिंग्स लगवाकर अणुव्रत विचार को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया।

गुजरात राज्य अणुव्रत समिति के अध्यक्ष जवेरीलाल संकलेचा मंत्री अशोक दूगड़, उपाध्यक्ष नानालाल कोठारी, कोषाध्यक्ष नटवर कोठारी, सहमंत्री गौतम सजलानी, कार्यकारिणी सदस्य महेन्द्र चौपड़ा एवं रजनीकांत मोदी का विशेष श्रम व सहयोग रहा।

तनाव से दूर रहें विद्यार्थी

लाडनूं, 3 अप्रैल। परीक्षा द्वारा विद्यार्थियों के वर्षभर के पुरुषार्थ का मूल्यांकन होता है। अतः सभी विद्यार्थी परीक्षा से भयभीत हो जाते हैं। कुछ विद्यार्थी तो इतने भयभीत हो जाते हैं कि वे तनावग्रस्त होकर अपनी परीक्षा भी ठीक से नहीं दे पाते हैं। अतः परीक्षा के दौरान विद्यार्थियों को तनाव से बचना चाहिए। ये विचार दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी महिला मंडल द्वारा साध्वी कमलश्री के सान्निध्य में ऋषभद्वार में आयोजित कार्यशाला में प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए व्यक्त किए। डॉ. त्रिपाठी ने विद्यार्थियों को परीक्षा की तैयारी अच्छे ढंग से करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव भी दिये।

साध्वी कमलश्री ने विद्यार्थियों को परीक्षा के समय अधिक पढ़ने की अपेक्षा वर्षभर पढ़ने के लिए प्रेरित किया। साध्वीश्री ने अध्ययन की समय-सारिणी बनाकर नियमित रूप से पढ़ने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया। साथ ही किसी भी हालत में परीक्षा को अपने ऊपर हावी न होने देने के लिए कुछ उपयोगी नुस्खे भी बताए। साध्वी जिनरेखा ने विद्यार्थियों को सकारात्मक सोच को बढ़ावा देने की बात कही। कार्यक्रम का संचालन किरण बरमेचा ने एवं आभार ज्ञापन वर्षा चोरड़िया ने किया।

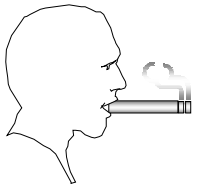

आपका मुँह
ऐश-ट्रे या कूड़ादान
नहीं

www.terapanthinfo.com

अणुव्रत ग्राम भारती संस्थान ने मनाई रजत जयंती

विनयपुरम, १ अप्रेल। लुहारिया ग्राम के अनेक घरों को स्पर्श करते हुए आचार्यवर ने विनयपुरम (बांकली) के लिए विहार किया। मध्यवर्ती चांखेड़ गांव में कुछ देर के लिए विराजना हुआ। पूज्यवर ने वहां के कतिपय घरों का स्पर्श किया और ग्रामवासियों के अनुरोध पर अपना संक्षिप्त उद्‌बोधन भी प्रदान किया। अणुव्रत की प्रवृत्तियों को गति प्रदान करने हेतु गुरुदेव तुलसी के निर्देश पर पच्चीस वर्ष पूर्व इस क्षेत्र में चातुर्मास करने वाले मुनि सुखलाल ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। स्थानीय सरपंच लहरीदेवी जाट ने आचार्यवर का स्वागत किया।

यहां से प्रस्थान कर आचार्य महाश्रमण बांकली गांव स्थित स्व. बिहारीलाल पारीक के आवास पर पधारे। बड़ी संख्या में उपस्थित ग्रामीणों को पूज्यवर ने प्रेरक उपदेश दिया। अनेक लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। ग्रामीणों ने यात्रा के साथ चल रहे सेवार्थियों के वाहनों को मनुहारपूर्वक रोककर उनका आतिथ्य किया।

चांखेड़ और बांकली के संक्षिप्त कार्यक्रम के बाद आचार्यप्रवर अणुव्रत ग्राम भारती संस्थान द्वारा संचालित अणुव्रत महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में पधारे। अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी के अमृत महोत्सव के समय मेवाड़ यात्रा के दौरान माण्डल के तत्कालीन विधायक स्व. बिहारीलाल पारीक के अनुरोध पर भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील के बांकली गांव से दो किमी. दूर सात बीघा भूखंड में २७ जून १९८६ को अणुव्रत ग्राम भारती संस्थान विनयपुरम की स्थापना हुई। प्रकृति के सुरम्य वातावरण में संस्थापित इस संस्थान का मुख्य उद्‌देश्य था बालिका शिक्षा, विशेषतः ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं व महिलाओं को शिक्षा व संस्कार देना। धीरे-धीरे प्राथमिक से उच्च प्राथमिक विद्यालय के रूप में विकसित होता हुआ यह विद्यालय १९९७ में सीनियर सेकेंड्री स्कूल के रूप में क्रमोन्नत हो गया। वर्तमान में कक्षा ६ से कक्षा १२ तक २७० बालिकाएं इसमें अध्ययनरत हैं। ४६ गांवों से संस्थान की बसों में आने वाली इन छात्राओं के लिए शिक्षा के साथ निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें तथा यूनिफार्म आदि की व्यवस्था संस्थान द्वारा की जाती है। गत कई वर्षों से इस स्कूल का परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत रहता है।

सन २००८ से संस्थान द्वारा अणुव्रत महिला शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय प्रारंभ हुआ, जिसमें लगभग सौ छात्राएं अध्ययनरत हैं। आचार्य तुलसी छात्रावास में आवास और भोजनशाला की समुचित व्यवस्था है। संस्थान की प्रगति में पूर्व जिलाधिकारी कनकमल जैन व अन्य की सेवाएं प्राप्त होती रही हैं। संस्थान के संस्थापन एवं उन्नयन में मुनि सुखलाल के पचीस वर्ष पूर्व चांखेड़ के चातुर्मास की उल्लेखनीय भूमिका रही। आज महिला शिक्षा के सशक्तीकरण के क्षेत्र में यह विद्यालय और महाविद्यालय अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

संस्थान के परिसर में आयोजित रजतजयंती समारोह के कार्यक्रम में स्वागताध्यक्ष सोहनलाल चोरड़िया ने समागत अतिथियों का स्वागत किया। सचिव प्रेमसिंह तलेसरा ने संस्थान की पचीस वर्ष की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उपाध्यक्ष लक्ष्मीलाल बाफना ने भावी योजनाओं को प्रस्तुति दी। सन् १९८८ से इस संस्थान का अध्यक्षीय दायित्व संभाल रहे बच्छराज सेठिया अस्वस्थता के कारण उपस्थित नहीं हो सके। उनकी ओर से हंसराज सेठिया एवं पुष्पा बैद ने अपने विचार व्यक्त किए। समारोह के मुख्य अतिथि अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका, अणुव्रत पाक्षिक के संपादक डॉ. महेन्द्र कर्णावट, बी. सी. भलावत एवं कोषाध्यक्ष रतनलाल खाब्या के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। 'अणुव्रती बनो' अभियान के अंतर्गत २०१०-११ में संकल्पित हुए २५०० अणुव्रतियों के संकल्प पत्र पूज्यप्रवर को भेंट किए गए। कलाविज्ञ मूलचन्द अजमेरा (भीलवाड़ा) ने आचार्यवर का आकर्षक चित्र भेंट किया। डॉ. प्रेमदान 'भारतीय' ने अपनी कृति 'चेतन ज्योति आचार्य महाप्रज्ञ' आचार्यवर को उपहृत की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भीलवाड़ा के जिलाधीश ओकारसिंह ने अणुव्रत ग्राम भारती संस्थान को ग्रमीण क्षेत्र में शिक्षा के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अद्वितीय संस्थान बताते हुए इसे हर तरह का सहयोग देने की घोषणा की।

मंत्री मुनि सुमेरमल ने कहा 'यह संस्थान अपने लक्ष्य के अनुरूप आगे बढ़ता रहे। मुनि सुखलाल ने संस्थान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए इससे जुड़े अनेक जीवनदानी कार्यकर्ताओं का उल्लेख किया।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा के वक्तव्य के पश्चात महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने प्रेरक वक्तव्य में कहा 'आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने शिक्षा जगत को 'जीवन विज्ञान' के रूप में नया अवदान दिया। इससे शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक परिणाम आने लगे। जितने भी पुरुष शिक्षक हैं, उनकी पहली शिक्षिका तो मां ही है। यदि महिला समाज को शिक्षित नहीं किया गया तो बच्चों को शिक्षा और संस्कार कौन देगा?'

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा 'प्रत्येक व्यक्ति को विचारपूर्वक संभाषण करना चाहिए। भाषा का प्रयोग कहां कैसे करना है, इसका विवेक बहुत आवश्यक है। वाणी का संयम मनुष्य को उन्नति के मार्ग पर ले जाता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'आज जंगल में मंगल हो रहा है। देखने में भी संस्थान अच्छा लग रहा है। संस्था को आगे बढ़ाने के लिए काम करना है तो दूसरे आकर्षणों को छोड़ना होता है। काम कहीं भी हो, वह निष्पत्तिमूलक होना चाहिए। इस संस्थान के संस्थापक बिहारीलाल पारीक के आवास पर गुरुदेव तुलसी पधारे थे। आज मैं भी वहां गया। बिहारीलाल का श्रम यहां बोल रहा है। इस संस्थान में महिला शिक्षा का उपक्रम चल रहा है। ग्रामीण बहनों का कोई पुण्य योग है कि उन्हें अपने क्षेत्र में ऐसा शिक्षा संस्थान मिला है।

बी.एड् की छात्राओं की ओर उन्मुख होकर पूज्यप्रवर ने कहा 'शिक्षा के द्वारा परिवारों को संस्कारी बना सकें तो आप लोगों के द्वारा प्राप्त किया जा रहा प्रशिक्षण अधिक कार्यकारी हो सकता है। अणुव्रत के कार्यकर्ता अणुव्रत के कार्य को आगे बढ़ाते हुए अच्छे कार्यों के लिए सदैव संकल्पित रहें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीतकुमार ने किया। कार्यक्रम के तत्काल बाद पूज्यवर से मंगलपाठ सुनकर जिलाधीश ओकारसिंह ने नवनिर्मित 'महाप्रज्ञ प्रेक्षा गृह' का लोकार्पण किया।